विषय सूची

बरात को रास्ते में गुप्त चरित्र दीख पड़ा पितृ-लोक का दर्शन । द्विपञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ४०१ ॥

रास्ते में बरात के चलने की धूम धाम । चतुष्पञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ४०६

श्री देवौज जी का कन्या विवाहार्थ इन्तजाम । पञ्चपञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥पृष्ठ ४२६॥

बरात का स्वागत तथा कन्याओं का विवाह । षडपञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥पृष्ठ ४५२॥

विवाह के बाद उपकार्य भोजनादि दहेज विधि। सप्तपञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ४६२ ॥

श्री अयोध्या में दुलहा दुलहिन सहित बरात का स्वागत । अष्टपञ्चाशत्तम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ४६६ ॥

श्रीचन्द्र कन्याओं द्वारा स्तुति । एकोन षष्ठितम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ४८२ ॥

कन्या विवाहार्थ बहुत से राजाओं द्वारा भेजे गये दूतों का श्रीअयोध्या दर्शन व प्रार्थना स्वीकृति प्राप्त करना । षष्ठितम स्सर्ग स्समाप्तः ॥पृष्ठ ४६१॥

माणवक नगरीके राजा उद्धविक्रमकी कन्याओं से विवाह । एकषष्ठितम स्सर्ग स्समाप्तः ॥पृष्ठ ५०३॥

श्री गोपों के राजा की प्रार्थना द्वारा बहुत सी सखियों सहित गोपराज कन्या का विवाह तथा गन्धर्वराज व नागराज की कन्याओं से विवाह । द्विषष्ठितम स्सर्ग स्समाप्तः ॥ पृष्ठ ५१६ ॥

मालवक देश के राजा श्री चन्द्रमौली जी की कन्याओं से विवाह, तथा आपके मन्त्रि श्रीसुरप्रभ जी की भी प्रार्थना स्वीकार करके कन्याओं को श्रीरामजी स्वीकार किये । फिर पश्चिमदेशीय और भी बहुत से राजाओंकी प्रार्थना भी स्वीकार किये ।

॥ इति शुभम् ॥

श्रीग्रन्थकार जी के आदि गुरुदेव श्रीसीताराम उपासना रसिकाचार्य

श्री श्री १००८ श्री रामचरण दास जी
(श्रीकरुणासिन्धुजी) महाराज

श्रीजानकी घाट-बड़ास्थान, श्री अयोध्या जी

❋ श्री अमर रामायण ❋

(श्रीराम रत्न मञ्जूषा)

❋ बन्दना ❋

जै जै सीताराम जी सबके कारण एक ॥
अद्भुत धाम चरित्र युत निरखत सन्त विवेक ॥१॥
रूप सींव रस सींव दोउ निर्गुण सगुण अपार ॥
रास रंग रस सिन्धु में राम नाम सुख सार ॥२॥
जै मिथिलाधिप नन्दनी जै अवधेश किशोर ॥
जैति चारुशीला अली सकल सखिन शिर मौर ॥३॥
जै जै जै हनुमान श्री श्रीप्रसाद अवतार ॥
चारुशिला सर्वेश्वरी तीन रूप निजधार ॥४॥
जै श्री शुभगा 'भरत' तन सेवा समय सुधार ॥
महाविष्णु अवतार महि 'सनक' 'सुशीला' चार ॥५॥
जै विमला अरु 'लछिमना' लक्ष्मण रूपहु धार ॥
नारायण, मुनि शेष तन सेवा समय विचार ॥६॥
जै हेमा 'श्री' रिपुदमन, तीन रूप सुख सार ॥
दम्पति सेवा सुरुख लखि 'भौमा' सुक मुनि धार ॥७॥
सूर्य अंश सुग्रीव 'शिव' शंकर्षण, अवतार ॥
जय अतिशीला प्यारि प्रिय सु वरारोहा धार ॥८॥
जयति बिभीषण 'भीषणा' विश्व मोहनी शक्ति ॥
पद्म सुगन्धा लाड़िली लाल प्रिया वर भक्ति ॥९॥
भू शक्ती भूधरण की सुलोचना सिय प्यारि ॥
जयति जृम्भणा हरि प्रिया जाम्बवान तनुधारि ॥१०॥
जयति क्षमावति क्षेमदा 'क्षेमा' क्षमावतार ॥
अंगद विद्या वारिधर 'वागीशा' वर चार ॥११॥
पार्षदाष्ट सिय राम के रसिकन हिय सुख सार ॥
वन्दौं सबके पद कमल दिव्य दृष्टि दातार ॥१२॥

—:❋:—

* श्री अमर रामायण टीकाकार व प्रकाशकः *

जानकीशरण मधुकरिया

श्रीचारुशीला मन्दिर, श्रीजानकीघाट

श्री अयोध्या जी

अथैका कौशलेन्द्रस्य पत्नी सुन्दर विग्रहा ॥
चोल देश पतेः पुत्री नाम्ना सौमानका तु सा ॥३॥

महाराज कौशलेन्द्र जी की एक सुन्दर विग्रह वाली पत्नी चोल देश के महाराज की कन्या सौमानका नाम की है ॥३॥

तस्यां राज्ञौ द्वौ सुपुत्रौ सुकुमारौ मनोहरौ ॥
जेष्ठस्तु जयराजश्च कनिष्ठो विजयस्तथा ॥४॥

उन से महाराज के दो मनोहर सुकुमार पुत्र उत्पन्न हुए उन में ज्येष्ठ का नाम जय राज और कनिष्ठ का नाम बिजय राज है ॥४॥

अपरैका कौन्तदेश पतेः पुत्री मनोहरा ॥
नाम्ना कान्तिवरा तस्यां कुमारौ द्वौ मनोहरौ ॥५॥

दूसरी कौन्त देश के महाराज की मनोहर कन्या कान्तिवरा नाम की है उन से मनोहर दो कुमार उत्पन्न हुए ॥५॥

नाम्नैकस्तु देशराजो नीतिशास्त्र विशारदः ॥
तस्था वरो महीराजो हयज्ञो लोक विश्रुतः ॥६॥

नीति शास्त्र में बिशारद--एक का नाम देशराज दूसरे का नाम मही राज है जो घुड़सवारी विद्या में लोक प्रसिद्ध हैं ॥६॥

पुनरेक स्सिन्धुराज स्तस्यै कस्य सुता दश ॥
सुदायै स्तेन महता दत्ता दशरथाय च ॥७॥

और एक सिन्धु राज महाराज हैं उन्होने दश कन्याओं को अपने सुन्दर दमाद श्री दशरथ जी को दे दिया ॥७॥

कान्ति दीप्ति मनोज्ञा च साध्वी मत्ता प्रभा शुभा ॥
शान्ति कीर्तिः कला चैता युग्म पुत्रैक मातरः ॥८॥

उन दसों का नाम-कान्ति, दीप्ति, मनोज्ञा, साध्वी, मत्ता, प्रभा, शुभा, शान्ति, कीर्ति, कला है। उन सब माताओं के दो २ पुत्र हुए ॥८॥

नामानि तासां पुत्राणां क्रमेणात्र वदामिते ॥
ज्येष्ट स्त्वा वरजत्वं च पुत्राणामपि सक्रमात् ॥९॥

उन के पुत्रों का नाम भी क्रमशः कहतो हैं छोटा बड़ा का हिसाब इसी प्रकार से ले लेना ॥९॥

मधुराज मानराज्ञौ मौलि राज सुराज कौ ॥
प्रभराज प्रभाराजौ शुभ शौभौ तथैवच ॥१०॥

मधुराज, मानराज, मौली राज, सुराज, प्रभराज, प्रभाराज, शुभराज, शोभराज ॥१०॥

शान्तिराज शीलराजौ कीर्ति मोदौ तथाभिधौ ॥
कलाशील कलाधीरौ कलाविद्य परम्विदौ ॥११॥

शान्तिराज, शीलराज, कीर्ति, मोद, कला शील, कलाधीर, कला विद, पर विद ॥११॥

राजशील राजरत्नौ रत्नयान सुयान कौ ॥
इमे सर्वे च श्रीरामे प्रीतिमन्तो भवन्ति हि ॥१२॥
राजशील, राजरत्न रत्नयान, सुयानकन्ये चारों श्री राम जी में महान् अनुराग रखने वाले हैं ॥१२॥

पश्चिमायां दिशि त्वासीद्भल्ल देशो जनान्वितः ॥
प्राण सन्धो महाराज स्तत्रासी द्विप्र सेवकः ॥१३॥
और एक भल्ल नामक देश पश्चिम दिशा में है। उस देश के महाराज ब्राह्मणों की बड़ी सेवा करने वाले प्राणसंध नाम के हैं ॥१३॥

तस्य पुत्री शतं जात मधिकं पञ्चदिक्तथा ॥
तेनापि कौशलेन्द्रायदत्त दार्थं महाधनैः ॥१४॥
उन की १५० (डेढ़ सौ) कन्याएँ हैं। उन्हों ने भी अपनी सब कन्याओं को महान् दहेज धन सहित महाराज दशरथ जी के लिए दिया ॥१४॥

तासां नामानि सर्वासां पुत्राणामपि विस्तरात् ॥
राजकन्ये वर्णयामि सावधान तया शृणु ॥१५॥
हे राजकन्यके! उन सब का तथा उन के पुत्रों का भी नाम कहती हूँ सावधान होकर सुनो ॥१५॥

अर्थ शुद्धिः सुबुद्धिश्च नन्दनी जयसी बला ॥
उरभा प्रासरा प्राची प्रबाला शुभगा शुभा ॥१६॥
अर्थ शुद्धि, सुबुद्धि, नन्दनी जयसी बला, उर्भा प्रसरा प्राची प्रवाला सुभगा, शुभा ॥१६॥

गुणाभावी गौरवी च लेखा योगा सदावली ॥
मण्डली मण्डनी सम्बा शुभला सञ्जसा सुला ॥१७॥
गुणा, भावी, गौरवी लेखा, योगा, सदावली, मण्डली मण्डनी, सम्बा, सुभला, सञ्जसा, सुला ॥१७॥

प्राञ्चा प्रभा परभा च प्रवी पुण्या प्रतिपका ॥
आवेशा च सुवेशा च निवेसा चापरा परा ॥१८॥
प्राञ्चा, प्रभा, परभा प्रवी; पुण्या प्रति पका, आवेशा सुवेशा, निवेशा अपरा, परा ॥१८॥

राजीवा चैव रेवा च गाङ्गीता पीत पीवरा ॥
यशोभा कुन्दभा रंगी नवसो नवदा सुखा ॥१९॥
राजीवा, रेवा, गांगीता पीतपीवरा, यशोभा, कुन्दभा, रङ्गी नवसी, नवदा, सुखा ॥१९॥

कला लासी सुका गौरी चन्द्रलेखा प्रभावती ॥
लक्ष्या जयन्ती माला च सुलेखा गुणोत्तमा ॥२०॥
कला, लासी सुका, गौरी चन्द्रलेखा प्रभावती, लक्षा, जयन्ती, माला, सुलेखा, गुणोत्तमा, ॥२०॥

प्रज्ञा प्रज्ञावली नामा प्रज्ञोदारा प्रभावली ॥
प्रभाराजी प्रभालक्षा प्रभाशीला प्रभालिका ॥२१॥
प्रज्ञा, प्रज्ञावली, प्रज्ञोदारा, प्रभावली, प्रभा राजी, प्रभा लक्षा, प्रभा शीला, प्रभालिका ॥२१॥

तैजोवलो च धीमन्ती धूर्य्या चामीकरा पिच ॥
विन्ध्यावली दीपिका च प्रतीपांङ्गी समालका ॥२२॥

तैजोवली, धीमन्ती माधुर्या, चामाकरा और विंध्यावली दीपिका, प्रात पाङ्गी सामलका ।.२२॥

विद्यावली सुनीतोच मणिमाला मणिप्रभा ॥
जयन्ती प्रजपा विज्ञा सुमत्ता सतभा मती ॥२३॥

विद्यावली, सुनीति, मणिमाला, मणिप्रभा, जयन्ती, प्रजपा विज्ञा, सुमत्ता, सतभा, मति ॥२३॥

परम्भावी च सम्प्रेषा प्राश्वसा प्रिथमा लसा ॥
सकुन्तला सुकान्ती च चन्द्र माला वरांशुका ॥२४॥

परम्भावी, सम्प्रेषा, प्राश्वसा, प्रिथमा, लसा, शकुन्तला, सुकान्ति, चन्द्रमाला, बरांसुका ॥२४॥

साध्वी सीमाच सन्तोषा मानसा पि सुधापि च ॥
पूवरा चातुरी सम्या भूरिलेखा च सौरभा ॥२५॥

साध्वी, सीमा, संतोषा, मानसा, सुधा, पूवरा, और चातुरी, सम्या, भूरिलेखा, सौरभा ॥२५॥

मुदावन्ती मुदा नामा सुनन्दा बृहतालिका ॥
स्वराजी सावली देवी देवदीक्षा च सुन्दरी ॥२६॥

मुदावन्ती, मुदा, सुनन्दा, बृहतालिका, स्वराजी, सावली, देवी, देवदीक्षा, सुन्दरी ॥२६॥

रूपवासा सुराजीवा योगवासा सुविन्दका ॥
अलं विद्या च स्वधरा सुखाङ्गीतिकामिधा ॥२७॥

रूपवासा, सुराजीवा, योगवासा, सुबिन्दका, अलम्बिद्या, स्वधरा, सुखा, गीतिका, ॥२७॥

त्रिवरा कलविन्दा च मञ्जु शाविद्युतावली ॥
रुक्म कान्ती च रुक्माङ्गी सुभद्रा भद्र वेदिका ॥२८॥

त्रिवरा, कलम्विदा मञ्जु सा, विद्युता वली, रुक्मकान्ति, रुक्माङ्गी, सुभद्रा, भद्र वेदिका ॥२८॥

मुदे माला दयोप्येता भ्रातु स्तस्य महीपतेः ॥
कन्यास्ता अपि तस्मै वै दत्ता तेन महा धनैः ॥२९॥

मुदे, माला आदि ये सब महाराज अश्वपति महाराज की कन्याऐं हैं तथा उन के भाई के भी बहुत सी कन्याऐं उन्होंने भी बहुत दहेज के साथ अपनी कन्याओं को महाराज दशरथ जी के लिए दिया ॥२९॥

तासु राज्ञः कुमारा ये तेषां नामानि मे शृणु ॥
क्रमेण कथयिष्यामि यथा पूर्वं हिमातृणाम् ॥३०॥

इन सब रानियों से महाराज दशरथ जी के जो पुत्र उत्पन्न हुए हैं उन के भी नाम क्रमशः मैं तुम से कहती हूँ सुनो ॥३०॥

विद्यानिधि श्च सुनिधि स्तथा गुण निधिः परः ॥
तेजोनिधिः सुरत्ननिधिः कलानिधि र्यशोनिधिः ॥२१॥

विद्यानिधि, सुनिधि, पर तेज, तेजनिधि, कलानिधि, यशोनिधि, ॥२१॥

पुण्यनिधि र्जय निधिः बलविद्य श्शेखरः ॥
केलिविद्यः कलाविद्यो रत्न चूणो गुणाकरः ॥२२॥

पुण्य निधि, जय निधि, बलविद्य, शेखर, कालविद्य, रत्न चूड़, गुणाकर ॥२२॥

शिलाकारो बलाकारो गुणाकारो गुणोदयः ॥
रिपुरेख सुखाकारो रिपुञ्जय परञ्जयो ॥२३॥

शिलाकार, बलाकार, गुणाकार, गुणोदय, रिपुरेख, सुखाकार, रिपुञ्जय, परञ्जय ॥२३॥

मणिचूड़ा मणिवक्षा जयबाहुः परान्तकः ॥
विजयी रिपुशल्यश्च सुकर्णो बलजिद्बली ॥२४॥

मणि चूड़, मणि वक्षा, जय बाहु, परान्तक विजयी, रिपु सल्य, सुकर्ण, बलजित, बली ॥२४॥

सुमेधाः सत्यमेधाश्च सुखजान सुजानकौ ॥
वीरसिंहो वीरलक्ष्मा वीरलेखो बलायुधः ॥२५॥

सुमेधा, सत्य मेधा, सुखजान, सुजानक, वीर सिंह वीरलक्ष्मा, वीर लेख, बलायुध ॥२५॥

रणसन्धोरि कर्षश्च जयशाली यशोर्णवः ॥
बलार्णवो विक्रमान्तो रणकीलो रणोद्धतः ॥२६॥

रणसंध, अरिकर्ष, जय शाली, यशोर्णव, बलार्णव, विक्रमान्त, रणकील, रणोद्धत ॥२६॥

रणधीरो युद्ध प्रज्ञोयुद्धशाली बलास्त्रकः ॥
वीरमौलिश्च वीराज्ञौ चलपंक्तिः सितायुधः ॥२७॥

रणधीर, युद्धप्रज्ञ, युद्ध शाली, बलास्त्रक, वीर मौली, वीराज्ञ चलपंक्ति, सिता युध ॥२७॥

रणधुन्धो धराधीशो राजविद्योति विक्रमः ॥
विक्रमा औपतड़ौ दग्यूः परक्रान्तः सुयोधकः ॥२८॥

रणधुन्ध, धराधीस, राजविद्य, अतिविक्रम, विक्रमा, औपतड़, दग्यूः परक्रान्त, सुयोधक ॥२८॥

अश्वखेलो धर्मयोद्धा धर्मधी जेन पालकः ॥
कृपो मेघो दयोधीरः क्रीड़ाविज्ञः सुविज्ञकः ॥२९॥

अश्व खेल, धर्म योधा, धर्म धीर, जन पालक, कृप, मेध दय, धीर, क्रीड़ाविज्ञ, सुविज्ञक ॥२९॥

लक्ष्म वेधी दूरलक्ष्मा परकण्टक रस्मिकौ ॥
सस्त्र खेलो महीनाथो मणिपूरो मणिप्रभः ॥४०॥

लक्ष्मवेधी, दूरलक्ष्म, परकण्टक, रस्मिक, शस्त्रखेल, महीनाथ, मणीपूर, मणीप्रभ ॥४०॥

खड्गचिद्यो सिचिद्यश्च चापचित्रो विचित्रकः ॥
चक्रखेलो गदाखेलः पङ्कखेलो विशल्यकः ॥४१॥

संख विद्य, असि विद्य, चापचित्र, विचित्रक, चक्रखेल, गदाखेल, खड्ग खेल विशल्यक ॥४१॥

सुकुण्डलो रत्नमाली मित्रपालः सुधाङ्गदः ॥
अलम्बदो भिजानश्च सुवदो रत्नग्रीवकः ॥४२॥

सुकुण्डल, रत्नमाली, मित्रपाल, सुधाङ्गद, अलम्बद, अभिजान, सुवद, रत्नग्रीव ॥४२॥

दान शीलो दयाशीलो रूपशीलो शुभम्बदः ॥
रत्नकण्ठ श्चित्र तेजा श्चित्रजानो प्यलम्भुजः ॥४३॥

दान शील, दयाशील, रूप शील, सुभम्बद, रत्नकण्ठ, चित्रतेजा, चित्रजान, अलम्भुज ॥४३॥

गुणचन्द्रो यशश्चन्द्रो रूपेदुन्श्च गुणोपकः ॥
वारचन्द्रो वीरचन्द्रो देवचन्द्रो ग्रचन्द्रमा ॥४४॥

गुणचन्द्र, यशचन्द्र. रूपेन्दु, गुणोपक, बार चन्द्र, बीरचन्द्र, देव चन्द्र, उग्र चन्द्रमा ॥४४॥

कुलभानु गुणादीपो रणमार्तण्ड कोविदः ॥
गुणहर्षो देवहर्षो रूपहर्ष सुहर्षिणो ॥४५॥

कुलभानु, गुणादीप, रणमार्तण्ड, कोविद, गुणहर्ष, देव हर्ष, रूप हर्ष, सुहर्षिण ॥४५॥

श्रीहर्षो ज्ञानहर्षश्च जयहर्ष प्रहर्षिणो ॥
अतिहर्षः शुभ्रहर्षः प्रीतिहर्ष सदामुदः ॥४६॥

श्री हर्ष, ज्ञान हर्ष, जय हर्ष, प्रहर्षिण, अति हर्ष, शुभ्र हर्ष, प्रीति हर्ष, सदामुद ॥४६॥

सभ्यश्च देवरूपश्च मनोज्ञश्च सुरोचकः ॥
देवकश्च वराङ्गश्च गुणकः परवेदकः ॥४७॥

सभ्य, देव रूप, मनोज्ञ, सरोचक, देवक, बरांग, गुणक, परवेदक ॥४७॥

देवाग्रो देवमान्यश्च देवकान्तः परातिगः ॥
सुनामा रोचनो नीतो गुणनाभो विनीतकः ॥४८॥

देवाग्र, देव मान्य, देवकान्त, परातिग, सुनामा, रोचन नीत, गुणनाभ, बिनीतक ॥४८॥

विलाशकोऽग्रशीलश्च सुवक्तासुगलो परः ॥
निम्ननाभो महौजाश्च विज्ञो वेदक मानकौ ॥४९॥

बिलासक, अग्रशील, सुवक्ता, सुगल, पर, निम्ननाभ, महोजा, बिज्ञ वेदक, मानक ॥४९॥

सुलोको गुणलेखश्च गुणदो दानकोविदः ॥
सुवर्चा नवनः प्रज्ञो गुणविज्ञः सुलाशकः ॥५०॥

सुलोक, गुणलेख, गुणद, दानकोविद, सुबर्चा, नवन, प्रज्ञ, गुण बिज्ञ, सुलासक ॥५०॥

अप्रवादः सुधानश्च गुणज्ञो गानकोविदः ॥
वरलीको महोल्लासः सुकलो मोद वैधकौ ॥५१॥
अप्रवाद, सुधान, गुणज्ञ, गान कोविद, वरलोक, महोल्लास, सुकल, मोद, वैधक ॥५१॥

धनरावश्च दाक्षिण्योगदा नद्यो वरालकः ॥
सुवलोवर वेलाश्च मुदधामा मनोविदः ॥५२॥
धनराव, दाक्षिण, योगदा, नद्य, वरालक, सबल, परवेला, मुदधामा, मनोविद ॥५२॥

अरितेजा रिकम्पौ च रिपूद्वेगन सौविदौ ॥
अमायकः सुधाशीचवशकार प्रकारकौ ॥५३॥
अरितेज, अरिकम्प, रिपूद्वेगन, सौविद अमायक, सुधाशी बसकार, प्रकारक ॥५३॥

सुजातो वल्गुक श्चैव वलो वीरो धुरन्धरः ॥
हर्यक्षो बोध गामिस्या वालवः सुखभावनः ॥५४॥
सुजात, वलगुक, बल, बीर, धुरन्धर, हरियक्ष, बोध गामिष्य अबालव, सुखभावन ॥५४॥

कुम्भशिरा महाजान प्रमदः प्रविखेलकः ॥
विराजकः प्रमालः स्या द्देवनाथो ललामकः ॥५५॥
कुम्भशिरा, महाजान, प्रमद, प्रवी, खेलक, बिराजक प्रमाज, देवनाथ, ललामक ॥५५॥

सुविन्दको योगमेधा परन्तेजा रिपुत्रशः ॥
अरविन्दो रिद्वेषश्च वरगोवरगायकः ॥५६॥
सुबिन्दक, योगमेधा, परन्तेजा, रिपुत्रस, अरविन्द, अरिद्वेष, वरग, वरगायक ॥५६॥

वरीको मधुवाक् शीलो बहुदः शालिकः सुवाक् ॥
अजरो देवनादश्च सून्नत स्तिलको वुक ॥५७॥
वरीक, मधुवाक, शील, बहुध, सात्विक, सुवाक, अजर, देवनाद, सून्नत, तिलक, वुक ॥५७॥

अमलो देवको मादी नन्दको ललितः स्वदः ॥
लोकावनो विटप्रज्ञ सुधास्तुको नरोत्तमः ॥५८॥
अमल, देवक, मादी, नन्दक, ललित, स्वद, लोकावन, बिट प्रज्ञ, सुधास्तुक, नरोत्तम ॥५८॥

अदोलकः सारलोकः प्रजिष्णु वारिमा प्रवा ॥
अमदो मधुवादी च सुप्रगल्भ सुखव्रतः ॥५९॥
अदोलक, सारलोक, प्रजिष्णु, बारिमा, प्रवा, अमद, मधुबादी, सुप्रगल्भ, सुख व्रत ॥५९॥

जित्वरो गुणविन्दश्च स्वामोदाकल भीषणः ॥
जैवात्रको सुनागश्च विद्याशीलो विदामकः ॥६०॥
जित्वर, गुणविन्द, स्वामोद, आकल, भीषण, जयवात्रक, सुनाग, विद्याशील यहाँ तक ये महाराज कोशलेन्द्र जी की १५० (डेढ़ सौ) रानियों के नामों का वर्णन हुआ ॥६०॥

इति श्री शंकर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्नगञ्जूषायां
श्रीक्षितीशमौलि कौशलेन्द्रस्य पत्नीनां नामकथनो
प्रसङ्गः सप्तमस्सर्गः ॥७॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादना कृत टीकायां कौशलेन्द्रस्य पत्नीनां नाम कथनो
प्रसङ्गः सप्तमः सर्गः

अथ रत्नोदधेस्तीरे पूर्वतो दश योजनम् ॥
देशे सौरठके चास्ति पुरा रूपालिका वरा ॥१॥

अब पूर्व समुद्र के किनारे से दस योजन की दूरी पर सोरठ नाम के देश में रूपालिका नाम की एक श्रेष्ठ नगरी है ॥१॥

राजास्या क्षत्रिय स्तत्र नाम्ना पिच महामतिः ॥
राज्ञीनो तस्य पुत्राया नुष्ठितस्य व्रतस्यतु ॥२॥

वहाँ के राजा महामति नाम के क्षत्रिय हैं। उन महाराज की रानियों से पुत्र उत्पन्न हों इस लिए अनुष्ठान किए हुए व्रत से ॥२॥

भग्नता अपि सर्वासु द्वे शते विंशति स्तथा ॥
जाता सुता महाभागा लग्नैके च ग्रहे शुभे ॥३॥

२२० पुत्री जो सब की सब महा भाग्य शालिनी एक ही ग्रह व एक ही लग्न सुन्दर मुहूर्त में ॥३॥

समजाः समरूपाश्च दृष्ट्वा ज्योति विदो पिताः ॥
योजिता नाम्नि स्वेकस्मि न्दशैवच दशैवच ॥४॥

एक साथ समान रूप वाली उत्पन्न हुईं। ज्योतिष विद्या के जानने वाले पिता ने उन सब को दश २ कर के एक २ नाम से योजित किया ॥४॥

स्वेच्छया भवने तस्य चैकदा मुनि नारदः ॥
आगतो वादय न्वीणां तेन राज्ञा समर्चितः ॥५॥

एक बार अकस्मात नारद मुनि अपनी स्वेच्छा गति से वीणा बजाते हुए महाराज के घर आ पहुँचे। महाराज ने उनकी पूजा की ॥५॥

पुत्र्या सर्वासमाहूय पातिता मुनि पादयोः ॥
तदा शिर्वाचनै स्तेन मुनिनापि प्रयोजिताः ॥६॥

सब कन्याओं को बुला कर के श्री नारद जी के चरणों में प्रणाम कराया। मुनि नारद जी ने सुन्दर आशीर्वाद दिया ॥६॥

तासां समत्वं रूपेण चाङ्गे नापि विलोक्य सः ॥
नारदो विस्मयं प्राप्य राजानं चाब्रवी त्तदा ॥७॥

उन कन्याओं के रूप गुण अङ्ग, रंग, अवस्था सब समान रूप से देखकर नारद जी को बड़ा आश्चर्य हुआ और महाराज से बोले कि ॥७॥

शृणुराजन्महाभाग महाभागाहि ते सुताः ॥
सर्वेश्वरस्य रामस्य भविष्यन्ति विमातरः ॥८॥

राजन् सुनो ! आप बड़े भाग्यशाली हैं और आप की महाभाग्यशालिनी कन्याऐं सर्वेश्वर श्रीराम जी की विमाता होवेंगी ॥८॥

आसां प्रदानं पुत्रीणां कर्त्तव्यं तु ममाज्ञया ॥
श्रीमद्दशरथे राज्ञि सार्वभौमे महोजसि ॥९॥

इन कन्याओं का परिग्रहण तुम मेरी आज्ञा से महापराक्रमी, सार्वभौम, चक्रवर्ति महाराज दशरथ जी से कराना ॥९॥

एवं तस्य वचः श्रुत्वा नारदस्य महामतिः ॥
प्रत्यूवाच विकुर्वाणो करिष्ये वचनं तव ॥१०॥

राजा महामति जी नारद जी के इस प्रकार वचन सुनकर आप ही का कहा करूँगा ऐसा कहकर ॥१०॥

परन्त्वस मञ्जसंहि न मे तस्य समानता ॥
स उच्चैः स्थः सर्वथा चाहं हीनः सर्वथा मुने ॥११॥

फिर कहे कि महाराज बड़े असमञ्जस की बात है कि वे सर्वथा ऊँचे हैं, मैं सर्वथा हीन हूँ। ये समान सम्बन्धी बातें कैसे सुघटित होंगी ॥११॥

स दिनेशान्वये भानु रहन्तु मुनि नारद ॥
निशेशा न्वय दीपोस्मि कथं सोङ्गी करोत्यतः ॥१२॥

हे मुने वे सूर्य वंश में सूर्य के समान हैं। मैं चन्द्र वंश में दीपक के समान हूँ अतः कैसे वे मेरी कन्याओं को अङ्गीकार करेंगे ॥१२॥

विनीतं वचनं तस्य राज्ञः श्रुत्वा महामतेः ॥
उवाच नारदः श्रीमान्माकुरु द्वापरं नृप ॥१३॥

महाराज महामति जी के इस प्रकार विनीत वचनों को सुनकर श्रीमान् नारद जी बोले कि राजन् आप द्वापर (शंशय) मत करो ॥१३॥

स सौशील्यो गुणाब्धिस्स्या न्महाशौन्दर्य्य विग्रहः ॥
असंख्य वैभवः श्रीमा न्ननिषेधं करिष्यति ॥१४॥

वे महाराज चक्रवर्ती दशरथ जी महाराज सुन्दरता के विग्रह, सद्गुणों के समुद्र व बड़े सुशील हैं। महान् ऐश्वर्यमान श्रीमान होने से वे आप को प्रार्थना को व्यर्थ नहीं करेंगे ॥१४॥

पूर्वं पितामहेनापि भविष्यज्ञेन ब्रह्मणा ॥
प्रज्ञापितोस्मि वृत्तान्ते पित्राजेन समञ्जकम् ॥१५

भविष्य के जानने वाले पितामह ब्रह्मा जी ने भी पहले ही यह वृतान्त मेरे को जना रक्खा है ॥१५॥

भाभिः कृतं सुताभिस्ते पूर्वं तस्मै तपः परम् ॥
वात्सल्य भाव प्राबल्या च्छ्रीरामे बालविग्रहे ॥१६॥

तुम्हारी इन कन्याओं ने पूर्वजन्म में परम श्रेष्ठ तप श्री राम जी के बाल विग्रह वात्सल-भाव की प्राबल्यता से किया था॥१६॥

राज न्विना श्रमेणैव भविष्यं न्तद्भविष्यति ॥
वारितु न्नक्षमो देवो मनुष्याणां तु का कथा ॥१७॥

इस लिए हे राजन् ये होनहार बातें बिना परिश्रम के ही हो जाँयगी । इस होनहार का विरोध करने के लिए ब्रह्मा भी कुशल नहीं है मनुष्यों की तो क्या कहना है ॥१७॥

इति वचनै तत्तिभि स्तोषयित्वा मुनीशो नरपति मतिकान्तं सौरठेशं सुतानाम् ॥
उपयम वर कार्ये कौतुकी कार्य्य दक्षः भगवति परि पक्षो ब्रह्मलोकं जगाम ॥१८॥

इस प्रकार के बहुत से बचनों से नारद जी ने सौरठाधिपति महाराज महामति जी को कन्याओं के वर-कार्य के विषय में संतुष्ट करके भगवान का पक्ष करने वाले कौतुकी कार्यों में बड़े कुशल श्री नारद जी ब्रह्म लोक को चले गए॥१७॥

• समध प्राप्य पुत्रीणां विवाहस्य महामतिः ॥
आहूय सार्वभौमन्तं श्री मन्त मजनन्दनम् ॥१९॥

महाराज महामति जी पुत्रियों के विवाह के विषय में निश्चय पाकर सार्वभौम, श्रीमान्, अजनन्दन दशरथ जी को बुलवा कर ॥१६॥

अत्यादरेण कन्यास्ताः समाकाराः मनोहराः ॥
सुदायेनापि महता ददौ तस्मै शुभेदिने ॥२०॥

अत्यन्त आदर से मनोहर समान सूरत वाली समस्त कन्याओं को सुन्दर दिन लग्न में महान् विधि से सुन्दर दमाद महाराज दशरथ के लिए दे दिया ॥२०॥

सोपि लब्ध्वा शुभाजाया एकत्रैव गुणाधिकाः ॥
धनेन दास दासीभि र्मुमोद मधुराकृतिः ॥२१॥

सुन्दर जन्म, सुन्दर बढ़े हुए समान गुण वाली पत्नियों को दास, दासी, और धन सहित प्राप्त करके मधुर आकृति वाले महाराज दशरथ जी भी अति प्रसन्न हुए ॥२१॥

व्यतीते कुत्रचि त्काले समाकारा सुतासुच ॥
जज्ञाते च द्वौ द्वौ पुत्रौ समाकारौहि मातृवत् ॥२२॥

कुछ काल के बीतने पर उन समान रूप गुण वाली पत्नियों से माताओं की ही तरह समान आकार वाले पुत्र एक २ से दो २ उत्पन्न हुए । २२।

मातृभिर्द्वि गुणी कृत्वा वशिष्टे न महात्मना ॥
नांम्नापि योजिताः सर्वे बसु रुद्र दिनेश वत् ॥२३॥

महात्मा श्री वशिष्ठ जी ने भी जैसे आठ वसुओं का एक नाम, ग्यारह रुद्रों का एक नाम, बारह सूर्यों का एक नाम होता है इसी प्रकार बीस २ पुत्रों का एक २ नाम रक्खा ॥२३॥

तथा च कथयिष्यामि पुत्राणां मातृणा मपि ॥
नामानि नृप कन्ये त्वां शृणु तानि समासतः ॥२४॥

हे राजकन्यके ! अब उन माताओं व पुत्रों का नाम मैं जानती हूं अतः तुम से कहकर सुनाती हूं सुनो ॥२४॥

रूपावल्यः सुखावल्य: गुणावल्यो ब्ज पङ्क्तयः ॥
कला लेखा कञ्जमाला रश्मिमाला ललामकाः ॥२५॥
वरेण्याश्च वराङ्गाश्च शुभाङ्गाश्च मनोरमा: ॥
सुप्रेतिकाः सुरङ्गा श्च नवलाः करभोरुकाः ॥२६॥

रूपावल्य, सुखावल्य, गुणावल्य, अबजपंक्ति, कला, लेखा, कंजमाला, रश्मि माला, ललामका, वरेन्या वरांगा, शुभाङ्गा, मनोरमा, सुप्रेतिका, सुरङ्गा, नवला, करभोरुका ॥२५।।२६॥

वामाङ्गाः वरवेण्यश्च प्रभावन्त्यो मनोज्वलाः ॥
प्रभाशीला श्चाप्येतास्तु स्वगणे रैक्य संज्ञकाः ॥२७॥

वामाङ्गा, वरवेन्या, प्रभावन्ती, मनोज्ज्वला प्रभाशीला-इस प्रकार अपने अपने गणों में एक एक नाम वाली ॥२७॥

तथैवासां कुमाराणां काम शौन्दर्य्यं शालिनाम् ॥
पित्रा नुहरतां नाम ज्ञेयमेकं तु विंशतेः ॥२८॥

जैसे माता हैं वैसे इन के काम सदृश शौन्दर्य वाले तथा पिता का अनुशरण करने वाले कुमारों का भी बीस २ का एक २ नाम जानना चाहिए ॥२८॥

शार्दूला जृम्भणा नाग कर्षका विश्वदीपकाः ॥
अप्रमेयबला रत्न यूपा अर्गल बाहुकाः ॥२९॥

शार्दूल, जृम्भण, नागकर्षक, विश्व दीपक, अप्रमेयबला, रत्नयूप, अर्गल बाहुका ॥२९॥

सर्वंजया जिष्ण वश्च सपत्नकम्पना स्तथा ॥
देश रूपा देवकल्पा वराङ्गा बलशालिनः ॥३०

सर्व जया, जिष्णव सपत्न, कम्पन, देश रूपा, देव कल्पा, वराङ्गा, बलशालिन ॥३०॥

घननादा घनरवा स्तरङ्ग बाहुका अपि ॥
सुप्रलापा अप्रधृष्या अमुधा रणक्रीडकाः ॥३१॥

घन नादा, घनरवा तरङ्ग बाहुका, सुप्रलापा, अप्रधृष्या, अमुधा, रण क्रीड़का ॥३१॥

महीभूषा बलाग्राश्च स्वगणं न विहीयते ॥
विद्यावन्तो पि नीतिज्ञाः पितुः सेवन तत्पराः ॥३२॥

महिभूषा, बलाग्रा-इस प्रकार एक एक नाम वाले अपने अपने गणों को नहीं त्यागते हैं। सभी लोग विद्वान हैं; नीति को जानने वाले हैं; पिता की सेवा में सावधान हैं ॥३२॥

शास्त्रविद्या विनीताश्च प्रीतिमन्त: परस्परम् ॥
श्रीरामस्य प्रियाः सर्वे आज्ञया प्यनु वर्तिनः ॥३३॥

शस्त्र विद्या में निपुण हैं; नम्र स्वभाव वाले हैं; परस्पर अनुराग रखने वाले हैं; श्री राम जी की भी आज्ञा का पालन करने वाले सब के सब अति प्रिय हैं ॥३३॥

इति श्री शंकर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
श्रीदशरथ पुत्र पत्नीनां नाम कथनो नाम
अष्टमस्सर्गः ॥८॥

इति श्री मधुकर रूपरसास्वादिना कृता टीकार्थां
श्री दशरथ पुत्र पत्नीनां नाम कथनो नाम अष्टमः सर्गः

अथेदानिं राजकन्ये सुरेशा द्यभिवन्दिताः ॥
राज्ञा श्रीकौशलेन्द्रस्य कौशल्यायाश्च सेवकाः ॥१॥

हे सुकान्ति ! अब मैं इन्द्रादिकों से बन्दित महाराज श्री कोसलेश जी और श्री कौसल्या अम्बा जी के सेवक ॥१॥

दाश्यो मुख्याश्च सचिवा ये चान्ये कार्य्य कारिणः ॥
पर्य्याया स्वर्णकाराद्या नामतो वर्णयामिते ॥२॥

दासी आदि मुख्यों का तथा मन्त्रियों का और भी जो कोई कार्य करने वाले अन्यों का जो कि सुनार, मनिहार आदि हैं उन का भी नाम क्रमशः वर्णन कर के सुनाती हूँ ॥२॥

एषां ज्ञानेन ध्यानेन तीर्त्वा संसार सागरम् ॥
त्रिपादे श्रीअयोध्यायां यान्ति येभावसाधकाः ॥३॥

इन सब के ज्ञान व ध्यान से भावना भजन का साधन करने वाले जीव संसार से तर कर त्रिपाद बिभूति वाली श्री अयोध्या जी में पहुँच जाते हैं ॥३॥

अथ नृप सचिवास्तु सुमन्तो धर्मपालकः ॥
धृष्टि जयन्तो विजयी सुराष्ट्रो राष्ट्रवर्द्धनः ॥४॥

महाराज श्री चक्रवर्ती जी के मन्त्रियों का नाम-श्री सुमन्त्र, धर्मपाल, धृष्टि, जयन्त, विजय, सुराष्ट्र, राष्ट्रवर्धन ॥४॥

अशोकश्च प्रधानाति मुख्याः स्युः सर्वकार्य्यकाः ॥
नन्दकः कुशली जिज्ञः प्रकृष्टो विनयी तथा ॥५॥

अशोक है। ये सब कार्यों में मुख्य प्रधान मन्त्री हैं। नन्दक, कुशली, विज्ञ, प्रकृष्ट, विनयी ॥५॥

सारज्ञः प्रवलो धृर्य्यो धन्यधीः यज्ञवाहकः ॥
वैवधीः सम्प्रदो मुक्तः कल्याणो वरवेलकः ॥६॥

सारज्ञ, प्रबल, धूर्य, धन्यधी, यज्ञवाह, वैवधी सम्प्रद, मुक्त, कल्याण, बर वेलक ॥६॥

षोडशप्रश्नेन सहिताः पूर्वोक्तानां महात्मनां ॥
क्रमेण युग्मतो ज्ञेया ह्यनुकर्तार औषधाः ॥७॥

षोडशप्रश्न—ये सोलह एक एक प्रधान मन्त्री के दो अनुयायी मन्त्री (सहायक मन्त्री) हैं ॥७॥

मितन्दस्तु महानेको गुणज्ञो नामतोप्यसौ ॥
धनोपचयो व्ययश्च प्रदिश्यन्ति नराधिपे ॥८॥

बड़े गुणवान एक मितन्द नाम के महान् कार्य कर्त्ता हैं जो महाराज के लिए धन-उपचय (आमदनी) और व्यय का विधान सम्हालते हैं ॥८॥

वशिष्ट वामदेवाद्याः प्राग्विवाका महात्मनः ॥
कलाकारेषु यत्कार्य्य मधिकर्ता स्तु तस्यवै ॥६॥

श्री वसिष्ठ वाम देव आदि ये महात्मा प्रचीन की रीति को बताने वाले हैं। और कलाकारों में जो भी प्रधान अधिकर्त्ता होते हैं उन में। ६॥

प्रावलीको महानेको तस्या नुगामिनो परे ॥
एकैक वस्तु प्रत्येको बहुशोपि तदा हिताः ॥१०॥

प्रावलिक नाम का एक महान कार्य कर्त्ता है और सब कलाकार उस के अनुगामी हैं। प्रति एक एक वस्तु का अलग २ कलाकार है। ऐसे कलाकार बहुत है॥१०॥

नाम्नापि गौरवोप्यको यावदन्न मसिद्धकम् ॥
राजभोग्य तस्य चासा वधिकारी समन्ततः ॥११॥

राजभोग के योग्य जितना कच्चा अन्न है उसका चारों तरफ से इन्तजाम कराने वाला "गौरव" नाम का एक मुखिया है ॥११॥

सुशीलको महाने को घृत्तादि रस वस्तुनः ॥
अधिकारी बहुशोप्यन्ये तद्वश्याःप्रतिवस्तुषु ॥१२॥

तथा दिव्यानि वस्त्राणि बहुमौल्यानि यानिवै ॥
तेषां गृहाधिकारी तु प्रवाल कर तीर्य्यते ॥१३॥

इसी प्रकार घृतादिक रस-वस्तुओं का भी सुशीलक नामक एक मुखिया है। उसके अनुयायी बहुत से हैं जो प्रत्येक वस्तुओं के विधान में सुशीलक के अधीन रहते हैं। उसी प्रकार बिस कीमती जितने भी दिव्य वस्त्र हैं उनके कोठार का अधिकारी प्रवालक नाम का है जो सब कार्य कर्त्ताओं में मुखिया है ॥१२॥१३॥

पुष्पादि क्वथितानां तु राजार्हाणां सुगन्धिनाम् ॥
अधिकारी दिदिलः स्या द्बहु शोनुचरै स्सह। १४॥

राजाओं के योग्य सुगन्धित पुष्प आदिकों के गलीचों का अधिकारी बहुत अनुचरों का प्रधान, दिदिल नाम का है ॥१४॥

अधिकारी भूषणानां राजार्हाणां नृपात्मजे ॥
नाम्ना स्या त्प्रेयक स्त्वेको वहुशास्तस्य सेवकाः ॥१५॥

राजकीय भूषणों के कोषाध्यक्ष "श्री प्रयक जी हैं और बहुत से सेवक सेवा करते हैं ॥१५॥

अनाहतः सुवर्णस्या धिकारी भास्वरस्तथा ॥
रजतस्याधिकारी तु नाम्ना मोद्गलो महान् ॥१६॥

स्वर्ण के कोषाध्यक्ष श्री अनाहत जी और भास्वर जी हैं। चाँदी के कोषाध्यक्ष "श्री मोद्गलजी हैं ॥१६॥

ताम्रादीना न्तु धातूनां वासरीको गणान्वितः ॥
नील पीतादि रागाना मधिकारी मधूलकः ॥१७॥

ताम्रादि धातुओं के कोषाध्यक्ष बहुत से गणों के ऊपर "श्री बासरीक जी" हैं नील पीत आदि रंगों के कोषाध्यक्ष "श्री मधुलक जी" हैं ॥१७॥

खड्गं च गवलश्चैव गजदन्तादिकं च यत् ॥
तेसां रास्या धिकारी तु जामको नाम सन्मतिः ॥१८॥

तलवार, शृङ्ग (सींग), गजदन्तादि के खजाने का अधिकारी सुन्दरमति वाले "जामक जी" हैं ॥१८॥

राजो पकरणं याव च्छत्रसिंहासनादिकम् ॥
यौगकः क्षेमक स्तेषां प्रणीतकः प्रमाणवित् ॥१९॥

छत्र, सिंहासनादिक जितनी भी राजकीय सामग्रियाँ हैं उनका उपचय और रक्षा करने वाले बड़े प्रमाणवेत्ता "श्री प्रणीतक जी हैं ॥१९॥

अप्रोत मणय स्तेषा मधिकारी सुरत्नकः ॥
वहुशोऽप्यनुगास्तस्य प्रभेदेष्वा धिकारिणः ॥२०॥

बिना बेधे हुए मणियों के कोषाध्यक्ष (खजांची) "श्री सुरत्नक जी" हैं जो बहुत से कार्य कर्त्ताओं के द्वारा रत्नों के बेधने (छेदने) का काम कराते हैं ॥२०॥

वालानां क्रीडन व्यूहा आदर्शादि परं हि यत् ॥
मण्डपा लंकृतं वाहू दण्डदीप गृहादिकम् ॥२१॥

बालकों के खिलौना, दर्पण आदि व मण्डल के दीप-दण्ड, खेलने के मकान ॥२१॥

एतेषा मधिकारीस्या न्नाम्ना कौवर को गुणी ॥
परिचर्या अपि तस्य नानागारेष्वधिकृताः ॥२२॥

इस प्रकार की सामग्रियों के खजाने के कोषाध्यक्ष श्री कौवरक जी बड़े गुणवान, कलाकुशल हैं। आप के अधीन बहुत से नौकर विविध प्रकार के महलों में काम करते हैं ॥२२॥

स्वर्ण रौप्य कृतं याव त्स्थालीभृङ्गारकादिकम् ॥
तद्गृहाधिकृत श्चासौ नाम्नौ सावोधकः सुधीः ॥२३॥

स्वर्ण के व चाँदी के थाली, झारी आदिक पात्रों के संरक्षक बड़े बुद्धिमान श्री सौबोधक जी हैं ॥२३॥

वाद्यं चतुर्विधं सर्वं न्नाना भेदाकृति कृतम् ॥
तदाधिकारी नाम्नातु सुजीवक उदारधी: ॥२४॥

तंत, घन, सुशिर, आनद्ध-इन चार भेदों के नाना प्रकार के आकृति वाले जितने भी बाजे हैं उन सब के अधिकारी बड़े उदार बुद्धि वाले श्री सुजीवक जी हैं ॥२४॥

शस्त्राणां कवचादीना मधिकारी सुलोलकः ॥
तेनाप्यधिकृता श्चान्ये तत् कुर्वन्ति तदाहितम् ॥२५॥

शस्त्र व कवचादिकों के अधिकारी श्री सुलोलक जी हैं। आप के अधीन बहुत से नौकर आज्ञा पालन करते हैं ॥२५॥

हस्तीनां सज्जनाथावद् भूषणानि नृपात्मजे ॥
सुभालकोपि नाम्ना स्या त्स्वानुगैर्बहुभिः सहः ॥२६॥

हाथियों के सजाने के जितने भी भूषण हैं उन के कोषाध्यक्ष श्री शुभालक जी हैं जो बहुत से सेवकों के साथ में हैं ॥२६॥

एवञ्च राजार्हाणांतु हयानां हेमनिर्मिता: ॥
खचिता रत्नमुक्ताभिः कल्पनाभूषणान्यपि ॥२७॥

इसी प्रकार घोड़ों की स्वर्ण निर्मित राजकीय भूषण और रत्न मुक्तादिक खचित विविध रचना के भूषणों के ॥२७॥

अधिकार्य्यो हि तत्रस्था द्वर वाहुक नामकः ॥
सान्वयी सर्व विद्यासु परिचारक प्रेरकः ॥२८॥

अधिकारी श्री वरबाहुक जी हैं जो बहुत से समाज के ऊपर मालिक और सर्व विद्याओं के प्रचारकों के प्रेरक हैं ॥२८॥

कश्मीर जन्म कस्तुरी कङ्कोल घन सारकम् ॥
जाति फलंजायकश्च लवङ्गलादि पूगकम् ॥२९॥

केशर, कस्तूरी, कङ्कोल, कपूर, जायफल, पीला चन्दन, लौंग, सुपारी आदि ॥२९॥

यच्च कर्दम मिश्राकं ताम्बूलं वेप वारकम् ॥
अपरं वेपवारादि सर्वमेकत्र केगृहे ॥३०॥

तथा कपूर, अगर, कस्तूरी, कङ्कोल इन सबको पीसकर बनाया हुआ अंग लेप, सौंप, पान, पान का मसाला ये सब वस्तुएं जिस घर में रहता है ॥३०॥

एतद्व स्तुसमूहानामधिकर्ता विदालकः ॥
अन्ये तद्वस्तु रक्षार्था स्तस्य सृष्टि परायणाः ॥३१॥

उस घर के अध्यक्ष (मालिक) श्री विदालक जी है। आपकी इन वस्तुओं की पैदाइश व रक्षा करने के लिए बहुत से नौकर हैं ॥३१॥

लक्षावधि सूपकारा स्तत्र मुख्या स्त्रय इमे ॥
मधुशालक सौधाकौ सुधाकर अपिप्रभः ॥३२॥

लाखों की संख्या में रसोइयाँ हैं। उनमें मुख्य तीन हैं उनके नाम मधुशालक, सौधक, सुधाकर हैं ये सब अति प्रभाशाली हैं ॥३२॥

अन्ये प्रयोजिता स्तैश्च प्रवीणा विंज्जनादि के ॥
सुकुण्डलाः सुमाल्याश्च केयूरभूषिता अपि ॥३३॥

इन तीनों ने और भी बहुत से प्रवीण रसोइयाओं को भोजन बनाने के लिए नियुक्त कर रक्खा है जो भोजन बनाने में बड़े प्रवीण हैं सुन्दर कुण्डल मणियें माला व विजायठ आदि भूषणों से भूषित हैं ॥३३॥

सहस्रेण गणा स्त्वेक एवम्मुख्या गणेहि ये ॥
कोटिश स्सूपकारास्स्युर्भक्षकाराश्च पायसाः ॥३४॥

एक हजार रसोइयों का एक गण होता है उसका जो मुखिया है उसको गणमुख्य कहते हैं। ऐसे गणमुख्य रसोइया करोड़ों की संख्या में हैं जो भक्ष, भोज्य, लेह्य, पेय ऐसे पदार्थ केवल दूध का ही बनाने वाले हैं ॥३४॥

आदाय चानुदानादि वस्तूनां कार्य्य व्यापृताः ॥
बहुशो नुचरा स्तेषु मुख्यो ह्येको विधायकः ॥३५॥

वस्तुओं को लेकर इधर उधर देन लेन व्यवहार करने वाले ऐसे नौकर बहुत हैं उनमें विधान कर्त्ता मुख्य एक है। ३५॥

सोयं नाम्नातुमभ्यः स्यात्सर्व कार्य्येषु तत्परः ॥
अथस्यु द्वारपालानां नृपते मन्दिरस्यतु ॥३६।

उनका नाम सभ्य है जो सब कार्यों में सावधान है। अब महाराज के मन्दिर के द्वारपाल बहुत हैं। ३६॥

चत्वारो ह्यधिकर्तारो युक्तादिक्षु चतुर्ष्वपि ॥
प्रवरो मानलीको भीमाकः सालीक एव च ॥३७॥

उनमें चार मुख्य कर्त्ता हैं जो महल के चारों दिशाओं के फाटकों पर निवास करने वाले हैं उनका नाम:—प्रवर, मानलीक, भिमाक, सालीक है ॥३७॥

सौविदल्ला अप्यनन्ता मुख्यास्तेष्वपि षोडशः ॥
तेषां नामानि प्रवरः प्रवारक प्रधावकौ ॥३८॥

श्री चक्रवर्ती जी महाराज के समीप में वेद को हाथ में धारण करके रहने वाले अनन्त नौकर हैं। उनमें मुख्य १६ हैं उनका नाम—प्रवर, प्रवारक प्रधावक और ॥३८॥

सौमनस्यः सुनारीको हास्यकः सुक सारकौ ॥
वामको वल्गुवादी च नवलीको ह्यजद्भुरः ॥३९॥

सौमनस्य, सुनारीक, हास्यक, सुक, सारक, वामक, वल्गुवादी, नवलीक, अजद्भुर तथा ॥३९॥

रम्भास्योऽपिमादुर्लेयो बरीका रासिका पि च ॥
सर्वे चैं ते वराङ्गा श्च वराम्बर विभूषणाः ॥४०॥

रम्भास्य, मादुर्लेय, बरीक, रासिक-है। ये सब के सब श्रेष्ठ अङ्ग वाले और श्रेष्ठ वस्त्र भूषणों को धारण किए हुए हैं ॥४०॥

मन्दिराणिच राज्ञीनां यावन्ति सन्ति सान्तरैः ॥
तत्रागमनागमने शिबिका श्चैव स्यन्दनाः ॥४१॥

महाराज चक्रवर्ती जी के रनिवास में महारानियों के जितने भी मन्दिर हैं उनमें अन्दर और बाहर आने वाली महारानियों की जितनी भी शिविका पालकियाँ व रथ हैं वे सब पर्दा आदिकों से सुन्दर सजे हुए हैं ॥४१॥

सूताश्चापि वाहकास्तु नरवेष वराननाः ॥
अनन्ता दाशिका दिव्य भूषणांशुक भूषिताः ॥४२॥

उन सवारियों के वाहक सूत आदि भी नर भेष को धारण की हुई अनन्त दासीयाँ हैं जो दिव्य वस्त्र भूषणों से अति सुन्दर भूषिता हैं ॥४२॥

तासांप्रयोजका मुख्याः श्रीकौशल्यादि तिसृणाम् ॥
तासां षोडशकानां तु नामानि नृपजे शृणु ॥४३॥

उन सब में से केवल श्री कौसल्यादिक तीन महारानियों की जो अनन्त दासी हैं उनमें मुख्य जो सोलह हैं उनका नाम हे राज कन्यके ? मुझ से सुनो ॥४३॥

चन्द्रालिका चन्द्रजाया चन्द्रभा चन्द्रमालिकाः ॥
मयङ्का च मयङ्कास्या मृदुला मार्दुला पि च ॥४४॥

चन्द्रालिका, चन्द्रजाया चन्द्रभा, चन्द्रमालिका, मयंका, मयंकास्या, मृदुला, मार्दुला ॥४४॥

सुदोला लासिनी चित्रा विचित्रा वन्धुरा विदा ॥
कौमुदी केतकी चैताः स्वकार्ग्ये तत्पराः सदा ॥४५॥

सुदोला, लासिनी, चित्रा, विचित्रा बन्धुराविदा, कौमुदी, केतकी हैं। ये सब अपने कार्यों में सदा सावधान हैं ॥४५॥

रक्षिका भूषणा गारे तासां मुख्य श्चत्सकाः ॥
माना प्रमणा विदगा विस्रम्भाचेति ज्ञायताम् ॥४६॥

श्री महारानी कौसल्या जी के भूषणागार की रक्षिका अनन्त दासियों में चार मुख्य हैं उनका नाम माना, प्रमणा, विदगा, विस्रम्भा है ॥४६॥

तथांशुक गृहे तासां चतस्रो मुख्यका यथा ॥
सुरसा सुरमा नेमी प्रांशिका चेति ज्ञायताम् ॥४७॥

और वस्त्रागार की रक्षिका अनन्त दासियों में से मुख्य २ का नाम सुरसा, सुरमा, नेमी प्रांशिका है ॥४७॥

स्त्रीणांतु मण्डले रागाः सिन्दूरा ञ्जनकादयः ॥
एतस्यैव गृहे मुख्या सुविज्ञा चेति नामका: ॥४८॥

और स्त्रियों के मण्डल में सिन्दूर अञ्जन आदिक रङ्ग क जितने पदार्थ हैं उनके महल की रक्षका जितनी भी दासियाँ हैं उनमें मुख्य श्री सुविज्ञा जी हैं ॥४८॥

अथान्तरङ्गाः सेवक्या याः सानिध्यं निरन्तराः ॥
कौसल्या श्च सुमित्रा श्च कैकेयीं सेवितुं सदा ॥४९॥

श्री कौशल्या जी, श्री सुमित्रा जी, श्री कैकयी जी इन तीनों माताओं की अंत रङ्ग सेवा में निरन्तर समीप रहने वाली । ४९॥

तस्यास्तस्या: पितुर्गेहा त्सुदाये साकमागताः ॥
श्वश्रू नियोजिता या श्चो भयोरपि विभागतः ॥५०॥

जो उन महारानियों के पिताओं के घर से दहेजे में साथ आयी हुई हैं तथा और भी जो सासुओं की दी हुई दासियाँ हैं, ये दोनों पक्षों के विभागों का नाम मेरे से सुन लो ॥५०॥

नामानि शृणु मत्तस्त्वं भाविन्यस्ते पि लालने ॥
. कौशल्यायाः पितुर्गेहा दागताया स्तया समम् ॥५१॥

हे राजकन्ये ? ये सब तुम्हारे लाड़ प्यार करने वाली भावना करने योग्या हैं जो श्री कौसल्या जी के साथ पिता जी के घर से आयी हुईं हैं ॥५१॥

सख्य श्चेट्यो प्यसंख्याश्च तासां मुख्यासु मुख्यकाः ॥
तासां मुख्यानि नामानि कथयामि शुभानने ॥५२॥

वे सखी और दासियाँ असंख्य हैं उन सब में जो मुख्य में उनके पवित्र (पुण्यमयी) नाम के हे शुभानने ! मैं कहती हूँ, सुनो । ५२ ।

सखी विन्दा सुविन्दा च मन्थरङ्गा प्रवालिका ॥
भूषायां कुशला श्चैताः सर्वा स्सुन्दर विग्रहाः ॥

सखियों का नाम--बिन्दा सुबिन्दा मन्थरङ्गा प्रबालिका है। ये भूषणों के सजने में बड़ी कुशला सब सर्वाङ्ग सुन्दर विग्रह वाली हैं ॥५३॥

रूपिणी राग मालाच स्वधरा वासिनी तथा ॥
चतस्रोगान कुशलाः प्रसादयन्ति तेन ताम् ॥५४॥

श्री रूपिणी रागमाला स्वधरा बासिनी ये चारों गाने में बड़ी कुशला हैं । इसी संगीत विद्या से महारानी जी को प्रसन्न रखती हैं ॥५४॥

सुमना वादिका विज्ञा तथा वासन्तिका परा ॥
पुष्प शय्यादि रचना प्रवीणाः सेवयन्ति ताम् ॥५५॥

सुमना, वादिका बिज्ञा, बासन्तिका-ये पुष्प शय्यादिक रचना की प्रवीणता से श्री महारानी जी की सेवा करती हैं ॥५५॥

चार्वङ्गी चारुला भेया सारङ्गा चेति सर्वदा ॥
यत्नेनरचयन्ति ता स्तस्यै ताम्बूल विटिका ॥५६॥

चारबङ्गी, चारुला, भेया, सारङ्गा--ये चारों महारानी जी के लिए बड़ी युक्ति से पान के बीरा की रचना करती हैं ॥५६॥

अथवेला समञ्जाच मन्तरा मधुका शुभा ॥
अष्टापदादि क्रीडासु कुशला सेवयन्ति तैः ॥५७॥

बेला, समञ्जा, मन्तरा, मधुका—ये चारो चोपड़ादिक खेलों से बड़ी कुशलता पूर्वक सेवा करती हैं ॥५७॥

इत्येता षोडशो ध्येवं पितृ गेहा त्समागताः॥
श्वश्रू नियोजिता स्त्वत्र तासां मुख्या स्सुमुख्यकाः ॥५८॥

इस प्रकार ये सोलह तो श्री कौशल्या जी के पिता के घर से आयी हुई हैं और सासु के द्वारा मिली हुई अनन्त सखियों में मुख्य, उनमें भी मुख्या ॥५८॥

नामानि सेवनं चापि शृणु राजसुते शुभे ॥
शुभा जानी दया देवी चेति वेद मिता इमाः ॥५६॥

उनका नाम व सेवा विधि को भी हे शुभे ! मुझ से सुनो। शुभा, जानी, दया, देवी—ये चार तो ॥५६॥

उद्वर्तनश्च स्नानश्च तथा स्याः स्वधिवाशनम् ॥
प्रीत्या नित्यं प्रकुर्वन्ति यद्यथा समयोचितम् ॥६०॥

उबटन स्नान को विधि पूर्वक कराने वाली और गन्ध माल्य करके प्रेम पूर्वक नित्य जिस समय जैसा शृङ्गार चाहिए वैसा समयानुसार नित्य शृङ्गार कराने वाली हैं ॥६०॥

रासा रसा रिरेवा चानुगा वेद गणा इमाः ॥
पुष्प सन्दर्भ कुशला स्तेन सा अभिः प्रसाद्य ते । ६१॥

रासा, रसा, रेवा, अनुगा--ये चार पुष्पों की ढेरी लगाकर अनेक प्रकार के शृंगार इन्तजामों से श्री महारानी जी को प्रसन्न रखती हैं ॥६१॥

विद्या बन्द्या ध्यमल्लाच साकल्या स्त्रीगणै रिमाः ॥
गान वाद्येपि कुशला स्तयो स्ताभिः प्रसाध्यते ॥६२॥

विद्या, बन्द्या, अमल्ला साकल्या ये चार बहुत सखियों के गणों में मुख्या हैं इन सबसे श्रीकौशल्या अम्बा जी गान वाद्यों में भी कुशलता पूर्वक सेवित होती हैं ॥६२॥

सुरागारञ्जनी सिद्धा मेधा सर्वांग शोभनाः॥
नाना पुराण वार्ताभि र्रचयित्वा प्रहेलिकाः ॥६३॥

सुरागा, रञ्जनी सिद्धा मेधा—ये सर्वांग से सुन्दरी, नाना प्रकार के पुराणों की बातों से तथा प्रहेलिका आदि रचना करके श्री महारानी जी को प्रसन्न रखती हैं ॥६३॥

पत्नीं श्री कौशलेन्द्रस्य शुभाङ्गी राममातरम् ॥
सख्य श्चतस्रो प्येवञ्च मुदयन्ति मुदान्विताः ॥६४॥

महाराज श्री कोशलेन्द्र जी की प्रधान पटरानी सुन्दर श्री विग्रह वाली श्री राम जी की माता हैं आप को इस प्रकार चार २ करके बहुत सखियाँ अनेक प्रकार की सेवा से आप को आनन्दित रखत हैं। ६४।

अथैवञ्च सुमित्रायाः पितृ गेहा त्समागताः ॥
सख्य स्तासाञ्च नामानि वक्ष्ये प्यासा ञ्च सेवनम् ॥६५॥

इसी प्रकार श्री सुमित्रा जी के पिता के घर से आई सखियों का नाम भी और उन की सेवा का भी मैं वर्णन करती हूँ ॥६५।

मधुका मधुरा माला सुधा वेद मिता इमाः ॥
भूषासु कुशलाः सर्वास्तेन तां शीलयन्ति ताः।६६॥

मधुका, मधुरा, माला, सुधा,—ये चार भूषण सजाने में बड़ी कुशला श्री सुमित्रा जी की सेवा करती हैं ॥६६।

एला लवङ्गा सुकना कुसुमा कान्तिका निभा ॥
सम्फली वासिका चैताः स्नानोद्वर्त्तन कारिकाः ॥६७॥

ऐला, लवङ्गा, सुकना, कुसुमा, कान्तिका, निभा सम फली, बासिका—ये आठ सखी स्नान और उबटन कराने वाली हैं। ६७।

अथ मोदा च मञ्जूषा लासी लीला गुणाधिका ॥
चतस्रो वसनं शय्या शीलयन्ति सुगन्धिभिः ।६८॥

मोदा, मंजूसा, लासी लीला—ये चार गुणों में अत्यन्त चढ़ी, बढ़ी, वस्त्र पहिनाना, शय्या बिछाना, सुगन्धि अतरादि लेपना—इस प्रकार सेवा करती हैं ।६८॥

श्वश्रू नियोजिता यास्तु चतस्रो प्रथमम्विरा ॥
व्यङ्गा विलेखिनी प्रस्था कुर्वन्त्येवाधिवासनम् ।६९॥

अब सासु की दी हुई सखियों का वर्णन करता हूं विरा, व्यङ्गा, विलेखिनी, प्रस्था—ये सब गन्ध माल्य आदि करके शृङ्गार करने वाली हैं ॥६९॥

अथानुकाका केली च केका कैरव कापिच ॥
कुशला गान वाद्येपि तेन ताभिः प्रसाद्यते ॥७०॥

अनुकाका, केलि, केका, कैरव, कापि—ये सब गाने बजाने में कुशला संगीत से सेवा करती हैं ।७०॥

अथ राजी गुणा लिप्सा माध्या वेद मिता इमा ॥
पुष्प सन्दर्भ कुशला तेन तां शीलयन्ति ताः ॥७१॥

राजी, गुणा, लिप्सा, माध्या—ये चार पुष्पों की ढेरीं लगाकर फूल शृङ्गार से सेवा करती है ॥७१॥

अथाटवी देशाच मगदा मल्लिका तथा ॥
सख्य श्रैता श्चतस्त्रोपि पुष्पादेर्गन्ध कर्षकाः ॥७२॥

अटवी, देशा, मगदा, मल्लिका—ये चार पुष्पों की सुगन्धि निकाल कर इत्र से सेवा करने वाली हैं ॥७२॥

सौगन्ध्यं क्वाथ तैलश्च कुर्वन्त्येव मनोहरम् ॥
अनया कलया साभिः सर्वदा सेव्यते सुखम् ॥७३॥

सुगन्धित मनोहर क्वाथ तेल फूलेल आदि बनाने की कला से हमेशा श्री सुमित्रा जी की सुख से सेवा करती हैं ।७३॥

एवं याः सन्ति कैकय्यारुभयोः पत्तयो रपि ॥
नानागुणैर्भू षिताश्च सर्वाः सुन्दर विग्रहाः ॥७४॥

इसी प्रकार श्री कैकयी अम्बा के भी मातृ पक्ष व सासु पक्ष दोनों पक्षों से सुन्दर भूषिता गुणवती सर्वाङ्ग सुन्दर विग्रह वाली ।७४॥

नामानि मातृदत्तानां सखीनां प्रथमं शृणु ॥
फुल्ला प्रफुल्ला सौख्या च पारा वीति श्रुते मिताः ॥७५॥

सखियाँ हैं। अब माता की दी हुई सखियों का नाम पहले सुनो—फुल्ला, प्रफुल्ला, सौख्या, परा—ये चार सखी ॥७५॥

उत्सादनश्च स्नानश्च कारयन्ति यथोचितम् ॥
चार्चिक्यं चापि कुर्वन्ति कर्पूर मलयादिभिः ॥७६॥

ऐणी वीणा सुवेणी च प्रगल्भाः श्रुति सम्मिताः ॥
इमा भूषासु चतुरां स्तस्याः सेवन तत्पराः ॥७७॥

उत्थापन, स्नानादि समयोचित सेवा करती है और समय पर कपूर मलयादि चन्दनों का अंग लेपन भी करती हैं। ऐणी, वीणा सुवेणी, प्रगल्भा—ये चार भूषण शृंगार करने में बड़ी चतुरा समय पर सेवा में सावधान रहती हैं ॥७६, ७७॥

आशा त्रया त्रिवेणी च मंजुगाथा श्रुतेर्मिताः ॥
इमास्तु पुष्पा भरणं रचन्ति शयनं शुभम् ॥७८॥

आशा, त्रया, त्रिवेणी, मंजुगाथा—ये चार पुष्पों के भूषण शृंगार बनाने में और पुष्प पर्यङ्क बिछाने में बड़ी कुशला हैं ।७८॥

साङ्गीतिका कोकिला च सुस्वरा राग कोविदा ॥
गायन्त्यो ता श्चतस्त्रोपि ज्ञात्वेक्ष्यां समयोचितम् ॥७९॥

सङ्गीतका कोकिला, सुस्वरा, रागकोविदा—ये चार कैकयी अम्बा की इच्छा को जानकर समयानुसार संगीत से सेवा करती हैं ॥७९॥

अथात्र श्वश्रु दत्ताया स्ताः शृणुष्व सुसंज्ञया ॥
नीता ज्ञिप्सा सुस्त वाच प्रवन्धापि श्रुते मिताः ॥८०॥

अब सासु की भी दी हुई सखियों का नाम सुनो—नीता, जिप्सा, सुस्तवा प्रवन्धा-य चार ॥८०॥

शीलयन्ति सुवासांसि वासयन्ति सुगन्धिभिः ॥
परञ्च सूत्र सन्दर्भं कुर्वन्ति वसनेषु च ॥८१॥

वस्त्रों को सुगन्ध से बासित करके पहिनाती हैं और वस्त्रों में धागाओं से चित्र बनाकर श्री कैकयी अम्बा की सेवा करती हैं ॥८१॥

अथप्रभावभा सौदा गन्धी वेद मिता इमाः ॥
ताम्बूल वीटिका न्तस्यै मनोज्ञांरचयन्ति च ॥८२॥

प्रभा, वभा, सौदा, गन्धी—ये चार पान-वीरा रचना करके श्री कैकयी अम्बा की रुचि जान कर पवाती हैं ॥८२॥

यज्ञाऽनुज्ञा समा प्राज्ञा चतस्रोपि गुणान्विताः ॥
केशप्रसाधनं तस्या यावादि पाद चित्र कम् ॥८३॥

यज्ञा, अनुज्ञा, समा, प्राज्ञा—ये चार बड़ी कला कुशला केशों को सम्हालती हैं और महावर आदिक रंगों से अंग चित्र रचना करती हैं ॥८३॥

शान्ती कृपा चमाङ्गल्या शालिनीति श्रुतेर्मिताः ॥
इमा नृत्यं प्रकुर्वन्ति सर्वे लोकैः प्रसंशितम् ॥८४।

शान्ति, कृपा मांगल्या सालिनी— ये चार नृत्य आदिक कलाओं में सर्वलोक प्रसंसित हैं ॥८४॥

तथा च कौशलेन्द्रस्य श्रीमद्दशरथ स्यतु ॥
अंतरज्ञा ये च संति दासास्तान् वर्णयामि ते ॥८५॥

अब कोशलेन्द्र महाराज श्री दशरथ जी के अन्तर्मज्ञ जो दास हैं उन का मैं तुमसे वर्णन करती हूँ ॥८५॥

सुकरो पकरौ संचो मनोज्ञ श्रमनोविदः ॥
विरच्य वीटिकां राज्ञे ददन्त सर्वदैवते ।८६॥

सुकर, उपकर संच, मनोज्ञ, मनोविद—ये महाराज चक्रवर्ती जी को पान के वीरा बनाकर पवाने की सेवा में सावधान हैं ।८६।

अदङ्क सुजकौ कङ्कः कज कञ्जौ करो दकः ॥
भूषणानि किरीटादी न्ये ते रक्षन्ति यत्नतः ॥८७॥

अदङ्क सुजक कङ्क कज कंज कर, दक—ये लोग महाराज चक्रवर्ती जी के किरीटादि भूषणों को सावधानता पूर्वक रक्षा करते हैं ॥८७॥

देमानो दामन श्चैव देवक श्च दिवाकरः ॥
इमे दासा क्षापयन्ति धौतादि यत्नयन्ति च ॥८८॥

देमान, दामन, देवक, दिवाकर—ये चार दास स्थान और धुले हुए कपड़ों को पहनाने वाले बड़े बुद्धिमान है ॥८८॥

वारको वरको विन्ती नवको नन्दक स्तथा ॥
पाद सम्वाहनं चैते कुर्वन्ति तैल मृत्तणम् ॥८६॥

बारक, बरक, बिनती, नवक, नन्दक— ये पांच महाराज चक्रवर्ती जी के पाँव सुहराने वाले और तेलादिक मर्दन करने वाले बड़े सुखदायी हैं ॥८६॥

वासको वसको वासुः कन्तुको नैयकस्तथा ॥
नियुक्ता श्चामर च्छत्र व्यजनादिषु सर्वदा ॥६०॥

बासक, बसक, बासु, कन्तुक, नैयक—ये लोग चवर, छत्र व्यजनादिक लेकर सेवा में सदा नियुक्त रहते हैं ॥६०॥

वरालकः स्वालकश्च माल्यको मौरिक स्तदा ॥
चौलोष्णीषादि वस्त्राणि यत्नयन्ति च यत्नतः ॥६१॥

बरालक स्वालक, माल्यक, मौरिक— ये चारों महाराज चक्रवर्ती जी के चोला, पगड़ी आदि वस्त्रों को बड़ी सावधानता पूर्वक यत्न से सम्हालते हैं ॥६१॥

अभयो नभयश्चैवात्रसको बुधग स्तथा ॥
समये पादुकां रत्न खचितां संदिशन्तिच ॥६२॥

अभय नभय, अत्रसक बुधग— ये चार रत्न खचित चरण पादुकाओं को समय पर महाराज को पहिनाते और उतारते हैं ॥६२॥

प्रावलो स्थूलको विद्यो निभको मेघ नामकः ॥
मध्याह्न शयनागारे प्येते तं सेवयन्ति च ॥६३॥

प्रावल, स्थूलक, विद्य, निभेक मेघ—ये पाँच मध्याह्नशयनागार में महाराज की सेवा करने वाले हैं ॥६३॥

सुदावको वेदकश्च विदनश्च विदम्बरः ॥
सुरेख श्चा वलेकश्च विकटो नटकस्तथा ॥६४॥

सुदावक, वेदक, विदन, विदम्बर, सुरेख, अवलेक, विकट, नटक ॥६४॥

चंद्रको वरक श्चको योधन श्चाग्रगस्तथा ॥
प्रवारको जवीकश्च यौत्तको वल्गुको वली ॥६५॥

चन्द्रक, बरक, चक्र, योधन, अग्रग, प्रवारक, जीवक यौतक, बल्गुक, बली ॥६५॥

खचि द्वे त्रधरा नित्यं दिव्यालंकृत्य लंकृताः ॥
शीलादि गुण सम्भारा नृप सन्निध्य सेवकाः ॥६६॥

लोग रत्न खचित नित्य दिव्य अलंकृत बेंतों को सुन्दर भूषणों से भूषित होकर धारण करते हैं। सुन्दर, शील, आदिक सद्गुणों के समुद्र ये सेवक महाराज के नित्य समीप में रहकर सेवा करने वाले हैं ॥६६॥

अथास्य जगदीशस्य वन्दितस्य सुरासुरैः ॥
श्रीमन्तः कौशलेन्द्रस्य पारम्पर्य्येण शिल्पिनः ॥९७॥

अथ जगत के ईश्वर सुर असुर सब से वन्दित श्री मान् कोशलेन्द्र दशरथ जी के शिल्प कारी विद्या के विद्वानों का क्रमशः वर्णन करती हूँ ॥९७॥

चित्रकारो लोलचित्रः साधकास्तु सहस्रशः ॥
प्रयुक्ता स्तेन यत्कार्य्ये कुर्वन्ति शिक्षिताहिये ॥९८॥

चित्रकार, लोकचित्र, नामके ये दो कारिन्दा हजारों कार्यकर्त्ताओं के ऊपर प्रधान हैं । जिसको जिस कार्य में महाराज चक्रवर्तीजी नियुक्त करते हैं इन दोनों में से एक उसी प्रकारकी शिक्षामें निपुण हजारों शिल्पियें को कार्य में लगाकर कार्य सिद्ध करते हैं ॥९८॥

गुणचक्षुः स्वर्णकार एवं सोपि सस्रकैः ॥
शिक्षितैः सेव्यमानस्स्या त्स्व कार्य्ये तत्परः सदा ॥९९॥

गुणचक्षु नामक स्वर्णकार वह भी हजारीं सुशिक्षित सुनारों के ऊपर मालिक महाराज की आज्ञा पालन करने में सावधान रहता है ॥९९॥

तन्तुवायस्तु पटवः स्वकार्य्ये कुशलो महान् ॥
वासांसि च महार्हाणि स्नत्पादयति शिक्षितैः ॥१००॥

जुलाहा और पटवा लोगों का मालिक पटव नाम का बड़ा कुशल है और बिस कीमती वस्त्रों को सुशिक्षित नौकरों द्वारा उत्पन्न कराता है ॥१००॥

रजनः कुसुम्भादिभ्यः सतु नाम्ना गुण ध्रकः ॥
तन्तुवाय स्त्वाकृतीक स्तक्षको मेदुरङ्करः १०१

और कसूम आदि के भी कपड़ों को बनाने वाले गुणध्रक नाम का तथा रजन, तन्तुवाय आकृतीक, तक्षक, मेदूरंकर ये सब नाम के लोग हैं ॥१०१॥

क्रीडा कौतुक खेलानां निर्मेता त्ववसायिकः ॥
ग्रन्थिकारस्तु सान्दर्भो मालाकार स्तु सौरभः ॥१०२॥

खेलने के खिलौना कौतुक की वस्तुओं को बनाने और व्यवसाय करने का मालिक ग्रन्थिकार, संदर्भ, मालाकार सौरभ--ये चार नाम वाले हैं ॥१०२।

सुकारस्तु तूल सोधी काम्ववीको वरीशकः ॥
रजकोपि वरीशेको गुणको द्वार मार्जकः॥ १०३॥

रुई को धुनने वाले का नाम तूल सुकार है। शंख की चूड़ी बनाने वाले का नाम बरीशक है । धोबी बरीशेक नाम का है और राज द्वार पर झाड़ू लगाने वाले का नाम गुणक है ॥१०३॥

आनद्धं रचय त्येव धनङ्कारो गुणालयः ॥
सुवेदः सुखिरङ्कारः सर्वैते शिक्षितै यु ताः ॥१०४॥

तत् याने तार के बाजा वीणादि तथा घन झालरादि सुषिर वंशी आदि आनद्ध मृदंगादि चार प्रकार के वाद्यों के मुखिया का नाम—ततकार गुणानन्दी गुणावाद तथा--चमड़े के दुन्दुभी आदिक बाजाओं के बजाने वाले मुखिया का नाम धनकार है गुणलय, सुबेद, सुखरङ्कार व संगीत की शिक्षा देने वाले हैं ॥१०४॥

विग्रहा न्नचयत्येवं सतु नाम्ना विधानकः ॥
मणीनां वेधक श्चासौ नाम्ना जेवन्त को वरः ॥१०५॥

मूर्ति निर्माण करने वाले का नाम विधानक है । मणियों को छेदने वाले का नाम जयवन्तक है ॥१०५॥

शस्त्राणां मार्ज को नाम्ना वीरन्दोपि स्वकीयकैः ॥
शिक्षितैः कुरुते स्वीयं कार्य्यं नित्य मुदान्वितः ॥१०६॥

शास्त्रों के मार्जन करने वाले का नाम बरीन्द है । यह अपने अनुचरों द्वारा बड़ी प्रसन्नता से नित्य प्रति काम कराने वाला है ॥१०६॥

व्योकारोपि शस्त्रकारो ताम्र कार स्तथा परः ॥
रीति कारा रजतस्य वस्तूनां कारकोपि च ॥१०७॥

लोहा, तांबाँ, पीतल और चाँदी आदि के अस्त्र शस्त्र, भूषन, बर्तन आदि बनाने वालों के नाम ॥१०७

एतेषां त्वेव नामानि ज्ञेया न्यत्र क्रमेण च ॥
क्रोञ्चको माठरो मेढ्यो जासुको ज्यादकोपि च ॥१०८॥

क्रमशः बताती हूँ क्रोंचक माठर, मेढ्य, जसुक ज्यादक ॥१०८॥

कन्दुकानां कारकोपि कन्दलीकस्तु नामतः ॥
पत्रिका पटकारोसौ नाम्ना जेवन्त उच्यते ॥१०९॥

गेंदों की रचना करने वाले का नाम कंदलीक है । पत्रिका और वस्त्र आदिक बनाने वाले का नाम जेवन्त है ॥१०९।

कल्पिता वात पट्टानां नाम्ना गैवन्त उच्यते ॥
करण्डा वैतसा तेषां निर्माता वैश्य नामतः ॥११०॥

वायू के लायक कपड़ों की कल्पना करने वाले का नाम गैवन्त है । बेंत के करन्डो आदिकों को बनाने वाले का नाम वैश्य है ॥११०॥

सभाया मास्तरणाय कटानां कारको पिसः ॥
दर्पणानान्तु निर्माणं करोति नामतः कुमी ॥१११॥

यही बैश्य सभा में बिछाने के लिए चटाई आदि के बनाने का काम करता है । दर्पण आदिकों का भी निर्माण करने वाले का नाम कुमी है ॥१११॥

पादुकास्तु पानीपो हस्ति घोटक सज्जनाम् ॥
करोति चाद्भुतं कारं स्वर्ण सूत्र सुनिर्मिकम् ।११२॥

चरण पादुका और हाथी घोड़ाओं के लिए स्वर्ण सूत्रों से रचित अद्भुत जीन बनाने वाले का नाम पानिप है ॥११२॥

वस्त्रागाराणिदिव्यानि वितानानि पिधानकम् ॥
तेषां निर्माण वेत्तातु नाम्ना वैधृक उच्यते ॥११३॥

वस्त्रों के दिव्य महल, वितान, परदे बिछावन आदि का निर्माण करना जानने वाले का नाम वैधूक है ॥११३॥

कल्पिता रथ गुप्तीनां सन्त्रको नाम ज्ञायताम् ॥
मयूर पत्त गुच्छानां ग्रन्थको माङ्गलीयकः ॥११४॥

रथ के लोहे आदि से बनाए हुए आच्छादन अर्थात छत्री के बनाने वाले का नाम सन्त्रक है। मोर पंखों के गुच्छों को ग्रन्थित करने वाले का नाम मांङ्गलीयक है ।११४॥

.ये तूक्ता स्ते मनो भावं जिज्ञासितुं नृपेशतुः ॥
श्रयन्ति नित्य सानिध्यं दिव्याम्बर विभूषणाः ।११५॥

इस प्रकार हे राजकन्यके ! तुम्हारे मनो भाव को जानकर ये जिनका नाम मैंने तुम्हें सुनाया है ये सब दिव्य वस्त्रभूषणों से सजे हुए महाराज चक्रवर्ती जी के समीप रह कर नित्य सेवा करते है ॥११५॥

एषां वैभव मालोक्य देवेशोपि स्वयं हृदि ॥
न्यूनत्वं मन्यते नून मन्येषा मत्र का कथा ॥११६॥

इन सब के वैभव को देख कर के देवेश इन्द्र भी हृदय से अपने को न्यून मानता है अन्यों की क्या कथा कहूँ ॥११६॥

एवं त्वयोध्ये शितुन्वितं परंमह त्समाजः किल योग मुद्रया ॥
तस्यां सु प्रीत्या कथितं सु श्रद्धया श्रुत्वापि साराजसुता सुखं ययौ ॥११६॥

इस प्रकार श्री योगमुद्रा जी ने अवधेश महाराज के समीप में रहने वाले महान समाज का बड़ा ही सुन्दर वर्णन किया है। बड़ी श्रद्धा से प्रेमपूर्वक सुनने वाली राजकन्या सुनकर महान् सुख को प्राप्त हुई ॥११७॥

इति श्री शंकर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
अमात्यादि नाम कथनो नाम नवम स्सर्गः ॥९॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां अमात्यादि
(मन्त्री) नाम कथन नाम नवमः सर्गः

सा पूर्वं कृतयौगिका जनकजा कान्ते सुकान्ते धिया ।
तेनाती व सुजात प्रीति हृदया यावन्नतं प्राप्स्यति ॥
तावत्तच्चरिताश्रया भवतीकिं तस्यै परं रोचते,
ह्यप्रच्छ त्पुनरेवविरतरकथा तां योगमुद्राम्प्रति ॥१॥

वह राजकन्या सुन्दर कान्त श्री जानकी जी के कान्त में निश्चय बुद्धि से पूर्व जन्म से ही भावना को सिद्ध की हुई अतः इसी बजह से अत्यन्त बढ़े हुए अनुराग वाली जब तक प्रियतम को प्राप्त नहीं कर जायगी तब तक के लिए उन श्री सीताराम जी का चरित ही उसका आश्रय है। क्या उसको और कुछ अच्छा लग सकता है ? अर्थात् नहीं । अतः उस राजकन्याने योगमुद्रा से उन्ही श्री सीताराम जी की कथा को विस्तार से सुनने के लिए पूछा ॥१॥

अत स्तयो र्हि सम्बन्धे चतुर्वर्गे ण शान्तिकम् ॥
दम्पत्यो र्मिश्रितं रूपं वेदे शा त्रेपि गीयते ॥२॥

अर्थ, धर्म, काम मोक्ष इन चारों वर्गों (कामनाओं) से निवृत्त हो गया है मन जिनका ऐसे भक्त उन्हीं श्री सीताराम जी के सम्बन्ध में श्याम-गौर मिश्रित रूप से सने हुए हृदय वाले भक्तों की वेद शास्त्रों में प्रसंशा गाई गयी है ॥२॥

राजपुत्रो वाच

वाम पत्नी पते रङ्गं सस्या दस्या स्तुदक्षिणम् ॥
मातृ पित्रो स्तयो रेव मातृ पितृ महावधिः ॥३॥

सुकान्ति बोली कि हे योगमुद्रे ! पति का बायाँ अङ्ग पत्नी होती है और पत्नी का दाहिना अङ्ग पति होता है। इस प्रकार से माता पिताओं की महा अवधि उन दोनों श्री सीताराम जी में ही होता है ॥३॥

अवान्तरीय मिथुनं यच्च सम्वन्धिनो नयोः ॥
सर्वं कथय सर्वज्ञे चे त्कृपा मयि ते स्थिरा ॥४॥

इन श्री सीताराम जी का और इन दोनों के अन्तरङ्ग सम्बन्धियों की सम्पूर्ण कथा को हे सर्वज्ञे तुम्हारी मेरे में स्थिर कृपा है तो कहो ॥४॥

योगमुद्रोवाच

श्रूयतां सावधानेन य त्पृष्टं हि त्वाया शुभे ॥
कीर्त्ति मा न्यशशा लोढा दिनेशस्या न्वयोस्ति च ॥५॥

श्री योगमुद्रा जी बोलीं-हे शुभे ! तमने जो कुछ पूछा है उसे मैं कहती हूँ सावधान होकर सुनो । बड़े कीर्तिमान, यशस्वी सूर्य वंश में उत्पन्न हुए ॥५॥

इन्द्रादिभिर्वन्दितोयं वंशः शुद्धः सनातनः ॥
भगीरथ ककुत्थाया यत्र जाता महा शयाः ॥६॥

इन्द्रादि लोक पालों से अभिवन्दित सनातन शुद्ध वंश में भगीरथ, ककुस्थ सरीखे महाशय उत्पन्न हुए हैं ॥६॥

येनावतारिता गङ्गा सर्व लोक शुभंकरी ॥
चत्वारः सागरा लोके प्रसिद्धाः सगरात्मजै ॥७॥

जिन्होंने सर्व लोक मङ्गलकारिणी गङ्गा को लोक में उतारा। चारों समुद्रों को जि सगर जीन के पुत्रों ने खन डाला यह बात लोक में प्रसिद्ध है ॥७॥

एवम्भूतोत्तमे न्वाये नाभागस्यात्मजस्त्वजः ॥
तस्य पत्नी तु सानंदा साचा त्कीर्तीव मूर्तिमान् ॥८॥

इस प्रकार के उत्तम वंश में श्री नाभाग महाराज के बेटा श्री अज महाराज हुए उनकी पत्नी श्री सानन्दा साक्षात् कीर्ति ही मूर्तिमान थीं ।।८।।

तस्यां सुकीर्त्ती रूपायां विख्यातो विजयी महान् ॥
श्रीमान्दशरथो जातः सर्वाङ्गेन प्रकीर्त्तितः ॥६॥

उन सुन्दर कीर्ति स्वरूपा श्री सानन्दा जी से महान् प्रसिद्ध, लोक विजयी श्रीमान् दशरथ जी उत्पन्न हुए। जो सर्वाङ्ग से कीर्तिमान हैं ॥६॥

दिश्यावाच्यां मद्र देशे कान्तिकास्ति पुरी वरा ॥
मण्डलेशो महीपालो नाम्ना तत्रास्ति शन्तिकः ॥१०॥

दक्षिण दिशा मद्र देश में कान्तिका नाम की श्रेष्ठ नगरी है। वहाँ के माण्डलिक महिपाल श्री शान्तिक नाम से प्रसिद्ध हैं ॥१०॥

भ्राता राज्ञो देवशील; पुत्रस्तुमानशीलकः ॥
सुता तस्यैव सानन्दा दत्ता तेन त्वजायसा ॥११॥

उन के भाई देव सील पुत्र मानसील हैं तथा कन्या सानन्दा नाम की महाराज शान्तिक ने महाराज श्री अज जी के लिए पाणिग्रहण कराया ॥११॥

सा च श्री रामभद्रस्य सम्वन्धेस्या त्पितामही ॥
श्यालोऽजस्य मानशीलो रामस्य भातुलः पितुः ॥१२॥

वे श्री सानन्दा जी श्री रामभद्र जी की सम्बन्ध से पितामही (दादी) लगती हैं। महाराज अज जी के साले श्री मानशील जी श्री राम जी के पिता के मामा लगते हैं ॥१२॥

श्रीमद्दशरथस्यास्ति मतामहस्तु शान्तिकः ॥
पितु र्मातामहो रामे सो भव च्छान्ति को नृपः ॥१३॥

महाराज श्री दशरथ जी के नाना श्री शान्तिक जी श्री राम जी के पितृमातामह लगते हैं ॥१३॥

मानशीलस्य पुत्रोस्ति मानदो नाम सुव्रतः ॥
भ्रातादशरथ स्यैव मातुलीयो हि सोभवत् ॥१४॥

महाराज मान सील जी के पुत्र सुन्दर धर्मात्मा मानद नाम से प्रसिद्ध हैं जो महाराज दशरथ जी के मातुलीय भ्राता (ममुहर भाई) लगते हैं ॥१४॥

स रामस्य पितृव्योऽस्ति पितृ र्मातृक वर्गिकः ॥
एवम्बिधस्तस्य पुत्रो वराङ्गो वन्धुरेव च ॥१५॥

वे श्री राम जी के पितु र्मातृक काका लगते हैं। इसी प्रकार उन के पुत्र बराङ्ग जी श्री राम जी के भाई लगते हैं ॥१५॥

श्रीमद्दशरथस्यैका भगिनी दिव्यरूपिणी ॥
नाम्ना देव कला सा च सन्धिराजो नृपोत्तमः॥१६॥

श्री महाराज दशरथ की दिव्य स्वरूप एक बहिन हैं जिनका नाम देवकला है। उनका विवाह एक श्रेष्ठ राजा श्री सन्धिराज जी हैं ॥१६॥

तस्य पुत्रः सालिनीक स्तस्मै दत्ता सुदायकैः ॥
पश्चिमायां दिशि तस्य पुरी नाम्ना विशालिकाः ॥१७॥

उनके पुत्र सालिनीक महाराज से हुआ है इनकी राजधानी पश्चिम दिशा में बिशालिका नाम से एक प्रसिद्ध नगरी है उसमें है ॥१७॥

तस्या देवकलायास्तु सुतो दिव्य गुणान्वितः॥
श्रीमद्दशरथस्या सौ भागिनेयो भवच्छुभे ॥१८॥

उन श्री देवकला जी से दिव्य गुण सम्पन्न एक पुत्र उत्पन्न हुआ जो महाराज दशरथ जी का भानजा है ॥१८॥

सतुस्या द्राम चन्द्रस्य भ्राता फाव्योस्ति लौकिकै ॥
नाम्ना देव वरो सौस्या द्रामाय रोचते गुणैः ॥१६॥

हे शुभे वे श्री राम चन्द्र जी के फुफेरा भाई लगते हैं। उनका नाम देवबर है जो श्री राम जी को अति प्रिय लगते हैं वे बड़े गुणवान हैं ॥१६॥

एवं पत्रिक वगंश्तु रामस्य वर्णितः शुभे ॥
मातृ वर्गं शृण्वेदानिं त्व त्प्रीत्या वर्णयाम्यहम् ॥२०॥

हे शुभे ! मैंने इस प्रकार तुम से श्री राम जी के पैतृक-वंश का वर्णन किया अब मैं तुम्हारी प्रसन्नता के लिए श्री राम जी के मातृक-वंश का वर्णन करती हूँ सुनो। २०॥

दक्षिणस्यां दिशिस्त्वेको देशः कौशल नामकः॥
पूर्व मेवाभवत्तत्र ब्रह्मवीर्यो नृपो बली ॥२१॥

दक्षिण दिशा में कौशल नामक एक देश है वहाँ प्राचीन समय में ब्रह्मवीर्य नाम के एक बड़े बलवान राजा हुए हैं॥२१॥

अभवत्तस्य वन्शेतु देवकौशल्य नामतः ॥
तस्य पत्नी महाभागा सौजन्या गुणवत्तरा ॥२२॥

उन के वंश में श्री देव कौशल्य महाराज उन की पत्नी महाभागा, बड़ी गुणवती श्री सौजन्या जी हैं ॥२२॥

तस्यां जाता तस्य राज्ञः पुत्रा वेदमिताः शुभाः ॥
पुत्री त्वेका भवत्तस्य कौशल्या कीर्ति विग्रहा ॥२३॥

उन से महाराज देव कौशल्य जी के बड़े सुन्दर चार पुत्र उत्पन्न हुए और एक साक्षात् कीर्ति बिग्रहा श्री कौसल्या नाम की कन्या हुई ॥२३॥

इनप्रभो ज्येष्ट पुत्रो वरजस्तु रविप्रभः ॥
तस्मादप्यवरजोयः सतुनाम्नादिवाकरः ॥२४॥

बड़े पुत्र का नाम इनप्रभ, छोटे रविप्रभ, उनसे छोटे दिवाकर ॥२४॥

ततोनुजातः सम्याकः सम्य ग्दिव्य गुणा वधिः ॥
सुदायै स्तेन कौशल्या देव कौशल्यकेनच ॥२५॥

उन से छोटे सम्याक—ये चारों दिव्यों गुणों की अवधि हुए हैं। महाराज श्री देव कौशल्य जी ने अपनी कन्या कौशल्या जी को सुन्दर दमाद ॥२५॥

दत्ता श्रीमद्दशरथाय भानु वंशस्यभानवे ॥
वेदैश्च गीयमाना सा राम ब्रह्म प्रजावती ॥२६॥

भानु वंश में सूर्य सदृश श्री दशरथ के लिए दिया। इस प्रकार वेदों द्वारा गायी गयी व श्री कौशल्या जी परात्पर ब्रह्म श्री राम जी की माता हुईं। २६॥

एकोस्ति पश्चिमाया न्तु दिशि देशो वराहलः ॥
हारालिका पुरीतस्य देशे ख्याता शुभावनी ॥२७॥

पश्चिम दिशा में एक बराहल नाम का देश है वहाँ पर हरालिका नाम की नगरी बड़ी सुभावनी है ॥२७॥

तत्र राजास्ति सान्तानो नाम्ना दिव्य गुणावधिः ॥
गुणाशीला सुरूपाच चतस्रो गुणभ्राजया ॥२८॥

वहाँ के राजा बड़े गुणवान श्री शान्तान नाम से प्रसिद्ध हैं। उनकी गुणा, शीला सुरूपा गुण भ्राजा नाम की चार कन्याऐं उत्पन्न हुईं ॥२८॥

सुता जाता तस्यराज्ञः सर्वाश्च गुण वत्तराः ॥
देव कौशल्य पुत्रेभ्य स्तेन दत्ता यथा क्रमात् ॥२९॥

इन सब गुणवती कन्याओं को देव कौशल्य के चारों पुत्रों के लिए क्रमशः व्याह दिया ॥२९॥

मातामहस्तु रामस्य देवकौशल्य कोनृपः ॥
इन प्रभाद्या रामस्य मातुलाः सन्ति सद्व्रताः ॥३०॥

वे महाराज देव कौशल्य श्री राम जी के नाना लगते हैं इनप्रभादि राजकुमार ममुहर भाई लगते हैं जो सुन्दर व्रत वाले हैं ॥३०॥

गुणाद्या अपि मातुल्यो रामे वात्सल्य वृत्तिकाः ॥
मातामही च सौजन्या धन्या लोक प्रशंशिताः ॥३१॥

गुणादिक मामियाँ (मातुलानि; मामी) श्री राम जी में वात्सल्य भाव से स्नेह रखती हैं और श्री राम जी की मातामही (नानी) श्री सौजन्या भी बड़ी लोक प्रशंसित धन्य हैं। ३१॥

श्रीरामस्य मातुलानां पुत्राः सर्वे गुणायताः ॥
ते भवन्ति भ्रातरश्च रामस्य मातृ वर्गिकाः ॥३२॥

श्री राम जी के मामा इनप्रभादिकों के पुत्र भी महान गुणवान हैं जो श्री राम जी के मातृवर्गिक (माता के वंश के) भाई हैं ॥३२॥

नामान्येषां शीलभानु रिन प्रभौरसो भवत् ॥
रविप्रभस्यौरसस्तु देव दालक नामकः ॥३३॥

उन ममुहर भाइयों के नाम—इनप्रभ के बेटा शीलभानु रविप्रभ के बेटा देव दालक ॥३३॥

दिवाकरस्यौरसस्तु नाम्ना देवप्रभो वरः ॥
औरस्योपि सम्याकस्य सुजात इति नामतः ॥३४॥

दिवाकर के बेटा देव प्रभ और सम्याक के सुजात—हैं ॥३४॥

देवकौशल्य नृपतेः पितृव्यो ज्ञाति बान्धवः ॥
नाम्ना तु सुमित्रः सोऽस्ति पत्नी तस्य शुभावनी ॥३५॥

देव कौशल्य का चचेरा भाई सुमित्र हैं उन की पत्नी सुभावनी है ॥५॥

तस्यां तस्य त्वेक पुत्रो गुणमित्रो महावलः ॥
पुत्री त्वेका गुण श्लिष्टा सुमित्रा कारि नामतः ॥३६॥

उन महाराज सुमित्र जी के सुभावनी पत्नी से एक गुणमित्र नामक महावलवान् पुत्र हुए और एक पुत्री सुमित्रा नाम की बड़ी गुणवान हुईं ॥३६॥

कौशल्या च सुमित्रा च प्रीति मत्योः परस्परम् ॥
सापि तेन सुदायैश्च दत्ता दशरथाय वै ॥३७॥

ये कौशल्या और सुमित्रा दोनों कन्याएँ बड़ी प्रीतिमती थीं अतः सुमित्र ने अपनी कन्या सुमित्रा को भी सुन्दर दमाद श्री दशरथ जी के लिए ब्याह दिया ॥३७॥

तस्यां लक्ष्मण शत्रुघ्नौ जातौ तस्य महात्मनः ॥
वायव्यदिशि चैकोस्ति देश कास्मीर नामकः ॥३८॥

उन सुमित्रा जी से महात्मा श्री दशरथ जी के श्री लक्ष्मण और शत्रुघ्न नाम के दो पुत्र उत्पन्न हुए। वायव्य दिशा में काश्मीर नाम का एक देश है ॥३७॥

राजास्या स्केकय स्तत्र तत्पत्नी सुप्रभाभवत् ॥
पुत्री केकय राजस्य भरतस्यास्ति मातृका ॥३९॥

वहाँ के राजा श्री कैकय जी उन की पत्नी सुप्रभा हैं उन महाराज कैकयराज की एक कन्या हुई जो भरत जी की माता है ॥३९॥

तस्या बन्धुर्देवकोस्ति तत्पुत्रो देव मानकः ॥
मातातु देव मानस्य सुदेवी नामतः शुभा ॥४०॥

कैकयी का भाई देवक हैं उनके बेटा देव मानक हैं। देव मानक की माता सुदेवी नाम को बड़ी सुलक्षणा है ॥४०॥

पत्नी तस्य जात रूपा पुत्र स्तुस्या सुखायनः ॥
एवं श्रीरामचन्द्रस्य मातृ वर्गाणकं विदुः ॥४१॥

देवमान की पत्नी जातरूपा है और पुत्र सुखायन नाम के हुए। इस प्रकार श्री राम जी के मातृवर्ग के वंश का वर्णन किया इस को तुम जानो ॥४१॥

*** अथ श्रीजानकी जीका वन्श वर्णनम् ***

तत्पत्न्यः पितृ वन्शोपि मातृवन्शोपि कीर्तिमान् ॥
ब्रह्म शक्त्या स्तुजानक्या वदामिश्रद्धया शृणु ॥४२॥

उन श्री राम जी की पत्नी श्री जानकी जी का पितृ-वंश और मातृ-वंश भी महान् कीर्तिमान है जिस वंश में परात्पर ब्रह्म की आदि शक्ति श्री जानकी जी का प्रादुर्भाव हुआ है उसका मैं बर्णन करता हूँ हे सुकान्ति ! श्रद्धा से सुनो ॥४२॥

पूर्व त्वेको रवे र्वन्शो विवाहेन विभागतां ॥
जानक्या रामचन्द्रस्य जात स्तत्तु सताम्मतम् ॥४३॥

प्राचीन समय में तो ये दोनों वंश (सूर्य वंश, निमि वंश) एक ही थे विवाहादिकों की बजह से इन वंशों के दो विभाग हो गए यह सज्जनों का मत है ॥४३॥

विवाह स्त्रोटना च्छम्भो श्चापस्य सत्य वादिनः ॥
अन्यथा नभवेद्वाक्यं जनकस्य महामतेः ॥४४॥

महामति सत्यवादि महाराजा जनक जी के शंकर जी के धनुष तोड़ने के शिवाय विवाह का बचन व्यर्थ नहीं हो सकता ॥४४॥

निमि वन्ये ह्रस्व रोमा सर्वज्ञो लोक पालकः ॥
तस्यास्ति ज्येष्ठ पुत्रस्तु नाम्ना शीरध्वजोमहान् ॥४५॥

निमि वंश में लोक पालक महाराजा ह्रस्व रोमा बड़े सर्वज्ञ थे उन के ज्येष्ठ पुत्र श्री शीरध्वज नाम के राजा बड़े महान महात्मा थे ॥४५॥

कनिष्ट स्तस्य भ्रातातु नाम्ना कुशध्वजो महान् ॥
अष्टौ शीरध्वजस्यापि सन्ति चान्येविमातृकाः ॥४६॥

और छोटे पुत्र श्री कुशध्वज जी ये भी बड़े महान् महात्मा हुए। श्री शीरध्वज जी की आठ शौतेली मातायें थीं ॥४६॥

पूर्व दक्षिण कोणे तु कोण देशोस्ति विस्तरः ॥
विकाशास्ति पुरीतत्र स्मृद्धितोपि विकाशिता ॥४७॥

पूर्व और दक्षिण के बीच कोने में एक कोण कामक विस्तृत देश है वहाँ विकासा नाम की एक नगरी बड़ी समृद्धि शाली है ॥४७॥

तत्रराजा भूरि मेधा भूरिभागो महावलः ॥
भ्राता सहोदरस्तस्य ज्ञानमेधा गुणा करः ॥४८॥

वहाँ के राजा श्री भूरिमेधा जो महा बलशाली बड़े भाग्य मान थे उन के सहोदर भाई बड़े गुणवान श्री ज्ञान मेधा जी थे ॥४८॥

सुमाल कुण्डला वेतौ द्वौपुत्रोभूरि मेधशः ॥
सुदशा कान्तिमतीति पुत्रीद्वय मजायताम् ।।४९।।

श्री भूरि मेधा महाराज के सुमाल और कुण्डल नामक दो पुत्र थे और सुनया व कान्तिमती नाम की दो कन्याऐं भी हुईं ।।४९।।

तथैव तस्य भ्रातृश्च द्वे सुते शुभदर्शने ॥
विद्याचैका सुविद्याच पुत्रौद्वौ वीर कान्तिकौ ॥५०॥

उसी प्रकार उन के भाई श्री ज्ञान मेधा जी के भी बीर और कान्ति नाम के दो पुत्र और विद्या, सुविद्या, नाम की दो कन्याऐ हुईं ।५०।।

पत्नी सुमेधसो नाम्ना सुधाग्रा दिव्यदर्शना ॥
गुणाग्रेति च नाम्नातु पत्नी स्या ज्ञानमेधशः ॥५१॥

श्री सुमेधा जी (भूरि मेधा जी) की पत्नी श्री सुधाग्रा जी बड़ी सुन्दर दिव्य दर्शना थीं और ज्ञान मेधा जी की पत्नी श्री गुणाग्रा जी महान् गुणवती थीं ।।५१।।

सुमेधसा स्वयं पुत्र्यौ दत्ते शीरध्वजाय च ॥
सुदायैः सर्व विधिना वित्तव्यय कृतेमहि ।।५२।।

श्री सुमेधा जी ने अपनी दोनों कन्या श्री सुनया और कान्तीमती जी को सुन्दर दमाद श्री शीरध्वज जी के लिए खूब धन खर्च पूर्वक सुन्दर सब विधियों से विवाह कर दिया ।५२।।

तथैव तस्य भ्रात्रापि द्वे च एव सुतेस्वयं ॥
सुदायैः सर्वविधिनादत्ते कुशध्वजाय च ॥५३॥

इसी प्रकार उनके भाई भूरिमेधा जी ने भी अपनी कन्या श्री विद्या और सुविद्या जी को समस्त उत्तम विधियों से विवाह करके सुन्दर दमाद श्री कुशध्वज जी के लिए दे दिया ।।५३।।

तस्यां पत्न्यां सुदशायां शीरध्वज महात्मनः ॥
पुत्री श्री जानकी जाता सुतो लक्ष्मी निधि स्तथा ॥५४।

तथैव च कान्तिमत्यां च सुतस्त्वेको गुणाकरः ॥
सुता नाम्नोर्मिला जाता गुण रूपविभूषिता ॥५५॥

महात्मा श्री शीरध्वज जी की सुनयना नाम की पत्नी से श्री जानकी जी प्रगट हुईं तथा एक पुत्र श्री लक्ष्मी निधि नाम के हुए। उसी प्रकार कान्तिमती पत्नी से गुणाकर नामक एक पुत्र और उर्मिला नाम की बड़ी गुणरूप भूषिता कन्या उत्पन्न हुई ।।५४।।५५।।

भ्रातुः कुशध्वस्यास्य विद्यायां माण्डवीतिच ॥
श्रुतिकीर्तिः सुविद्यायां जाता दिव्य गुणायता ॥५६॥

इसी प्रकार दूसरे भाई श्री कुशध्वज जी के श्री विद्या नाम की पत्नी से माण्डवी सुविद्या नाम की पत्नी से श्रुतिकीर्ति नाम की बड़ी गुणवती कन्याऐं उत्पन्न हुईं ।।५६।

विद्यायां सुनिधिश्चैव सुविद्यायां निधानकः ॥
एवं पुत्रा वपि द्वौच जातौ तस्य महात्मनः ॥५७॥

और विद्या जी से सुनिधि नामक और सुविद्या से निधानक नाम के दो पुत्र भी महात्मा कुशध्वज जी के हुए ॥५७॥

अस्ति देशो दक्षिणस्यां दिशिनाम्ना विडालकः ॥
पुरीतत्रास्ति वैडाला राजा तत्रास्ति श्रीधरः ॥५८॥

दक्षिण दिशा बिडालक देश में बैडाला नामक नगरी में श्री घर महाराज रहते थे ॥५८॥

पत्नी तस्यास्ति राज्ञस्तु श्रीधरस्य सुकान्तिका ॥
तस्यां पुत्रा वुभौ जातौ चतस्रोपि सुताः शुभाः ॥५९॥

उनकी पत्नी श्री सुकान्तिका नाम की थी उनसे दो पुत्र और चार कन्यायें उत्पन्न हुईं ॥५९॥

कान्तिधरो ज्येष्ट पुत्रो वरजस्तुयशोधरः ॥
नन्दा वाणी च सिद्धोषा चतस्रो नामतः सुताः ॥६०॥

बड़े पुत्र का नाम कान्तिधर और छोटे का नाम यशोधर था। नन्दा वाणी, सिद्धा, ऊषा—ये चार नाम उनकी कन्याओं के हैं ॥६०॥

आदरेणैव महता शीरध्वज कुशध्वजौ ॥
आनीतौ हि पुरीं स्वांच श्रीधरेण महात्मनाः ॥६१॥

महात्मा श्री घर जी ने बड़े आदर के साथ मिथिलेस महाराज श्री शीरध्वज और कुशध्वज जी को अपनी नगरी में लिवा लाए ॥६१॥

सुदायैः सर्वविधिना चतस्रोपि सुताः स्वयम् ॥
तयोर्यथा क्रमेणैव सुतेभ्यः सम्मतो पिताः ॥६२॥

और स्वयं अपनी कन्याओं को उन दोनों महाराज के कुमार चारों सुन्दर दमादों के लिये सब प्रकार की वैदिक लौकिक विधि के अनुसार विवाह कर दिया ॥६२॥

सिद्धानाम्नी तुया कन्या दत्ता शीरध्वजश्यच ॥
सुताय वै श्रीनिधये वाणी गुणाकराय वै ॥६३॥

सिद्धा नाम की जो कन्या थी उसे श्री शीरध्वज जी के पुत्र श्री निधि के लिए दिया और वाणी नाम की कन्या को गुणाकर जी के लिए दिया ॥६३॥

कुशध्वजस्य पुत्राय दत्ता सुनिधये शुभा ॥
उषा नाम्नी च या कन्या नन्दा सा तु निधान के ॥६४॥

और श्री कुशध्वज जी के पुत्र सुनिधि के लिए उषा नाम की सुन्दर कन्या को दिया और निधानक के लिए नन्दा नाम की कन्या को दिया ॥६४॥

एवं श्री मिथिला महेन्द्र मणिना शीरध्वजेनात्मजाः ॥
सभ्राता च विवाहिताः समकुले वध्वश्च लब्धाः शुभाः ॥६५॥

इस प्रकार श्री मिथिला महेन्द्र मणि शीरध्वज जी ने अपने और अपने भ्राता के सब कुमारों के लिए समान कुल में उत्तम बधुओं को प्राप्त किया ॥६५॥

अश्वेभा बहुस्यन्दना बहुधनं माणिक्य मुक्तामयं ॥
तैषा श्चैव सुदायदे गुणवतां दामाश्च दासो वराः ॥६६॥

हाथी घोड़े, रथ, सम्पत्ति, मणि माणिक्य, मुक्ता इन प्रकार की बहुत सम्पत्ति को प्राप्त किया। और बधुओं के पिताओंने भी सुन्दर गुणवान दमादों के लिए दास दासी उत्तम सम्पत्ति बहुत दिया ॥६६॥

अस्ति वारहलो नामा कोणे चोत्तर पश्चिमे ॥
देशो वृन्दारको नाम सत्र त्पूर्व नृपोत्तमः ॥६७॥

उत्तर पश्चिम के कोना पर वारहल नामक देश में वृन्दारक नामक नगरी में प्राचीन समय में एक उत्तम राजा हुए ॥६६॥

तस्य वन्श्यो महातेजा नृपो भूदर्क भास्वरः ॥
तश्य पत्नी तु ज्येष्टिका जाज्या नाम्नी गुणान्विता ॥६८॥

उनके वंश में महान तेजस्वी अर्कभाज नाम के बड़े भाग्यशाली राजा हुए। उनकी ज्येष्ठ पत्नी जाज्या नाम की बड़ी गुणवती थी ॥६८॥

तश्यामेवार्कभाजस्तु द्वौ जातौ बलव त्सुतौ ॥
बलापत बल्लोव्रायौ पुत्री त्वेका शुभाजया ॥६९॥

उन से अर्कभाज महाराज के बड़े बलवान दो पुत्र उत्पन्न हुए। एक का नाम बलापत दूसरे का नाम बलोव्राय था और एक शुभाजया नाम की कन्या थी ॥६९॥

सा तेना दत्य विधिना सुदायैः शुभदर्शने ॥
हश्वरोम्णि हर्षितेन योजिता जय शालिनी ॥७०॥

हे शुभदर्शने! उन महाराज अर्कभाज जी ने अपनी उस शुभाजया नाम की बड़ी जयशालिनी का बड़े आदर के साथ वैदिक विधि से सुन्दर दामाद श्री ह्रस्वरोम जी के लिए बड़ी प्रसन्नता से विवाह कर दिया था ॥७०॥

तस्याः सुगर्भ सम्भूतौ शीरध्वज कुशध्वजौ ॥
लोक प्रशंशिता साहि श्रीजानक्या पितामही ॥७१॥

उन शुभाजया जी के गर्भ से श्री शीरध्वज व कुशध्वज उत्पन्न हुए जो लोक प्रशंसित हैं। वह श्री जानकी जी की पिता मही (दादी) हुई ॥७१॥

परश्चैको वारधानो नाम्ना महोदधे स्तटे ॥
नाम्नातु विश्वकायोस्ति राजा राजकुलोत्तमः ॥७२॥

और एक समुद्र के किनारे वारधान नाम की नगरी में विश्वकाय नामक राजा राजकुल में सर्व श्रेष्ठ हुए ॥७२॥

तेनापि हर्षरोम्णे वै दत्तं पुत्री द्वय स्स्वयम् ॥
नाम्नैका सर्वदा चैका सदा सत्यव्रते उभे ॥७३॥

उनने भी हर्षरोम जी के लिए अपनी दो कन्याओं को स्वयं दिया। एक का नाम सर्वदा और एक का नाम सदा है जो दोनों कन्याये हमेशा सत्य और व्रत में सावधान रहती हैं ॥७३॥

तयोस्तस्य समं जाता वेद वेद मिताः सुताः ॥
बभूवुरद्वैक वीरास्ते गुण रूप विभूषिताः ॥७४॥

उन दोनों पत्नियों से महाराज रोमहर्ष जी के चार २ पुत्र उत्पन्न हुए। वे सब के सब अद्वितीय पराक्रमी दिव्य गुण रूप भूषित थे ॥७४॥

तथैकैकापि पुत्री च जाता रूप गुणान्विता ॥
तयो रूपयम स्तेन कृतः स्वयम्वरेण च ॥७५॥

तथा एक २ कन्या भी उत्पन्न हुईं जो दिव्य गुण रूपवती थीं उनका बिवाह महाराज हर्षरोम जी ने स्वयम्बर के द्वारा किया ॥७५॥

यत्पृष्टं नृपजे त्वया जनकजा रामान्वये वार्गीणां ॥
नामान्येव सतां समस्त सुकृतैं हित्वा तु मायामयम् ॥७६॥

हे राजकन्ये ! तुम ने श्री जानकी जी राम जी के दोनों बंशों के विषयमें जो कुछ पूछा था—मायामय संसार को त्याग करके भजन करने वाले संतों के समस्त पुण्यों के द्वारा प्राप्त हुए इन नामों को ॥७६॥

सम्बन्धेनिरमायके स्थितवतां ज्ञानेन भक्त्या वधौ ॥
तत्सर्वं मिथुनेन पूर्व परयो रुक्तं हि चाग्रे वद ॥७७॥

जो मायारहित भगवत सम्बन्ध में स्थिर रहने वाले ज्ञान और भक्ति की अवधि में प्राप्त कर सकते हैं उन, जुगल सरकार के वंश चारित्रों को पूर्वा पर दृष्टि से देखकर मैंने कहा। अब आगे क्या कहूँ, बताओ ॥७७॥

इति श्री शङ्कर कृते श्री अमर रामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
श्री सीतारामयोमातृ पितृ वन्शकथनोनाम
दशमस्सर्गः ॥१०॥

इति श्री मधुकररूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्री सीताराम मातृ-पितृ-वंश कथनो नाम दशम सर्गः ॥

राजकुमार्य्यूवाच

अद्य प्रोद्यत वैभवस्य मिथिला नाथस्य प्राथम्यका ।
नित्याश्चित्त विशुद्ध कार्य्यनिपुणाः सेवा रताः सेवकाः ॥
राज्ञी वर्ग प्रवर्त्तकाश्च चतुर प्रज्ञा स्यू सेवान्वया ।
दास्योदिव्य तमा अमात्य सुकरा एतद्धि नाम्ना वद ॥१॥

सुकान्ति बोली कि हे योगमुद्रे ! अब अत्यन्त बढ़े हुए ऐश्वर्य वाले महाराज मिथिलेश जी के नित्य विशुद्ध चित्त से काम करने में निपुण, सेवा करने में आसक्त ऐसे जो प्रधान सेवक हैं तथा उनकी महारानियों के अग्रचतुरी, सेवा विधान की सम्हाल करने वाली जो दिव्य दासियाँ हैं तथा महाराज के कार्य को सुन्दर तरह से सम्हाल ने वाले मन्त्री वर्गों के नामों को भी कहो ॥१॥

योगमुद्रोवाच

ये पूर्वैः कृत सुक्रियो दय फलै लब्धात्मभावा न्वयाः ।
सीताराम कुटुम्ब कोटि निवहे नित्यानुरागान्विते ॥
तेस्यु र्विष्णु महेश ब्रह्म मुनिभि र्देवैश्च वन्द्यांघ्रय ॥
स्तस्मि न्तेपि नृपात्मजे भवति यद्भावोसिधन्या परा ॥२॥

श्री योगमुद्रा बोलीं—कि जो पूर्व जन्म के सुन्दर पुण्यमयी आत्म भावनाओं से सिद्ध हुए फल स्वरूप श्री सीताराम जी के करोड़ों कुटुम्ब समूह में नित्य अनुराग वाले हैं वे ब्रह्मा, विष्णु महेश, मुनि व देवताओं से वन्दित चरण वाले हैं, इस कुटुम्ब में हे राजकन्यके ! तुम्हारा भी सम्बन्ध होगा अतः इस कुटुम्बमें भाव रखने वाली आप परम धन्य हैं ॥२॥

गुणालयो गुणज्ञोपि गुणधीश्च गुणायतः ॥
पतद्ग्रहं गृहीत्वाच पानपात्रश्च तिष्ठति ॥३॥

गुणालय, गुणज्ञ, गुणधी, गुणायत—ये चार महाराज मिथिलेश की पीक दानी और पान-पात्र को लेकर सेवा में समीप रहने वाले हैं ॥३॥

सभायां मिथिलेशस्य समीपे देव नन्दनौ ॥
ताम्बूल दानं द्वावेतौ गृहीत्वातिष्ठन्तः सदा ॥४॥

देव और नन्दन मिथिलेश महाराज जी के पानडब्बों को लेकर सभा में हमेशा समीप रहते हैं ॥४॥

शुभक शोभका वेतौ मुख प्रोञ्छन वस्त्रकम् ॥
मौलिको मालक श्चैव गुणानीकौ तु चामरम् ॥५॥

शुभक, शोभक—ये दो मुख पोंछने का अँगोछा लेकर तथा मौलिक और मालक—ये दो गोल चवँर लेकर समीप रहते हैं ॥५॥

गृहीत्वा स्वांत पत्रञ्च तिष्ठन्ति भूषिताङ्गकाः ॥
मोदको मुदका वेतौ व्यजनेनोपचारकौ ॥६॥

और गुण व अनीक ये दो जने सुन्दर भूषित अङ्ग वाले छत्र को लेकर खड़े रहते हैं। मोदक और मुदक पंखा लेकर हवा करते हैं ॥६॥

मुगदो मेघनो धानी धावको धरकस्तथा ॥
एतेत्वादान सन्दानं कुर्वन्ति वस्त्र भूषणैः ॥७॥

मुगद, मेघन, धानी, धावक धरक—ये पाँच वस्त्रभूषणों का खोलने, पहिनाने लेने और देने का काम करते हैं ॥७॥

मेधको गुडकश्चैतौ ब्रह्मादि वन्दितैपदे ॥
जानकी जनकस्यैव योजयन्तश्च पादुकाम् ॥८॥

मेधक, गुडक ये दो जने ब्रह्मादिक देवताओं से वन्दित चरण वाली श्री जानकी के पिता के चरण पादुकाओं को खोलने व पहिनाने वाले हैं ॥८॥

वादिक विन्दका वेतौ वार्तानां स्मारकौ यथा ॥
मनीष मुखरा वेतौ दर्शकौ समयस्य च ॥९॥

बादिक और बिन्दक—ये दो जने महाराज को हर एक बात को स्मरण दिलाने वाले हैं। मनीष और मुरवर— ये दो जने समय बताने वाले हैं ॥९॥

प्रवीण प्रवणा वेतौ सदैव श्नान कारकौ ॥
तथैवाभ्यञ्जनं राज्ञः करोति नामशैलकः ॥१०॥

प्रवीण और प्रवण—ये दो जने महाराज को हमेशा स्नान कराने वाले हैं। शैलक, महाराज को हमेशा अञ्जन लगाने की सेवा करते हैं ॥१०॥

चारुक वानिका वेतौ पूजा साहित्य विस्तरम् ॥
देव गेहे सञ्चयतः पूर्व श्नात्वा स्वयं यथा ॥११॥

चारुक और वानिक—ये दो जने महाराज की तरह से नित्य स्नान आदिक करके देव मन्दिर में पूजा-सामग्री को तैयार करने वाले हैं ॥११॥

सुधोदनः सुधा श्राविः द्वौ मुख्यौ सूपकारकौ ॥
भोजनं कुर्वतो राज्ञः सान्निध्यश्चोप तिष्ठतः ॥१२॥

सुधोदन और सुधाश्रावि—ये दो जने महाराज के रसोइयों में मुख्य भोजन करते समय समीप में रहने वाले हैं ॥१२॥

धौतं कौशेयकं दिव्य माशनं पूर्व मुत्तरे ॥
भोजनस्य ददात्येव मनोज्ञो नाम सेवकः ॥१३॥

मनोज्ञ नाम का सेवक भोजन के लिए धुला हुआ दिव्य रेशमी आसन को पूर्व उत्तर (ईशान) को ओर मुख करके आसन बिछाने वाला ॥१३॥

सालीक मनिका वेतौ शय्या सन्धान कारकौ ॥
तस्यागारस्य द्वारस्थौ हारीक हेमका वुभौ ॥१४॥

सालीक और मनिक—ये दो जने शयन के लिये पर्यङ्क बिछाने वाले हैं। हारीक और हेमक—ये दो जने शयन कुञ्ज के द्वारपाल हैं ॥१४॥

काञ्चीक नानुका वेतौ मुखप्रच्छालनं तथा ॥
उपाशनं कारयतो मध्यान्ह शयनोत्तरम् ॥१५॥

काञ्चीक व नानुक—ये दो सेवक मुख प्रक्षालन करने वाले मध्यान्ह शयन के बाद महाराज के जागने की प्रतिक्षा करते रहते हैं ॥१५॥

श्वसुरो रामचन्द्रस्य सीताया जनको महान् ॥
तस्याङ्ग सेवका नित्याः सच्चिद्रूपा नृपात्मजे ॥१६॥

इस प्रकार श्री रामचन्द्र जी के ससुर अर्थात् श्री सीता जी के पिता महात्मा श्री मिथिलेश जी के सच्चिदानन्द स्वरूप नित्य अङ्ग सेवा करने वाले सेवकों को वर्णन किया ॥१६॥

ध्यातुं ज्ञातुं सदा योग्याध्येया श्चापिमहर्षिभिः ॥
सीतारामो पासकानां तत्सम्वन्धे स्पृहावताम् ॥१७॥

इन सेवकों का यथार्थ ज्ञान, नित्यध्यान करना श्री सीताराम उपाशक महात्माओं को योग्य है जिससे उन सेवकों का सम्बन्ध प्राप्त हो सके ॥१७॥

तथा शुभागा सुचिशील युक्ता सीता सुभाग्या जननी सुनेत्रा ॥
तस्याः सुसख्यः परिशील दत्ता वक्ष्यामि सेवामपि नाम तासां ॥१८॥

अब इसी प्रकार सुन्दर भाग्यवती, महान् पवित्र सुन्दर अङ्ग वाली श्री सीता जी की माता श्री सुनयना जी की सखियों व उनकी सेवा का वर्णन करती हूँ जो सेवा में बड़ी सावधान हैं ॥१८॥

सार्क विवाहे भवनात्पितुर्य्याः स्वम्या सुप्रीत्या गुण रूप युक्ताः ॥
दत्ता जनन्यापरि शीलनाय सख्योपि दास्यो पि समानशीलाः ॥१९॥

बहुत सी सखियाँ और दासियाँ तो महारानी जी के समान शील प्रेम, गुण रूप वाली विवाह के समय पिता के घर से कन्या की सेवा के लिए माता ने दी हैं ॥१९॥

अत्रापि पत्यु र्भवना गतायां श्वश्रू नि युक्तानिपुणा हि सख्यः ॥
दिव्याम्वरा भूषण सञ्जनाय चातुर्य्य शिक्षादि परीक्षणाय ॥२०॥

और बहुत सी पतिके घर में आने पर सासुने भी दिव्य वस्त्र भूषण सजाने में बड़ी चतुरी, शिक्षा देकर परीक्षा में पास की हुई सखियों का दिया है ॥२०॥

एवं तु पक्षद्वय सन्निधाने नामानि वक्ष्यामि समग्रकानाम् ॥
सामान्य पंक्तौ तु विदेहकानां शेषोपि संख्या न चिरं समेति ॥२१॥

इस प्रकार दोनों पक्षों की सखियों और दासियों के नाम व सेवाओं का साधारण रूप से वर्णन करती हूँ। यथार्थ रूप से तो शेष जी भी बहुत काल तक पूर्ण वर्णन करने में समर्थ नहीं हैं ॥२१॥

साकं तया पितु र्गेहा त्सख्यो दास्योपि कोटिशः ॥
आगता रूप शालिन्यो नव यौवन भूषिताः ॥२२॥

करोड़ों दासियाँ व सखियाँ तो पिता के घर से महारानी जी के साथ आयी है जो बड़ी रूप यौवन शालिनी सुन्दर भूषिता हैं ॥२२॥

विद्यावन्त्यः कला भिज्ञाः सदृशा राज कन्यया ॥
मुख्यास्तासां हि सर्वासां बह्रद्धय मतिप्रभाः ॥२३॥

महारानी जी के सदृश विद्यावती, कला पण्डिता उन करोड़ों मे से मुख्याओं में से भी मुख्या अत्यन्त प्रभाव शालिनी सोलह सखी प्रधान हैं ॥२३॥

तासांश्चैवाति द्वे मुख्ये सा कलैका कलाधुराः ॥
द्वितीया हि विजानीहि श्रद्धा शीले नरेन्द्रजे ॥२४॥

उन सोलहों में भी दो मुख्य हैं। हे श्रद्धावती राजकन्यके ! इन दोनों में एक का नाम कला और दूसरी का नाम कलाधुरा है— ऐसा जानो ॥२४॥

अन्या मुनि द्वयो र्मानाः स्तयो वंश्याः सुभा स्यकाः ॥
तासां नामानि वक्ष्यामि दक्षानां लक्ष सेवया ॥२५॥

अन्य जो चौदह हैं वे चन्द्रमुखीं उन दोनों के अधीन हैं। लाखों प्रकार की सेवा करने में कुशला इन चौदहों का भी नाम मैं तुमको बताती हुँ॥२५॥

प्रज्ञी विद्या च वागीशा धन्या विद्यापि वैनुता ॥
सीमा चैवेति सप्तस्युः सा कला मनु संश्रयाः। २६॥

प्रज्ञी, विज्ञा, वागीशा, धन्या, विद्या, बैनुता, सीमा ये सात श्री कला जी की अनुगामिनी हैं ॥२६॥

तथा कलाधुरायास्तु जीवा जानी प्रभा जिता ॥
वभ्रा भ्राजा विजृभीयाः युक्ताः सप्त गुणाधिकाः ॥२७॥

जीबा, जानो, प्रभा जिता, वभ्रा, भ्राजा, विजृभी—ये सात गुणों में बढ़ी चढ़ी श्री कलाधुरा जी की अनुगामिनी हैं। २७॥

अथ पत्युः पक्षके चानवद्य लक्ष्य के हि द्वे ॥
परार्द्धोर्द्धा सुमुख्ये च गुणतो रूप तोद्धं गे ॥२८॥

अब पति पक्ष की सखियों में अनवद्य और लक्ष्मका—ये दो मुख्य हैं जो परार्द्ध से ऊर्ध्व (अधिक) अर्थात अनन्त सखियों में मुख्य हैं और गुण रूप में चढ़ी बढ़ी सर्व श्रेष्ठ हैं ॥२८॥

तदानुगाः क्रमेणैव ज्ञातव्या महिपात्मजे ॥
शिक्षशान्ती कला काव्या कान्ति दीक्षा च दक्षिका ॥२६॥

हे राजकन्यके ! इन दोनों मुख्यों की अनुचरियों का भी नाम जानना चाहिए—शिक्षा, शान्ति, कला, काव्या कान्ति, दीक्षा, दाक्षिका—ये सात श्री अनवद्य जी की अनुचरी हैं ॥२६॥

अथ रूपा सुखा श्यामा गद्या पद्या प्रभासिका ॥
विलासया समा सप्त गरीयस्यो गुणै रिमाः ॥३०॥

और रूपा, सुखा, श्यामा, गद्या पद्या प्रभासिका, विलासया—ये सात उत्तम गुणवतियों में भी उत्तम बढ़ी चढ़ी श्री लक्ष्मका जी की अनुचरी हैं। ये सात २ करके चौदह और दो मुख्य सहित ये सोलह अनन्त प्रधान यूथे स्वरियों में मुख्यों में मुख्य हैं ॥३०॥

उद्वर्तनं तथा स्नानं दन्त मज्जन पूर्वकम् ॥
भूषणांशुक सौगन्ध्यं ह्यङ्ग रागाङ्ग भक्तिकाः ॥३१॥

ये सब सखियाँ श्री महारानी सुनयना जी की सेवा में दन्तमज्जन उबटन, स्नान, भूषण, वस्त्र, सुगन्धि, अङ्गराग लेपन आदि सेवा बड़े अनुराग से करती हैं ॥३१॥

शय्यादि परि स्यन्दोपि पुष्प माल्यादि ग्रन्थनम् ॥
एला कर्पूर मिश्राश्च वीटिकानां प्रदानकम् ॥३२॥

पुष्पों के पर्यङ्क शय्यादिकों की रचना और फूलों की मालाओं की रचना तथा इलाइची, कपूर आदिक मिश्रित सुन्दर पान के बीराओं की रचना करके पवाना ॥३२॥

वद्यानां वादनं रुच्यं गानं तालादि भेदतः ॥
मान शिक्षो पनयन क्रिया कोकादि पाठनम् ॥३३॥

उत्तम रुचिकर बाजाओं का बजाना, तालादिक भेद से सुन्दर गाना, पति के साथ बिलास में मान आदि की शिक्षा देना, कटाक्ष आदि लीला विलास कोक शास्त्र की शिक्षा देना। ३३॥

विहारदर्शनं दिव्यं वाटिकादि सहोद्गमम् ॥
निदाघ प्राविडा दीनां यद्यत्तत्रानुमोदनम् ।।३४॥

दिव्य विहार वाटिकादिकों क दर्शन में साथ चलना, गर्मी, वर्षादिक ऋतु बिलासों में भी महारानी जी को प्रसन्न करना ॥३४॥

प्रस्ताव रचना वार्ता चतुर्य्येण प्रहेलिकाः ॥
इत्यादि तु सखीनां च कर्त्तु काय्र्याणि सर्वदा ॥३५॥

लीला के प्रस्तावों रचना तथा बात चातुरी, प्रहेलिकादिकों की रचना करना इत्यादि सखियों के करने योग्य कार्यों में सदा सावधान होकर ॥३५।

अधिकार विभागैश्च मुख्याभिः स्थापिता यथा ।
तां श्रयन्ति तथा चान्याः स्वस्याः स्वस्याहि विद्यया ॥३६॥

अपने २ अधिकार के विभाग पूर्वक अपनी मुख्याओं का अनुशरण करके अपनी अनुचरियों को उचित सेवा में लगाती हैं और अपनी २ विद्याओं के अनुसार अपनी अनुचरियों को साथ लेकर महारानी श्री सुनयना जी की सेवा करती हैं ।।३६॥

युग्मं गाङ्गेय स्फटिकेन्द्र नील हरितै वंशच्छदै विद्रुमैः ।
पीतैः पाटलकै विनिर्मित तटै दुर्गैर्वृता सप्तभिः ॥

रामानन्द विधायिनी जनकजा तस्याः पुरी जन्मनः ।
आशुर्य्या रघुनन्दनस्य मिथिला सद्वैभवा सर्वदा ॥३७॥

गांगेय अर्थात् (स्वर्ण रंग की पीली) मणि, स्फटिक (सफेद) मणि, . इन्द्रनील (श्याम) मणि, हरित मणि, वंशच्छदमणि (कषायमणि), लालमणि, पीतमणि, पाटल (लाल श्वेत मिश्रित रंग की) मणि— इस प्रकार का विधान की विविध रंग की मणियों से रचना किए हुए सात दुर्ग वाली, श्री राम जी के लिए आनन्द का विधान करने वाली, श्री जानकी जी की जन्मभूमि, हमेशा महान् वैभव से युक्त, श्री रघुनन्दन जी की ससुराल जो मिथिला नगरी है ॥३७॥

तैः सप्तावरकै र्घृतोच्च शिखरा प्रासाद पंक्तिः ॥
परा रत्न स्तम्भ विजृम्भिता मणिगणैः सत्तोरणोच्च ध्वजा ॥
तस्या द्वार सहस्रकेषु निपुणा द्वास्था विदेहाधिपै ।
युक्ताहेतुभि रन्तरे विरलशाः तिष्ठन्ति सद्भूषणाः ॥३८॥

उसके सात आवरण शहर में ऊँचे २ शिखर वाली उत्तम महलों की पंक्तियाँ हैं जिन महलों में उत्तम रत्नों के खम्भ और ऊँचे मणियों के ध्वजा, पताका तोरण सजी हैं ऐसे महलों वाली नगरी में हजारों फाटकों पर श्री मिथिलेश महाराज से नियुक्त चतुर द्वारपाल पहरे में अपने आयुधों को कसे हुए खड़े हुए जो सुन्दर भूषणों से सजे हुए, आलस्य को त्याग करके हृदय से मालिक पर स्नेह रखकर पहरा करते हैं ॥३८॥

राज्ञीनां सत विस्तरोत्तमगृहाः कक्षान्तरा कल्पका ।
वस्तूनाञ्च प्रभेदका मणिमयाः सद्रक्षकै रंचिताः ॥
तत्रान्तः पुर द्वार रक्षक जना तिष्ठंन्ति ते भिन्नकाः ।
पूर्वोक्तास्तु वहिःस्थका अभिमता मुख्या द्विधा तच्छृणु ॥३९॥

हे सुकान्ति ! श्री सुनयनादिक महारानियों के सैकड़ों प्रकार के उत्तम बिस्तर जिनमें बिछे हुए हैं ऐसे कई आवरण वाले महलों में विविध प्रकार के भेद वाले मणि रचित खिलौनादिक की रचना की हुई वस्तुएँ जिनमें भरी पड़ी हैं और जिन महलों में सुन्दर स्वभाव वाले द्वार पाल रक्षा कर रहे हैं ऐसे महलों के प्रधान अन्तः पुर स्थान में रक्षा करने वाले जो सेवक हैं वे भिन्न हैं और पहले जिन सेवकों का नाम बताया था वे बाहरी भाग के रक्षक हैं इस प्रकार महारानियों को अभिमत दो प्रकार के सेवकों का नाम मुझ से सुनो ३९॥

द्वाराणि सप्त कक्षाना म्वाह्यानाम्मास्वराणिच ॥
पूर्व दक्षिण पश्चिमोत्तरा सन्ति सन्मितानिवै ॥४०॥

प्रत्येक महल सात आवरण वाला है । प्रत्येक आवरण के प्रकाशमान जो महल हैं उनके चारों दिशाओं में फाटक हैं उन फाटकों के बाहरी तरफ में ॥४०॥

वेद वेद मिता स्तत्र द्वास्थास्सन्ति नृपात्मजे ॥
मुख्या स्तेषा श्चापि मुख्या श्चस्वारोहिदिशंप्रति ॥४१॥

एक २ कोना पर चार २ द्वारपाल फाटकों की रक्षा करते हैं। इस प्रकार प्रत्येक फाटक के चारों कोनाओं पर सोलह-द्वारपाल एक महलके होते हैं इस तरह आवरणके प्रत्येक दिशाओं के महलों में जितने भी द्वारपाल हैं उन समस्त द्वारपालों के चार चार मुखिया प्रत्येक दिशाओं में हैं ॥४१॥

एवं तु पोडशोन्माना स्सुरेन्द्र शत वैभवा: ॥
शीरध्वज महाराज्ञ स्तेस्युः प्रासाद द्वास्थकाः ॥४२॥

इस प्रकार एक आवरण के चारों दिशाओं के सोलह मुखिया होते हैं और प्रत्येक मुखिया सौ इन्द्र के बराबर वैभव वाला है। इस प्रकार के ऐश्वर्यमान द्वार पाल महाराज श्री शीरध्वज जी के प्रत्येक महलों के हर आवरणों में बहुत हैं ॥४२॥

धार्मिकश्च धरा धीर: प्रज्ञकः प्राज्ञक स्तथा ॥
चत्वारः पूर्वद्वाराणां द्वास्थाना म्प्रेरका इमे ॥४३॥
शीलकः प्रकरः प्राशी नवानीक स्तथैवच ॥
चत्वारो दक्षिण द्वार द्वास्थाना मधिकारिणः ॥४४॥

अब राज महल के पूर्व द्वार पर धार्मिक, धराधीर, प्रज्ञक प्राज्ञक, ये चार उन सब द्वार पालों के मुखियों के मुख्य हैं जो सब द्वार पालों के उच्च अधिकारियों को प्रेरणा करने वाले हैं। इसी प्रकार राज महल के दक्षिण द्वार पर शीलक, प्रकर, प्रसी, नवानीक—ये चार सब द्वार पालों के उच्चाधिकारियों के मुखिया हैं ॥४३॥४४॥

भाद्रको भद्रको भाव्यो भानु स्त्रक इमे शुभाः ॥
पश्चिम द्वार द्वास्थानां चत्वारो पि महात्मनः ॥४५॥

इसी प्रकार पश्चिम द्वार के भाद्रक, भद्रक, भाव्य, भानुश्रक—ये चार महात्मा सब द्वारपालों के उच्चाधिकारियों के भी उच्चाधिकारी हैं ॥४५॥

गणाग्र्या श्चोत्तरीया स्तु वलायत वलोत्तरौ ॥
घना घनो दूवला वेते जानीहि महिपात्मजे ॥४६॥

इसी प्रकार उत्तर द्वार के भी बलायत, बलोत्तर घनाघन, दद्बला—ये चार सब द्वार पालोंके अफसरों के अफसर हैं। हे राजकन्यके! यह तो महाराज श्री शीरध्वज जी के राजमहल का वर्णन हुआ ॥४६॥

राज्ञोप्यष्टौ शता न्येव रूप शीला गुणायताः ।
राज्ञः शीरध्वज स्यैव तासां गेहान्तराणि च ॥४७॥

महाराज श्री शीरध्वज जी के रूप गुण शील में चढ़ी बढ़ी एक सौ आठ रानी हैं उन सबके अलग अलग प्रत्येक महलों में ॥४७॥

द्वास्था वर्ष्म वरा स्तत्र कुब्जका अपि सम्मिताः ॥
जानक्या जननी ज्येष्ठा तस्याः प्रासाद दूवारिकाः ॥४८॥

सुन्दर सरीर वाले तथा कूबड़ शरीर वाले द्वार रक्षक दास पहरा करते हैं श्री जानकी जी की माता सब रानियों में ज्येष्ठा प्रधान पटरानी श्री सुनयना अम्बा जी के महल के द्वार रक्षक दास ॥४८॥

कुब्जा वर्ष्म वरा एव भूषिताश्च सहस्रशः ॥
तेषाश्चै वाग्रमाणास्तु स्युः षड़भि रधिका दशः ॥४६॥

हजारों की संख्या में कोई कुबड़ कोई सुन्दर शरीर वाले, इस प्रकार सुन्दर वस्त्र भूषणों से भूषित हैं उन सबके मुख्यों के मुख्य हैं ॥४६॥

पुनीत दर्शना रसवें लालिता जानकीं तुयैः ॥
थाला खेलोपकरणै स्तेषां नामानि मेभृणु ॥५०॥

जो श्री जानकी जी से लाड़ प्यार करने वाले अत्यन्त पवित्र दर्शन करने वाले हैं। सुन्दर खिलौनादि उपकरणों से खिलाते हैं उन सोलहों का नाम मुझसे सुनो ॥५०॥

वरीक वरणो वन्दी विशल्यो वदर स्तथा ॥
अमोघा धुर वश्चैव धुन्धुकेशेन सं युताः ॥५१॥

बरीक, वरण, बन्दी विसल्य, बदर, अमोघा, ध्रुव, धुन्धुकेस ॥५१॥

अष्टा विमे कुब्जकास्तु सहस्राणा म्महत्तराः॥
वर्ष्म वरा स्तु सञ्जीन केयूर मेखला भिधाः ॥५२॥

ये आठ हजारों कूबड़ों के ऊपर मुख्य हैं अब सुन्दर शरीर वाले द्वारपालों के मुख्य-संजीन, केयूर, मेखला, ॥५२॥

माल्यकोमुकुट श्चैव कर्णिको माणिको पि च ॥
सहिता मेदुरेणैव ज्ञायतां वशु संख्यया ॥५३॥

माल्यक मुकुट, कर्णिक माणिक, मेदुर—ये आठ हैं। ५३॥

तस्या स्त त्संख्यया मात्या तेषां नामान्यपि भृणु ॥
सुमाली विदन श्चैव वन्धुरः प्रवरः प्रधीः ॥५४॥

अब महारानी श्री सुनयना जी के आठ मन्त्री हैं उनके भी नाम तुम मुझ से सुनो—सुमाली बिदन, बन्धुर प्रवर, प्रधी ॥५४॥

अंशुमान कुमुदः श्रम्वी राज्ञीनां सचिवा इमे॥
शीरध्वजमहाराज्ञस्त स्यैव सचिवातथा ॥५५॥

अंशुमान, मकुद, श्रम्वी—हैं। अब महाराज श्री शीरध्वज जी के मन्त्रियों के नाम सुनो ॥५५॥

जय मानस्सुनीतश्च सुमत स्सन्धिवेदनः ॥
सुदामापि विधज्ञश्च विष्वक्सेन सुदर्शनौ ॥५६॥

जयमान सुनीत, सुमत, सन्धि वेदन, सुदामा, विधज्ञ, बिष्वक्सेन सुदर्शन ॥५६॥

अष्टाविमे महामात्रा राज्य सन्धान सम्मताः ॥
रसोन्मानाश्च शेनान्यः परार्द्धावधि शैन्यकाः ॥५७॥

ये आठ महाराज के राज्य पालन बिधि में सम्मत महा मन्त्री हैं। असंख्य सेनाके सेनापतियों में मुख्य हैं ॥५७॥

तेषां मुख्या हि मुख्यानां तेषाम्मुख्या अवेहि तान् ॥
नामान्येषाम्महावाहुर्धर्म्मयुद्धश्च क्रन्दनः ॥५८॥

इन मुख्यों के भी मुख्यों के नाम क्रम से सुनो—महाबाहु, धर्मयुद्ध तथा क्रन्दन ॥५८॥

तीव्र रथ स्तीव्र खड्ग श्चारुणा क्षेण सम्मिताः ॥
सर्वे नित्य दिव्य रूपा दिव्य सद्गुण सयुताः॥५९॥

तीव्र रथ, तीव्र खड्ग, अरुणाक्ष है। ये सब के सब दिव्य रूप, दिव्य सद्गुण, नित्य दिव्य स्वरूप हैं ॥५९॥

अथ प्रजानां मिथिलाधिपस्य नामानि पुण्यानि नृपात्मजेऽद्य ॥
कलावता मन्वय सेवकानां शृणुष्व व्योकार प्रभृत्तिकानाम् ॥६०॥

हे नृपात्मजे अब मिथिलेश महाराज के प्रजा (जनता) में मुख्यकलाकारों के संरक्षक सेवकों का नाम सुनो जो लुहार सुनारादि नामों से प्रसिद्ध हैं ॥६०॥

महाराजस्य व्योकार स्सुरेन्द्र शत वैभवः ॥
श्रीमन्मिथिला नाथस्य नाम्ना सावसिको महान् ॥६१॥

महाराज मिथिलेश जी का जो लुहार है वह सौ इन्द्रों के समान ऐश्वर्य वाला महान् है जिसका नाम सावसिक है ॥६१॥

अथैवञ्च कलादोपि कुशलो नाम सत्तमः ॥
कुविन्दः कलविङ्क स्स्या न्नाम्ना चैव न्नृपात्मजे ॥६२॥

इसी प्रकार महाराज के महान सुनार का नामकुशल है और जुलाहा का नाम कलविङ्क है जो नाम से ही अपना परिचय दे रहा है ॥६२॥

कुलालो वुधगों नाम रङ्गा जीव स्तु वैसगः ॥
त्वष्टा वरविदो नाम्ना मालाकारो विवोधकः॥६३॥

कुम्हार का नाम बुधग है; चित्रकार का नाम वैसग है और बढ़ई का नाम वरविद है। माली का नाम विवोधक है ॥६३॥

रतनः साधुको नाम रजकस्त्वैव निर्मलः ॥
सस्त्र माज्र्जो तीक्ष्णीको ग्रन्थिकारो गुणाधिकः ॥६४॥

जौहरी (रत्न वाला) का नाम साधुक है और धोवियों में प्रधान का नाम निर्मल है। शस्त्रमार्जकों में श्रेष्ठ का नाम तीक्ष्णक है। पटवा का नाम गुणाधिक है ॥६४॥

काम्बवीको धनी नामा कवचानां तु कारकः॥
त्रणुको नाम विख्यातो मेदुः मुकुर निर्मकः ॥६५॥

मनिहारों में श्रेष्ठ का नाम धनी है और कवचादिकों को बनाने वाले का नाम तृणुक है और दर्पण आदि बनाने वाले का नाम मेदू है ॥६५॥

पादुकारो माठिक स्तथा द्वंशकण्डोलकारकः ॥
नाम्ना वटीक इत्येवं सूची साकीन एवहि ॥६६॥

जूता बनाने वालों में श्रेष्ठ का नाम माठिक है बाँस की करन्डी डालादि बनाने वालों में श्रेष्ठ का नाम बटीक है। इस प्रकार यह मुख्यों का नाम सूचित किया है अर्थात अँगुल्या निर्देश किया है ॥६६॥

एवं प्रजानां मिथिलाधिपस्य नित्यं गृहे कार्य्यवतां गुणैस्तु॥
स्वैः स्वै रसमाराधयता नरेश मुख्यानि नामानि प्रतिष्ठितानाम् ॥६७॥

इस प्रकार मिथिलेश महाराज के घर में नित्य कार्य करने वाले तथा गुणों में प्रधान प्रजा (जनता) के मुख्यों का नाम बताया जिनकी महाराज के दरबार में प्रतिष्ठा है ॥६७॥

पुनः सुश्रद्धां श्रवणे च तस्याः नृपात्मजाया अपि योगमुद्रा ॥
जिज्ञासमानात्क्षणमेकमेवसा तुष्णि भावेन समास्थिताग्रे ॥६८॥

इस प्रकार योगमुद्रा ने सुकान्ती की और भी सुनने की इच्छा को जानने के लिए थोड़ी देर के लिये मौन धारण कर लिया ॥६८॥

कान्तः कृपालू रघुनन्दनो मे सीता नियन्त्री जनकात्मजासीत् ॥
अद्य स्तयो स्ते मुखनिश्रुताया कथैव मे जीवनमस्ति नान्यत् ॥६९॥

श्री सुकान्ति जी बोलीं—हे योगमुद्रे ! मेरे प्रियतम श्री रघुनन्दन जू बड़े कृपालु हैं, मेरी स्वामिनी जनकात्मजा श्री सीता जी मेरे लिए शासन विधान करने वाली हैं इस समय आप के मुख से उन दोनों की कथा रूपी अमृत की धारा ही मेरे जीवन बूटी है और उपाय से अब मैं नहीं जी सकती हूँ ॥६९॥

उक्ता यदैवं विरहार्त्तवत्या सायोगमुद्रा नर राजपुत्र्याः ॥
विज्ञाय वार्ता सुखद श्च तस्याः श्रद्धोत्तमांसापुनरेव चक्रे ॥७०॥

इस प्रकार विरह से वेचैन हुई नरराज कन्या सुकान्ति के अत्यन्त सुखदायी बचनों को जब योगमुद्रा ने सुना तो उसकी उत्तम श्रद्धा को देखकर फिर कथा कहना आरम्भ किया ॥७०॥

इति श्री शङ्कर कृते श्रीअमर रामायणे श्रीसीतारामरत्नमञ्जूषायां
श्रीजनकराज प्रजानाम कथनप्रसङ्गे
एकादश स्सर्गः

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां
श्री जनकराज प्रताप नाम कथन प्रसंगे एकादशः सर्गः ॥

सप्त दुर्गान्तरे योध्या यथा स्या द्रचना वती ॥
राजमन्दिर पर्य्यन्ता तथा तां वर्णयामि ते ॥१॥

अब श्री अयोध्या जी के बाहरी भाग सात आवरण परकोटाओं से लेकर भीतरी भाग राजकोट पर्यन्त मध्य में जो अयोध्या जी का शहर है उसका वर्णन करके मैं तुमको सुनाती हूँ ॥१॥

सप्तावरणे परिखा सप्तैव परिशोभिताः ॥
कूल द्वये रत्न बद्धा वारिजैर्वारि पूरिताः ॥२॥

सात आवरण परकोटाओं के मध्य अन्तरालों में सात ही खाइयाँ भी अतिशोभा सम्पन्न हैं। खाइयों के दोनों किनारे मणिमय घाट हैं और खाई खिले हुए कमलों से भरी हुई अगाध जल वाली हैं ॥२॥

वाटिका पवनै र्युक्ता रत्न कुञ्जो पकण्ठिकाः ॥
गुञ्ज न्मधुव्रत श्रेणी द्विजसंघुष्ट नादिताः ॥३॥

घाट के अतिरिक्त दोनों किनाराओं पर सुन्दर वाटिकायें रत्नों के कुञ्ज (बँगले) उपवन—इन सब से वह खाई इस तरह से शोभित हैं कि जैसे अयोध्या रूपी नारी के कण्ठकी मणिमय सुन्दर कण्ठी बनी हो। जहाँ तहाँ भवँर गूँज रहे हैं; पक्षियों का कल्लोल मचा है। मृग पंक्तियाँ झुण्ड की झुण्ड घूम रही हैं ॥३॥

सर्वे पुर जना स्तत्र विलसन्ति यथा सुखम् ॥
स्वस्मि न्स्वस्मिश्च संघट्टे स्त्रियो वा पुरुषा अपि ॥४॥

इस प्रकार उन खाइयों की अगल बगल की भूमिओं पर अयोध्या नगर की जनता सुख पूर्वक विहार करने के लिए आया जाया करती है जो जनता जिस दिशा के शहर में रहती है उस दिशा के स्त्री पुरुष उसी दिशा के घाटों पर विलास करते हैं ॥४॥

अन्तरे ष्टापदै र्भक्ता चतुष्कोणा वसद्गृहाः ।'
अष्टापदा पणा योध्या मध्य भाग चतुष्पथा ॥५॥

इस प्रकार सातों आवरण परकोटाओं के मध्य श्री अयोध्या भी आठ आवरण का सुन्दर विभाग पूर्वक शहर है। शहर के आवरणों में प्रत्येक महल चार कोना के हैं। इस प्रकार कमल के आकार में बनी हुई अयोध्या नगरी के मध्य भाग से चारों दिशाओं के लिए चार राजमार्ग सीधे चार दिशाओं को गए हैं ॥५॥

गृहाणा श्चतुर श्राश्च मण्डलाकार पंक्तयः ॥
पंक्तीनाञ्च सहस्रेषु वृह चारु चतुष्पथम् ॥६॥

चार कोना वाले महलों की सीधी पंक्तियाँ बाहर के आवरण में कोना २ बाँधकर मण्डाकार होते हैं। इस प्रकार एक प्रकार एक आवरण में बड़ी २ हजारों पंक्तियाँ हैं। प्रत्येक दो पंक्तियों के बीच का जोड़ बड़े बड़े चौराहों से शोभित है। ६॥

मध्ये चतुष्पथ स्यैत स्प्रजानां गोष्टि मण्डपम् ॥
रत्नस्तम्भालिकाभार्ष तोरणध्वज मण्डितम् ।७॥

प्रत्येक चौराहों के बीच में उस आस पास की जनता का एक सभा मण्डप है जो रत्नमयी खम्भों की पंक्तियों से और ध्वजा तोरण कलशादिकों से सुन्दर भूषित प्रकाशमान हैं ॥७॥

वातायन गवाक्षै श्च चतु र्दिक्षु विराजितम् ॥
अट्ट प्रकोष्टकै रुच्चै र्दशितं योजन द्वयात् ॥८॥

और छज्जे, झरोखे चारों दिशाओं में शोभित हैं। ऊँचे छत्तों के कानिस आठ कोस की दूरी से दीख पड़ते हैं ॥८॥

क्रीडन्ति बालका स्तत्र युवानो नृत्यगीतकम् ॥
वृद्धाःशास्त्र प्रसङ्गाश्च जनैः पूरित मण्डपे ॥९॥

उन सभा मण्डपों की छत पर खेलते हुए बालकों तथा युवकों का नृत्य, गीत हुआ करता है। वृद्ध लोग शास्त्र प्रसंगों का बिचार करते हैं इस प्रकार की जनता से वे सब सभा मण्डप भरे रहते हैं ॥९॥

मण्डलं व्याप्य सर्वत्र महोत्सवः प्रतिगृहम् ॥
गायन्ति खेलयन्त्यश्च नार्य्यः सर्वाङ्ग भूषिताः ॥१०॥

शहर के प्रत्येक घर में सर्वाङ्ग भूषिता स्त्रियाये मण्डल बाँध करके गाती खेलती महान् उत्सवों को प्रकट करती हैं ॥१०॥

सीतेतिरामेति समेत्य नाम्ना गायन्ति गीतानि कलस्वरैश्च ॥
अट्ट प्रकोष्टेषु गृहाङ्गणेषु प्रतोलिकायां प्रविशन्ति नार्य्यः ॥११॥

उनके गाते हुए गीतों में सीता और राम ये दोनों नाम और गुण भरे रहते हैं। इस प्रकार गीतों के कोकिल स्वर से कल्लोल मचाती हुई प्रत्येक घरों के अन्दर छत पर, आँगन में, दरवाजों पर छज्जाओं पर आती जाती झुण्ड की झुण्ड नारियाँ शोभित होती हैं ॥११॥

पूर्वेऽथ चोत्तरे पट्टे दक्षिणे पश्चिमे तथा ॥
अष्टापदेह्यापणानां वस्त्वादिभि स्त्रिकं त्रिकम् ॥१२॥

कमलाकार अयोध्या शहर के पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर के बाजारों में प्रत्येक वस्तुओं की तीन २ पक्ति करके लगी रहती हैं ॥१२॥

वस्तु कला द्रविणश्च रसान्न साक संज्ञकम् ॥
वस्त्र भूषण सौगन्ध्यं पयः पशु फलाभिधम् ॥१३॥

बाजार में वस्तु, कला-विद्याएं धन, रस पदार्थ, अन्न, साक वस्त्र, भूषण, सुगन्धित-पदार्थ दूध, पशुएं, फल ॥१३॥

पूर्वादिष्वत्रपट्टेषु ह्यापणानां त्रिक श्चयत् ॥
त्रिकेष्येकैक द्रव्यस्य भिन्नास्त्वष्टा पदापणाः ॥१४॥

ये सब वस्तुएं प्रत्येक दिशाओं में बाजारों की तीन २ पक्तियाँ हैं। तीन पंक्ति वाले बाजारों में भी प्रत्येक बाजर में एक २ वस्तु की तीन २ पंक्तियाँ अलग २ हैं। इस प्रकार हर एक बाजार चौपड़ खेलने के सारी पट के सदृश आकार वाले हैं। १४।

अत्र चाष्टापदाकारे कोणगृह मनोहरे ॥
वापिका वाटिका शाला सुखाय व्यवशायिनाम् ॥१५॥

प्रत्येक बाजारों में स्वर्णादिक प्रत्येक रत्नों की तीन २ पंक्तियाँ हैं। इस प्रकार सारो पट के आकारों में बने हुए बाजारों के कोने २ पर एक एक कोंण घर बड़े मनोहर हैं जिन महलों में वावड़ी, बगीचा, रहने के महल, व्यापारियों के सुख के लिये बने हुए हैं ॥१५॥

ताम्बूलिका: कान्दविका स्तथा सिद्धान्न संग्रहा: ॥
एषां हट्टा स्सन्ति चात्र जनागन्तुक हेतवे ॥१६॥

इन महलों में पान की दुकान और हलवाइयों की दुकान बनी हुई हैं तथा सिद्ध अन्नों का संग्रह पर्याप्त है जो आगन्तुक जनता इन बाजारों में आती है उन सबके लिए इन महलों में बड़ा सुपास है ॥१६॥

आपणा द्वादश ख्याता ह्येकैक मण्डले यथा ॥
स्वर्णमय्यां त्वयोध्यायां भ्राजन्ते रुचि राजिभि: ॥१७॥

एक २ मण्डल के अन्दर बारह २ बाजार तीन २ पंक्ति करके शोभित। इस प्रकार के बाजारों से युक्त उन मण्डलों की पंक्तियाँ स्वर्णमयी अयोध्या जी के भीतर अपनी शोभा से अति प्रकाशमान हो रही हैं ॥१७॥

मध्येचतुष्पथ स्यात्र हट्ट संघट्ट के शुभा ॥
वाग्व्यवशायिनः सर्वे राजन्ते परिणत्य च ॥१८॥

प्रत्येक पंक्तियों के मध्य चौराहों पर जो सुन्दर महल बने हैं उनमें बनिया और ग्राहक के बीच की बात करने वाले (दलाल) प्रत्येक व्यापार के अलग २ इकट्ठे हैं ॥१८॥

द्वयो द्वयो रन्तरे तु मण्डलानां समन्ततः ॥
निवासाया गन्तुकानां गृहाः सन्ति विभागतः ॥१६॥

दो २ मण्डल के बीच में बाहर से आगन्तुक जनता के रहने के लिए विभाग पूर्वक अलग २ महल शहर के चारों तरफ से बने हुए हैं ॥१६॥

सर्व दुर्गान्तरे प्येयं मण्डलानि गृहापणै: ॥
उच्चध्वज पताकाभिः कलशैः शोभितानि च ॥२०॥

इस प्रकार के मण्डल और महल शहर के हर एक आवरणों में इसी तरह बने हुए हैं जो मण्डल और महल ऊँचा २ ध्वजा, पताका, कलशादिकों से अति शोभित हैं ॥२०॥

यदुक्तं मण्डल श्चैकं दुर्गेष्वत्र बहूनिच ॥
चन्द्र भद्रादि संज्ञानि त्वदस्या द्धद्र मण्डलम् ॥२१॥

इस प्रकार एक मण्डल जिस प्रकार वर्णन किया गया है, उस प्रकार के मण्डल प्रत्येक आवरणों में बहुत हैं। हर एक मण्डलों का नाम चन्द्र, भद्र, भद्र मण्डल आदि प्रकार से अलग २ नाम हैं ॥२१॥

इति श्री शङ्कर कृते श्रीअमर रामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
श्री अयोध्या ख्याने नाम द्वादस स्सर्गः ॥१२॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्री अयोध्याख्याने
नाम द्वादशः सर्गः

रहस्यं स्त्री पुरुषाणां पाकार्थं भोजनार्थकम् ॥
वस्त्वागारं दैवतञ्च क्रीडार्थं वाटिकादिकम् ॥१॥

स्त्री पुरुषों का विलासस्थान, भोजन शाला, रसोई घर और खजाना, वस्तुओं के रखने का कोठार, देवताओं का मन्दिर खेलने का मैदान, वन उपवन वाटिका आदि ॥१॥

सर्वाधिकारकं स्थान श्चैवं षडभागसम्भृताम् ॥
सन्ति गृहा ग्रहस्थाना मयोध्यायां सनातनाः ॥२॥

सभा स्थान-इन सब प्रकार के अङ्गों से पूर्ण षट ऐश्वर्य भरे महल सनातन श्री अयोध्या नगरी के नागरिकों के हैं ॥२॥

ते रत्न मणि मुक्ताभिः खचिता मण्डलाश्रयाः ॥
मण्डलान्तर मावासाः प्रसिद्धाः वर्ण संश्रयैः ॥३॥

वे सब प्रत्येक महल चारों तरफ से मंडलाकार रत्न, मणि, मुक्ताओं से खचित, प्रत्येक अङ्गों के नामों से प्रसिद्ध निवास हैं ॥३॥

आवासान्तर संघट्टैं र्गृहं कस्यापि लभ्यते ॥
प्रेप्सनः प्रच्छया तत्र सघट्ट वृद्ध संज्ञयाः ॥४॥

विशाल अन्तर वाले महलों के एक २ समूह हैं और किसी का भी महल अकेला नहीं है। पहिले से परस्पर प्रेम की सघनता से इकट्ठा हुआ जो महलों का समूह है उसका नाम वृद्ध संघट्ट है ॥४॥

आपणैर्मण्डला गारैं रष्टापदविभक्तिका ॥
रचिताष्टापदैनैवायोध्या त्वष्टापदा स्मृता ॥५॥

इस प्रकार वृद्ध संघट्ट के चारों तरफ मंडलाकार होकर बाजार बने हैं जिनका चित्र सारी पट के आकार पर बना है इस प्रकार के महल और बाजारों से सजी हुई अयोध्या नगरी स्वर्णमयी, कमलाकार, अष्टसिद्धमयी, अष्टकोण जन्त्राकार रूप से स्मरण की जाती है ॥५॥

अष्टौ च सिद्धय स्तासामयोध्या निश्चलम्पदम् ॥
तेन ह्यष्टापदा प्रोक्ता सच्चिदानन्द रूपिणी ॥६॥

ये अष्ट सिद्धियाँ अणिमा, महिमा, गरिमा, लघिमा, प्राप्ति, प्राकाम्य, विसित्य वशित्य अयोध्या जी में निश्चल (स्थिर) पद वाले हैं इसी से सच्चिदानन्दस्वरूपिणी श्री अयोध्या जी को अष्टापदा नाम से कहा जाता है ॥६॥

चतुर्वर्ण प्रजाभि श्चसंकुला राजते सदा ॥
राजातु राजते तत्र श्रीमद्दशरथो महान् ॥७॥

ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, सूद्र—ये चार वर्णों वाली प्रजा से भरी हुई श्री अयोध्या सदैव एक रस प्रकाशमान रहती है। इस प्रकार की श्री अयोध्या जी में महात्मा श्री मान् दशरथ जी सदैव राज्य करते रहते हैं ॥७॥

ब्राह्मण्यः श्रुतयस्तत्र ब्राह्मणा वेदमूर्त्तयः ॥
क्षत्रियास्तत्र राजन्ते देहवद्वीरता यथा ॥८॥

वेद मन्त्र ब्राह्मणों का रूप धारण करके हमेशा वेदों का उच्चारण करते रहते हैं। वीरता की मूर्ति क्षत्रिय होकर नगर से अपने शरीर में प्रकाशमान रहते हैं ।८।

वैश्यास्तु वैश्रवणेन समृद्धाः समताङ्गताः ॥
परिचर्य्यात्मके कार्य्ये कुशला स्शूद्र जातयः ॥६॥

वैश्य लोग महान सम्पत्ति से कुबेर को अपने समान बनाए हुए प्रकाश करते हैं। सूद्र जाति के लोग तीनों वर्णों की परिचर्या रूपी सम्पत्ति से बड़ी चतुरता पूर्वक धनवान हैं ॥६॥

कला कार्य्ये शिल्पिनश्च विधात्रा समतां गताः ॥
अचले सचलत्वेन दर्शयन्तो विचक्षणाः ॥१०॥

शिल्पी लोग कला के कार्यों में ब्रह्मा जी को अपने समान बनाए हुए हैं। इन शिल्पियों के बनाए हुए यन्त्र अचल होते हुए भी सचल रूप से दीख पड़ें यह उनकी सूक्ष्म बुद्धि का चमत्कार है ॥१०॥

जलाशयाः सुधापूर्णा वापिका कूपका ह्रदाः ॥
पङ्कजैर्बहुवर्णैश्च युक्ताः सन्ति सरोवराः ॥११॥

बावड़ी, कुआँ, तालाबादि जलाशय अमृत से भरे हुए हैं। बहुत रङ्ग के कमलों से भरे हुए हैं ॥११॥

चतुर्दिक्षुप्रदेशाभू रत्नाकरसमन्विता ॥
शाखिनः कल्पवृक्षाः स्युर्गावः काम दुघाः पराः ॥१२॥

चारों दिशाओं की भूमि रत्नों से खचित रत्न खानि सदृश हैं। वृक्ष कल्पवृक्षों के समान हैं; गौऐं दिव्य कामधेनु गायों के समान हैं ॥१२॥

अश्वाः गजा कुलीना श्च भाराति वाहकोष्ट्रकाः ॥
वृषभावल रूपास्तु रनश्चावहुभारधाः ॥१३॥

हाथी, घोड़े, ऊँट, बैल, खच्चर—ये सब उत्तम कुल वाले महान बोझाओं को ढोने में साक्षात् बल के रूप हैं ॥१३॥

मृत्तिका स्वर्ण शुद्धश्च पाषाणामणय प्रभाः ॥
ताम्रादिकन्तु विधेय शस्त्र कार्य्याय लोहकम् ॥१४॥

श्री अयोध्या जी की भूमि की मिट्टी शुद्ध स्वर्णमयी है; पाषान मणिमय प्रकाशमान हैं। तावाँ केवल यन्त्रों की बिधि के लिये और लोहा केवल शस्त्र बनाने के लिए है ।१४।

सर्वे नराश्च नार्य्यश्चदिव्यालङ्कार वस्त्रधाः ॥
चातुर्य्यशीलसम्पन्नाः शौन्दर्य्येणापि पूरिताः ॥१५॥

सभी नर नारी दिव्य वस्त्र और अलङ्कारों को धारण किए हुए शौंदर्य की मूर्ति, शील, चतुरता आदिक सद्गुणों से परिपूर्ण हैं ॥१५॥

उदारा रसिका विज्ञाः विद्याहीना न बालिशाः ॥
सीतारामात्म संशक्ता भक्ता भाव परायणाः ॥१६॥

सभी उदार हैं; बिलास तत्व व आत्म तत्व के जानने वाले हैं; कोई भी विद्या से हीन नहीं है; सब कोई अपनी आत्मा से श्री सीताराम जी में आरूस भक्त, भाव परायण हैं ॥१६॥

प्रजात्वं प्राप्त सिद्धारते पञ्चदुर्गान्तिरे यथा ॥
बसन्तिवर्द्धमानाश्च पुत्रपौत्र सुबान्धवैः ॥१७॥

सब लोग अपने को श्री सीताराम जी के प्रजा रूप में सिद्धि प्राप्त किए हैं। अपने पुत्र, पौत्र, सुन्दर बन्धुवर्गों के साथ नित्य बढ़ते हुए जो जहाँ रहते हैं वे अपने को श्री अयोध्या जी के नागरिक रूप में ही मानकर बास करते हैं इतना यह श्री अयोध्या शहर के पाँच आवरण तक का वर्णन हुआ ॥१७॥

इति श्री शंकर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
श्रीअयोध्या ख्याने त्रयोदश स्सर्गः ॥१३॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां
श्री अयोध्याख्याने नगर वैभव वर्णनो नाम त्रयोदशः सर्गः

द्वीपान्तरीया श्च दिशान्तरीया नृपा नृपेन्द्रं परि सेवितुश्च ॥
मार्तण्ड वंश्यं दशस्यन्दनाख्यं तेषष्टके दुर्ग गृहे वसन्ति ॥१॥

अब अन्य द्वीपों के, अन्य दिशाओं के सभी राजा लोग, राजेश्वर, सूर्य वंशोद्भव महाराज चक्रवर्ती दशरथ जी के सेवा के लिए श्री अयोध्या में आकर शहर के छटके आवरण में बास करते हैं ॥१॥

तत्तत्समग्रेषु स्वदेश रीत्या वाण्या जनानां वशनादि वेषैः ॥
नन्वस्त्ययोध्या महतीत्रिलोक्यां मर्त्यौत्यलोका अपि तां श्रयन्ति ॥२॥

वे सब अपने देश की भाषा, रीति, भूषण बस्त्र, शृङ्गारादिकों से सम्यक् प्रकार शोभित रहते हैं। और अपने को धन्य मानते हैं। तीनों लोकों (स्वर्ग, पाताल, भूलोक) के लोक पाल श्री अयोध्या जी के आश्रित होकर सेवा करते हैं ॥२॥

गजा विचित्रा श्च हया विचित्रा मृगा विचित्रा अपि पक्षिणाश्च ॥
वाद्य स्वरूपाणि विचित्रकाणि विचित्र दुर्गं हि वदन्ति पौराः ॥३॥

श्री अयोध्या जी के हाथी विचित्र घोड़े विचित्र, मृग पक्षी आदि भी विचित्र हैं । बाजाओं के स्वरूप, नगर वासियों के स्वरूप, नगर आवरणों के स्वरूप अन्य लोकों की अपेक्षा अति सुन्दर विचित्र ही विचित्र हैं, इस प्रकार सब नगर वासी लोग कहते हैं ॥३॥

पुत्र्या प्रदानं कृतवन्तएते रामाय तेनैबभवन्तिसर्वे ॥
द्वीपान्तरीयाश्च दिशा वनीशा सम्वन्धिनः कौशल पालकस्य ॥४॥

अन्य दिशा और द्वीपों के राजा लोग इन श्री राम जी के लिए अपनी कन्याओं का विवाह कर देने से श्री कौशलेश चक्रवर्ती महाराज के सम्बन्धी अपने को मान कर प्रसन्न रहते हैं ॥४॥

या मातरि श्नेहयुता वसन्ति नलोभ कार्य्यविधिपाल सेवा ॥
ते कौशलेशस्य तु लेशमात्रं नरान्ति स्वीयं विहितं ददन्ते ॥५॥

सुन्दर दामाद श्री राम जी मे प्रेम युक्त होकर बास करते हैं और लोभ रहित होकर महाराज चक्रवर्ती जी की सेवा करते है यद्यपि उनके पास महाराज कोशलेश जी के धन की अपेक्षा लेश मात्र भी धन नहीं है तो भी अपने निजी धन को महाराज की सेवा में दे देते हैं ॥५॥

स्वदेश जातं मणिभूषणञ्च महाधनं वाहन मशुकाम्वा ॥
आमन्त्ररामं स्वगृहे हि तेन ददन्ति तद्भोजन व्याजकेन ॥६॥

श्री राम जी को अपने घर में आमन्त्रित करके, भोजन के बहाने अपने देश में उत्पन्न होने वाले महाधन, मणि, भूषण, कम्बलादिक वस्त्र, और विविध प्रकार की सवारियों को दे देते हैं ॥६॥

विशेष वारेष्वपि लोक रीत्या सम्वन्धिनं कौशल राजराजम् ॥
सवान्धवं शैन्य समेतकञ्च निमन्त्रयेयु र्महता दरेण ॥७॥

और कभी २ संक्रान्ति आदि विशेष तिथि वारों के दिन लोक रीति से अपने सम्बन्धी राज राजेश्वर कोशलपाल महाराज को बन्धु-बान्धव, सेनादि सहित महान आदर से निमन्त्रित करते हैं ॥७॥

वित्त व्ययं वर्णयितु न्नशक्तस्तदाहितेषां द्वि सहस्त्र जिव्हः ॥
महीपतीनां धन वारिदानां श्रीराम जामातरिश्नेह लानाम् ॥८॥

उस समय उन सब राजाओं के धन खर्च का हिसाब हजार जिह्वा वाले शेष जी भी नहीं कर सकते हैं। सुन्दर दामाद श्री राम जी में स्नेह से लालायित होकर दान देने के लिए मानो मेघ होकर धन बरषाते हैं ॥८॥

मत्वा सखायं मिथिलाधिनाथं तस्यात्मजा ह्यात्म सुतेव मत्वा ॥
पत्नी समेताः परिलालयन्ति श्रीजानकीं प्रीतियुता नरेन्द्राः ॥९॥

सभी राजा लोग श्री मिथिलेश महाराज को अपना सखा मान कर उनकी कन्या श्री जानकी जी को अपनी कन्याओं की ही तरह मानकर अपनी रानियों के सहित राजा लोग श्री जानकी जी का बड़े प्रेम से लाड़ प्यार करते हैं ॥९॥

अथातः सप्तमे दुर्गे सूर्य्य वंश्याः समग्रतः ॥
निवसन्ति यथा तथ्यं पूर्वा नुक्रम भेदतः ॥१०॥

यहाँ तक श्री अयोध्या शहर के छटवे आवरण का वर्णन हुआ अब सातवे आवरण में पूर्व दक्षिण आदि भेद से यथा स्थानों पर सूर्य वंशीय राजा लोग सम्यक् प्रकार बास करते हैं ॥१०॥

तेज स्विनोवीर्य वन्तो विद्यावन्तोधनुर्भृ तः ॥
नीतिमन्तो वाग्मिनः स्यु रप्रमेय पराक्रमाः ॥११॥

ये सब सूर्य वंशीय राजा लोग बड़े तेजस्वी, वीर्यवान, विद्यावान, धनुष धारी, नीतिवान, सत्य बोलने वाले, अक्षय पराक्रम वाले ॥११॥

रूपवन्तो भूषिताङ्गाः शीलवन्तः सुभाषिणः ॥
समर्थाश्च क्षमावन्त सौभाग्य गुण पूरिताः ॥१२॥

रूप वान, भूषित अङ्ग वाले, बड़े शीलवान, प्रिय वाणी बोलने वाले, सब कार्यों में समर्थ, बड़े क्षमावान, सौभाग्यादि सद्गुणों से परिपूर्ण हैं ॥१२॥

कोटीन्द्रवैभवाः सर्वे भोग्यभावविचक्षणाः ॥
गांधर्व वेद कुशलाः कलासु निपुणा अपि ॥१३॥

करोड़ों इन्द्रों के समान ऐश्वर्य भोग सम्पत्ति होने पर भी भोग बिलास में सूक्ष्म दृष्टि से विचार करने वाले, संगीत विद्याओं में कुशल और सब प्रकार की कलाओं में भी निपुण हैं ॥१३॥

विवेक ज्ञान वैराग्य भक्तियोग परायणाः ॥
सख्य वात्सल्य भावाभ्यां श्रीरामे शक्तमानसाः ॥१४॥

और विवेक, ज्ञान, वैराग्य, भक्ति-योग परायण, सख्य, वात्सल्य आदिक भावों से श्री राम जी में आसक्त मन वाले हैं ॥१४॥

राज्ञी वृद्धा सुवासिन्यो रामे वात्सल्य वृत्तयः ॥
स्नुषापि मिश्र शृङ्गारे हास्यादि व्यवहारतः ॥१५॥

जो वृद्ध स्त्रियाँ हैं वे श्री राम जी में वात्सल्य भाव से व्यवहार करने वाली और जो पतोहू आदिक युवती स्त्रियाँ हैं वे मिश्रित-शृङ्गार-भाव से श्री राम जी से हास्यादिक व्यवहार करती हैं ॥१५॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
अयोध्या ख्याने नाम चतुर्दशस्सर्गः ॥१४॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां अयोध्याख्याने
षष्ठ सप्तम आवरण वर्णनो नाम चतुर्दशः सर्गः ॥

एवञ्च सप्तदुर्गाणाम्मध्ये शोभितमद्भुतम् ॥
असंख्य विस्तरं रम्यं सर्वस्मादुच्च भूतलम् ॥१॥

इस प्रकार इस सात आवरण वाले शहर से शोभित मध्य की अमित विस्तार वाली अद्भुत रमणीय भूमि समान भूतल से सम्यक् प्रकार ऊँची है ॥१॥

रचितं शिखरै र्दिव्यैः स्फटिकैः श्रेणिशोभितम् ॥
महद्द्वार चतुस्कञ्च पताकाध्वज मण्डितम् ॥२॥

इस प्रकार की भूमि में महाराज चक्रवर्ती जी का राजदुर्ग ऊँचे सुन्दर युक्त शिखरों से तथा स्फटिक मणियों से रचित सुन्दर सीढ़ियों से शोभित गोपुर वाले बहुत बड़े २ चारों दिशाओं में चार फाटक ध्वजा, पताका, तोरण और कलसादिकों से भूषित हैं ॥२॥

राज दुर्ग मिति ख्यातं वाद्य घोष निरन्तरम् ॥
तस्यापि परिखा गाधा वाशिष्टी वारि पूरिता ॥३॥

इस प्रकार इस राजदुर्ग के चारों फाटकों पर बाजाओं के निरन्तर घोष का सुन्दर इन्तजाम बना है। इस राजकोट के बाहरी भाग में भी कोट रक्षार्थ खाई बनी हुई है जिसमें श्री सरजू से आई हुई नहर के द्वारा अगाध जल भरा हुआ है ॥३॥

सरोजैः पञ्चवर्णैश्च शोभिताभ्रमराकुलैः ॥
कूलो भये रत्न बद्धा तट पादप मण्डिताः ॥४॥

इस खाई में पाँच रङ्ग के कमल खिले हैं; भ्रमर गूँज रहे हैं; दोनों किनारे की भूमि पर मणिमय वेदिका तथा पत्र, पुष्प, फलों से भूषित वृक्षों की सुन्दर पंक्तियाँ दोनों तरफ हैं ॥४॥

इत्थं दुर्गान्तरे प्येकं कल्पवृन्दाख्यकम्वनम् ॥
कृत्तिमा गिरय स्तत्र श्चत्वारश्च दिगेकतः ॥५॥

यह तो बाहरी वर्णन हुआ। अब राज दुर्ग के भीतर एक कल्पवृन्दाख्य नामक बन है जिससे चारों दिशाओं में चार कृत्रिम पर्वत बने हुए हैं ॥५॥

सरितोपि चतस्रश्चरम्या एवम्बिभागतः।
सरोजै रावृता जलारत्न चित्रितघट्टकाः॥६॥

इन पर्वतों में चारों तरफ नदियाँ भी सुन्दर विभाग से बनी हुई हैं जिन नदियों में रङ्ग २ के चित्र विचित्र घाट बने हैं और रङ्ग २ के कमल भी खिले हैं ॥६॥

नामानि पर्वतानाञ्च सरिताश्च यथाक्रमम् ॥
दक्षिणे चोत्तरे भागे पूर्वे च पश्चिमेयथा ॥७॥

अब पर्वतों के तथा नदियों के भी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर विभाग में उसी अनुसार नाम भी गिनाते हैं ॥७॥

रत्नाद्रिश्च श्रृङ्गाराद्रिः कनकाद्रिश्च केलिकः ॥
सुधावारा चेक्षुरसा पद्मा पुण्य तटी सरित् ॥८॥

रत्नाचल, श्रृङ्गाराचल, कनकाद्रि, केलिकाचल—ये चार पर्वतों के नाम तथा सुधावारा, ईक्षुरसा पद्मा, पुण्यतटी—ये चार नाम नदियों के हैं ॥८॥

घट्टो पर्य्यङ्क पंक्तीनां प्रति विम्बै विभूषिताः ॥
शैवालैः केशपासास्ता हरिद्भूमि तटाम्बराः ॥९॥

घाटों के किनारे बने हुए महलों की पंक्तियाँ सुन्दर भूषित हैं उनका प्रति विम्ब नदियों में अति शोभित हो रहा है घाटों के अलावा मणिमय किनारों पर नदी में सुन्दर सेवार लगा है मानों नदी रूपी नायका के केश फैले हैं। अगल बगल की हरित जो भूमि है मानों नदी रूपी नायका हरे वस्त्र पहने हुये हैं ॥९॥

सेविताः सित पक्षैश्च सारसैश्च चकोरकैः ॥
कादम्बै र्विविधैर्वर्णैर्जल कुक्कुटके स्तथा ॥१०॥

जहाँ तहाँ सफेद पक्ष वाले सारस, चकोर, कलहंस जलकुक्कुट, चकवादिक-किनारे पर बिहार कर रहे हैं ॥१०॥

एतन्मध्येहिभागे च वनान्यष्टौ विभागतः ॥
भद्रवृन्दाख्यकं तेषां सर्वेषाम्मध्य वार्तिकम् ॥११॥

इन चार पर्वतों और नदियों के बीच भाग में आठ वन विभाग पूर्वक हैं। उन आठों के बीच वाले वन का नाम भद्रवृन्द है ॥११॥

श्रीमद्दशरथस्यैव तत्रास्तिमन्दिरम्महत् ॥
द्वादशैश्च सतागारै युक्तं स्वर्णाद्रि सन्निभम् ॥१२॥

इस भद्र वृन्द वन में महाराज श्री दशरथ जी का बहुत बड़ा रनिवास है जिसमें स्वर्ण पर्वतों के समान बारह सौ महलों की मण्डलाकार पंक्ति है ॥१२॥

सप्तकक्ष श्चतुर्दिक्षु बलवद्वीर रक्षितम् ॥
उच्चध्वज पताकाभिः शिखरैर्दूर दर्शितम् ॥१३॥

पंक्ति के बाहर में सात आवरण परकोटा है जिन में बलवान वीर रक्षा के लिए पहरा कर रहे हैं। उन परकोटाओं के चारों दिशा वाले फाटकों के ऊँचे शिखरों पर दूर से दीख पड़ने वाले ध्वजा पताका सुन्दर शोभित हैं ॥१३॥

दुन्दुभीनांचभेरीणां पणवानां शब्द पूरितम् ॥
सदोत्सव मिवद्वार भाषितं गायनोद्धतैः ॥१४॥

तथा दुन्दुभी, भेरी, पणव आदि बाजाओं का घोष (नाद) दूर दिशाओं तक फैल रहा है। सुन्दर गायकों के गान से नित्य उत्सव पूर्वक रागों की धार बँधी है ॥१४॥

सूत मागध नटाश्चदेश्या देशान्तरीयकाः ॥
तेतिष्ठन्त्याद्य कक्षाया मिति संधा सनातनी ॥१५॥

देश और विदेश के सूत मागध नटों का सबसे बाहर वाले पहले आवरण में निवास है यह मर्यादा (प्रथा) सनातन की है ॥१५॥

अतः परंच देशीय स्तथा देशान्तरीयकाः ॥
गुणिनो राजराजस्य गुणज्ञस्य हि दर्शने ॥१६॥

इसके दूसरे आवरण में संगीत गुण के पण्डित महाराज चक्रवर्ती जी के देश देशान्तरीय सङ्गीतज्ञ बड़े २ गुणी लोग निवास करते हैं ॥१६॥

तेतिष्ठन्ति द्वितीयायां कक्षायां पक्ष संयुक्ताः ॥
प्रतिहारस्य द्वारेण तेषां राज्ञा समागमः ॥१७॥

ये देश विदेशीय सङ्गीतज्ञ लोग अपनी २ पार्टियों से विभक्त हुए निवास करते हैं। प्रत्येक पार्टी के खण्ड के लोग द्वारपालों के द्वारा महाराज चक्रवर्ती जी से भेंट करते हैं ॥१७॥

पण्डिताः पटुवाग्युक्ताः शास्त्र पक्ष विवादकाः ॥
ते कक्षाया मादूरेण तृतीयायाम्बिशन्तिच ॥१८॥

तीसरे आवरण में शास्त्र के विषय में बड़े वाक्य पटु पण्डित लोग जो बड़े २ विवाद पक्ष के विजयी हैं वे बड़े आदर पूर्वक निवास करते हैं ॥१८॥

कक्षायां तु चतुर्थ्यां हि सुमन्ताद्याश्च मन्त्रिणः ॥
विशन्ति स्वस्य पर्यायैः सर्वकार्य्य प्रवर्तकाः ॥१९॥

चौथे आवरण में सुमन्त आदिक अष्ट मन्त्री जो सब प्रकार के कार्यों का विधान करने वाले हैं वे लोग समय २ पर इस आवरण में आकर निवास करते हैं ॥१९॥

अतः परश्चेन कुले वृद्धाः प्रज्ञानसन्मताः ॥
वयसापि कृच्छ्र प्रज्ञानपक्ष निर्णयरताः ॥२०॥

तेषां समज्या कक्षायां पञ्चम्यां परिराजते ॥
रणे प्यचल वृत्तीनां ज्ञाने चसुद्ध चेतषाम् ॥२१॥

पाँचवे आवरण में अपने कुल के वृद्ध लोग तथा देश विदेश के सज्जन सम्मत तत्व ज्ञान सम्पन्न लोग जो कि अवस्था में भी बूढ़े हैं किसी भी विवाद में सुन्दर निर्णय देने वाले हैं वे लोग समय २ पर आकर निवास करते हैं ये लोग रण में भी अचल बुद्धि वाले हैं; ज्ञान में भी सुद्ध चित्त वाले हैं अपने सहायक समाज के सहित समय २ पर इस पाचवें आवरण में निवास करते हैं ॥२१॥

वामदेवो वशिष्ट श्च जावालिः गौतमस्तथा ॥
भरद्वाजो याज्ञवल्क्यः वाल्मीको हारितो महान् ॥२२॥

श्री वामदेव, वसिष्ठ, जावालि, गौतम, भरद्वाज याज्ञवल्कि, वाल्मीकि, हारित ॥२२॥

लोमशः पुलह श्चैव भृगुः कौशिक सद्व्रतः ॥
एते प्यन्न्येपि मुनयो वेद तत्व विशारदाः ॥२३॥

लोमश, पुलह, भृगु, कौशिक आदि बहुत से मुनि लोग जो वेद के तत्व को ठीक से जानने वाले सद् व्रती तत्वा दर्शी हैं ॥२३॥

श्रीमद्दशरथस्यैव शभायां प्राक विवाककाः ॥
विशन्ति ते प्यादरेण कक्ष्या षष्ट्यां यथा न्यायः ॥२४॥

ये सब लोग महाराज श्री चक्रवर्ती जी की सभा में बड़े आदर से प्रवेश करके प्रत्येक शब्दों का प्रधान निर्णय करते हैं ये लोग भी राजमहल के छटवे आवरण में निवास करते हैं ॥२४॥

सप्तान्तरेतु राज्ञीनां मन्दिराणि विभागतः ॥
तासा न्तासाञ्च पुत्राणामन्वयेन महत्तरे ॥२५॥

सातवे आवरण में राजरानियों के बारह सौ महलों की सुन्दर विभाग पूर्वक पंक्ति है उन महलों में उन प्रत्येक रानियों के साथ उनके मनोहर पुत्रों के भी ॥२५॥

क्रीडा शभादि सर्वे च खण्ड खण्डान्तरं बृहत् ॥
इत्थ न्तु पूर्वदिग्भागे कक्ष्याः सप्त महत्तराः ॥२६॥

खेलने का सभास्थान बहुत बड़ा खण्ड खण्डान्तर वाला बना हुआ है इस प्रकार यह पूर्व भाग में भद्रवृन्दनामक वन के बीच में सात आवरण वाला बहुत बड़े रनिवास का वर्णन हुआ ॥२६॥

इति श्री शंकर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
श्रीअयोध्या ख्याने राज रनिवाश भवन वर्णनो
नाम पंचदशस्सर्गः ॥१५॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्री अयोध्याख्याने
राजरनिवास वर्णनो नाम पंचदशः सर्गः

अथ सन्ति दक्षिणास्यां कक्ष्यानां सप्तकं दिशि ॥
सहितै रेव तत्र स्थै र्वस्तुभिर्वर्णयामि ते ॥१॥

हे सुकान्ति ! अब मैं तुमको दक्षिण दिशा में बगीचा के बीच सात आवरण वाले राज महल (रत्न सिंहासन) तथा तत्सम्बन्धी बहुत सी वस्तुओं के सहित वर्णन करके सुनाती हूँ ॥१॥

वर्णितानां क्रम न्त्वत्र स्थानां विद्धि हि पूर्वतः ॥
कक्ष्याया अन्त्य द्वारान्तं तदादि क्रम मुच्यते ॥२॥

इस स्थान पर पूर्वादि क्रम से प्रत्येक स्थान और वस्तुओं का द्वारों के बाहरी भागों से भीतर के आदि भाग तक का वर्णन मुझ से सुनो ॥२॥

सिद्ध पाक गृहन्त्वेक म्बहुशो वस्तु भेदतः ॥
तत्रापि च त्रयं मुख्यं पायसम्भोज्यभक्षके ॥३॥

राज महल के दक्षिण दिशा सात आवरणों में से सब से बाहर वाले आवरण में बहुत सिद्ध भेद के सिद्ध हुए अन्नों (मिठाई, पकवानादि भोजन सामग्री) के महल हैं उनमें भी भक्ष्य, भोज्य तथा दूधकी मिठाई आदिक वस्तुओं के तीन महल मुख्य हैं ॥३॥

अन्नागारे तु द्विविधं सिद्धोऽसिद्धश्च भेदतः ॥
बहुशो व्रिहि भेदानां सन्त्यागाराणि तत्र च ॥४॥

और चौथा अन्नागार जो सिद्ध और असिद्ध भेदसे बहुत से अन्नों के महल वाला है ॥४॥

तथा रस गृहे प्येवं घृतादि कर्करादिकम् ॥
पृथक्त्वेन विजानीहि शाकागारे यथाविधम् ॥५॥

और पाँचवे रसागार में घी चीनी आदिक पदार्थों के अलग २ बहुत से महल हैं । इसी प्रकार के भेद से साकागार भी है ॥५॥

वैषवार गृहे प्येवं-यथातथ्यं पृथक्पृथक् ॥
चत्वारो पि वर्णाना ञ्च भोजनाय पृथक्पृथक् ॥६॥

तथा इसी प्रकार वेष बार गृह में मशाला आदि वस्तुओं के अलग २ पूर्व कहे हुए के शभान महल हैं भोजनागार में चारों वर्णों के लिए अलग २ इन्तजाम पूर्वक महल बने हुए हैं ॥६॥

तेषाञ्चात्र विभागेन स्त्री पुंसां भेदतो यथा ॥
राज्ञीना ञ्चैव राज्ञा ञ्च भिक्षुकानान्ततोन्यतः ॥७॥

उनमें भी स्त्रियों के लिए अलग, पुरुषों के लिए अलग, रानियों के लिए अलग; राजाओं के लिए अलग; भिक्षुओं के लिए अलग महल बने हुए हैं ॥७॥

ताम्बूल दक्षिणागारं विशालम्भोजनोत्तरम् ॥
शेष पाक गृहञ्चात्र समग्रे भेद भावितम् ॥७॥

तथा भोजन के बाद पान और दक्षिणादि विधान पूर्ति का महल उन भोजन महलों के उत्तर भागों में साथ ही है। पाक-गृह भी समस्त भेदों से भावित उन भोजन महलो म ही है ।।८॥

सीताराम रूपकारा भक्ष्यकारा तेषाञ्चैवोपचारकाः ॥
एषाञ्च भोजनागाराण्येवं कक्ष्यैक वृत्तकम् ॥६॥

रसोइया लोग भोजन करने वाले लोग व इन दोनों के अनुयायी लोग—इन सबके रहने और भोजन करने के महलों से ही राजमहल (रत्न सिंहासन) के बाहरी भाग वाले एक आवरण का वर्णन हुआ ॥६॥

अत्र कक्षा द्वितीयायां तत्र शस्त्र विशारदाः ॥
अभ्याशं कारयामासु कुमारा न्नृप वंशजान् ॥१०॥

अब द्वितीय आवरण में अस्त्र के अभ्यास कराने वाले, राजकुमारों को रण शिक्षा व शिकार शिक्षा को देने वाले पन्डितों के निवास स्थान और अभ्यास स्थान हैं ॥१०॥

तत्रैवचगृहास्सन्ति शस्त्राणां क्रम भेदतः ॥
कोश चर्मासि धनुषां शक्ति मार्गण वर्म्मणाम् ॥११॥

उसी प्रकार दूसरे आवरण में अस्त्र शस्त्रों के रखने के महल भी अलग २ क्रम भेद से हैं। ढाल, तलवार, म्यान, धनुष, शक्ति बाण, कवच आदि अस्त्र शस्त्र उन महलों में रखे हुए हैं। यह द्वितीय का वर्णन हुआ ॥११॥

अत्रैवञ्च तृतीयायां कक्षाया मष्ट भेदतः ॥
धातूनां गृह संघट्टे सिद्धासिद्धद्विधभेदतः ॥१२॥

अब तृतीया आवरण में आठ भेद से सिद्ध और असिद्धा आदि धातुओं के रखने के महल हैं ॥१२॥

सिद्धे धातु गृह वृन्दे पीठा मन्त्रादि सर्वकम् ॥
असिद्धे तु यथा सर्वधातुकं स्याद नाहतम् ॥१३॥

सिद्ध धातु के घर में बने हुए सिंहासनादि धातुओं के पदार्थ हैं; असिद्ध धातु के घर में बिना बना हुआ धातु जैसा का तैसा रखा हुआ है ॥१३॥

सन्त्यत्र तूर्य्य कक्षायां कलावतां हि शिल्पिनां ॥
स्थानानि सर्व वस्तूनां कृत्रिमाणां विभागतः ॥१४॥

अब चौथे आवरण में शिल्पी, कलाकार लोगों के कला-कार्य के स्थान और कलामयी वस्तुओं के रखने के घर तथा कृत्रिम विभाग से अलग २ बने हैं ॥१४॥

स्थित्वा यत्र हि ते सर्वे कार्यं कुर्वन्ति सम्पतैः ॥
गृहा भिन्ना स्तेपिसन्ति नितरांवद्ध दृष्टयः ॥१५॥

और जहाँ पर नित्य वद्ध दृष्टि से रह करके वे कलाकार लोग अपनी सम्पत्तियों से कार्यों को करते हैं वे महल भी इसी आवरण में अलग २ हैं ॥१५॥

अत्राग्रे पञ्चमी कक्षा तत्र गेहानि कोटिशः ॥
मणीनां त्रिविधानाञ्च सन्ति सत्क्रमतो यथा ॥१६॥

इसके आगे पाँचवें आवरण में जल, थल, सर्वादिभेद से तीन प्रकार की मणियों के अनेकन प्रकार रचनाओं के लिए करोड़ों महल सुन्दर क्रम से हैं। जैसे ॥१६॥

मणयो वर्ण साराश्च प्रकृति भेद कारकाः ॥
आदर्शा स्त्रिविधा श्चैव ज्ञानन्ति पण्डिता जनाः ॥१७॥

मणियाँ अपने प्रकाश के भेद से सहज प्रकृति के रङ्ग को बदल देती हैं, श्रेष्ठ दिव्य दृष्टि से दीखने वाले जो दर्पण वे तीन प्रकार हैं इस मर्म को पण्डित जन जानते हैं ॥१७॥

मणीनांच गृहाग्रेतु विस्तागाराणि कोटिशः ॥
सन्ति चात्रैव कक्षायां कुरुविस्तस्य भेदतः ॥१८॥

मणियों के गृहों (महलों) के आगे स्वर्ण भूषणादिकों के करोड़ों महल हैं वहीं पर पंक्ति भेद से ८० रत्तीभर वजन के भूषणों के तथा १०२४ रत्तीभर वजन वाले स्वर्ण भूषणों के महल भी करोड़ों हैं ॥१८॥

षष्ठि कक्षा चैत दग्रे मणिनिर्मित चित्रकाः ॥
वस्त्राणां संग्रहागारा एयनैकानि विभागतः ॥१९॥

छटवे आवरण में मणियों से निर्मित सुन्दर चित्र विचित्र वस्त्रों के अनेक संग्रहागार सुन्दर विभाग पूर्वक हैं ॥१९॥

वादरं क्षौमक श्चैव कौशेयं राङ्कवन्तथा ॥
एवं चतुर्विधम्वस्त्रं धौतोष्णीषादि जातयः ॥२०॥

सूती वस्त्र, रेशमी (मकड़ी से उत्पन्न होने वाले पाट के) वस्त्र, कटियादिक (कृमियों से उत्पन्न होने वाले) वस्त्र तथा ऊनी वस्त्र—इस प्रकार चार भेद से उत्पन्न होने वाले धोती पगड़ी आदि भेदों से बने हुए कपड़े ॥२०॥

तत्रापि नीलपीतादि वर्णभेदेन संग्रहाः ॥
भिन्नागाराणि सर्वेषां स्त्री पुंसा ञ्चापि भेदतः ॥२१॥

उनमें भी नील पीतादि रङ्ग भेद से अलग २ संग्रहों के अलग २ महल हैं उनमें भी स्त्रियों के वस्त्रों के महल, पुरुषों के वस्त्रों के महल अलग २ हैं ॥२१॥

अङ्गरागाभूषणानां गृहास्तत्रापि भेदतः ॥
खचिता खचितानांच स्त्रीपुंशाम्वयसा पिच ॥२२॥

अङ्गराग व भूषणों के भी महल वहीं पर कुछ भेद करके है। उन वस्त्र भूषणों में भी जरी के और बिना जरी के भी महल सादे कपड़े उन में भी वृद्धों के, जवानों के, बच्चों के वस्त्र स्त्री पुरुष भेद से अलग अलग हैं ॥२२॥

अष्टापदादि क्रीडार्थाः केल्यर्थं कन्दुकादयः ॥
तेषा ञ्चैवात्र कक्षायां गृहाः सन्ति विभागतः ॥२३॥

चौपड़ खेलने के तथा गेंद आदि खेलने की वस्तु भी इसी छटवे आवरण में अलग २ विभाग से महल हैं ॥२३॥

काचानां रचनार्थानि मणीनां मण्डपादिषु ॥
दीपद्रुमा विग्रहाश्च मनुष्यपशु पक्षिणाम् ॥२४॥

काँच की रचना की हुई वस्तु, मणियों की रचना की हुई मण्डपादिक वस्तु, दीपवृक्ष, मणिमय जनानो मर्दानी मनुष्य पशुपक्षी आदि मूर्तियाँ आदि के महल छटवे आवरण में हैं ॥२४॥

विद्या कक्षा सप्तमीस्या द्रागविद्यादि सर्वकम् ॥
वाद्याना म्पुस्तकानांच तत्रैव संग्रहा गृहाः ॥२५॥

साँतवें आवरण में सब प्रकार की विद्याओं की शिक्षा और सामग्रि का इन्जाम है जिन में किसी खण्ड (महल) मे रागविद्या, किसी में धनुर्विद्या, किसी में शब्द ज्ञान, पढ़ाने की पाठशालायें तथा बाजा पुस्तकआदि सामाग्रियों के महल हैं ॥२५॥

सन्ति सप्त हि दिग्भागे पश्चिमे हेम निर्मिताः ॥
रत्नैश्च खचिता श्चित्रैः कक्षा ज्योतिर्मिरा वृता ॥२६॥

इसी प्रकार राजमहल के पश्चिम दिशा वाले स्वर्ण के रत्न खचित चित्र विचित्र महलों के प्रकाश रूप सातों आवरणों का वर्णन मुझ से सुनो ॥२६॥

तत्रास्ति प्रथमायां तु गजोत्तम समूहकम् ॥
विभागे स्तत्र दिश्यानां स्थानान्युच तराणि वै ॥२७॥

सब से पहले बाहरी प्रथम आवरण में जातीय और दिशाओं के भेद से हाथियों के समूहों के रहने के लिए अलग २ ऊँचे २ महल हैं ॥२७॥

आधोरणानां सद्मानि तत्रैव शोभनानि च ॥
वारणाभूषणानांच विमानानां गृहा अपि ॥२८॥

पीलवानों के भी महल तथा हाथियों के भूषणों के व विमानों के (हौदाओं) के घर (महल) भी इसी आवरण में हैं ॥२८॥

तदूत्तरं द्वितीयायां कक्षायान्तु हयोत्तमाः ॥
सन्तितेपि चतुर्दिश्याः शोभना वहुवर्णकाः ॥२९॥

दूसरे आवरण में चारों दिशाओं के अलग जाति वाले, अलग २ रङ्ग वाले अति उत्तम घोड़ाओं का निवास है ॥२९॥

एषांचापि रक्षकाश्च तेषां सद्मानिसंघटैः ॥
तथै वैषाम्भूषणाना माशनानां गृहा अपि ॥३०॥

उन घोड़ाओं के सईस आदि रक्षकों के भी घर वहीं पर हैं तथा उन घोड़ों के भूषण जीन आसनादि के महल भी वहीं पर हैं ॥३०॥

एवं तृतीय कक्षायां वृषभोत्तम संघतिः ॥
तेषांचापि रक्षकानां गृहा स्तत्रैव शोभनाः ॥३१॥

अब तीसरे आवरण में उत्तम जाति के देश भेश से बैलों का समूह तथा उनके रक्षकों का भी घर है ॥३१॥

एवं चतुर्थ कक्ष्यायां गवां वृन्दानि तत्रच ॥
सेवकानां गृहास्तासां वस्त्राभूषणका गृहाः ॥३२॥

इसी प्रकार चौथे आवरण में भी गाइयों का और उन के सेवकों व वस्त्रभूषणों के भी घर हैं ॥३२॥

पञ्चमी तु कक्ष्या तत्र महिषीमहिषोष्ट्रकाः ॥
तेषां वृन्दानि वहुशो गृहाः सन्ति विभागतः ॥३३॥

पाँचवे आवरण में भैंसा, भैंसी ऊँट आदि पशुओं के झुण्ड, रक्षक और उन के भूषणों के भी अलग २ महल हैं ॥३३॥

ततोग्रे षष्ठिका कक्ष्या रम्या रत्न विनिर्मिता ॥
पशुपक्षि मृगाश्चान्ये क्रीडार्था युद्ध कारकाः ॥३४॥

इस के आगे छटवे आवरण में रत्नों से रचित सुन्दर रमणीय पक्षीमृग आदि खेलने के पशु, युद्ध करने वाले पशु पक्षी मृग—इनके महल हैं ॥३४॥

अस्याश्चाग्रे सप्तमीस्या त्कक्ष्या काञ्चन रत्नका ॥
तेषां क्रीडा कारका ये निवसन्ति गृहान्तरे ॥३५॥

इससे आगे स्वर्ण रत्न रचित रमणीय सातवे आवरण में इन पशु पक्षी मृगादि के नचाने खिलाने वाले सेवकों के महल हैं ॥३५॥

तथैवोत्तरं दिग्भागे कक्ष्या सप्त मनोहरा: ॥
सन्त्यत्र प्रथमायान्तु परिवृत्ता नृपस्त्रियः ॥३६॥

इसी प्रकार राज महल के उत्तरीय द्वार वाले मनोहर सातों आवरणों का वर्णन सुनो । सब से बाहरी आवरण में महाराज श्री चक्रवर्ती जी की परिवृत्ता स्त्रियाएँ हैं ॥३६॥

अतीव रूप सयुक्ताः साहित्योदये बुद्धयः ॥
विप्रश्निका श्च कोकज्ञा आर्य्या आर्य्य कुलोद्भवाः ॥३७॥

जो अत्यन्त सुन्दरी, सुन्दर साहित्य (सङ्गीतादि) को पैदा करने की बुद्धि वाली, तथा शुभाशुभ लक्षणों का निरूपण करने वाली, कोक शास्त्र को जानने वाली, उत्तम कुल में उत्पन्न हुई, श्रेष्ठ गुण स्वरूप वाली हैं ॥३७॥

तासां प्राकारे सांगानि सन्ति सद्भवनानि हि ॥
अग्रे कक्ष्या द्वितीयास्ति तस्यां तासां सुवैभवम् ॥३८॥

उनके रहने के निवास महल भी अपने अङ्ग प्रत्यङ्गों से सुन्दर हैं आगे दूसरे आवरण में उन परि-वृत्ता स्त्रियों को वैभव सम्पत्ति के विविध महल हैं ॥३८॥

अतः स्तृतीय कक्ष्यायां वावातास्यु नृपस्त्रियः ।
सर्वास्ता गुण संयुक्ताः रूपाधिक्या प्रियोत्तमाः ॥३९॥

तीसरे आवरण में महाराज की वावाता नामक स्त्रियाएँ निवास करती हैं वे दिव्य गुण सम्पन्ना, रूप में बढ़ी बढ़ी उत्तमा, अति प्रिया हैं ॥३९॥

तासां गृहा विभागेन स्वर्ण रत्न विनिर्मिताः ॥
तदग्रे तूर्य्य कक्ष्याया मासां वैभवकं तथा ॥४०॥

इन के स्वर्ण रत्न निर्मित महल सुन्दर विभाग पूर्वक हैं । आगे चौथे आवरण में इन वावाता स्त्रियों का वैभव सम्पत्ति खजानादिकों के महल हैं ॥४०॥

ततस्तु पञ्चमी कक्ष्या तस्यां सद्रूपयौवना: ॥
सैरन्ध्री सर्व जातीयास्त्वेकांहि ब्राह्मणीं विना ॥४१॥

इस के आगे पाँचवे आवरण में सुन्दर रूप गुण, यौवन सम्पन्ना सैरन्ध्री नामक जाति की स्त्रियाएँ जो कि एक ब्राह्मण जाति को छोड़ कर सब जाति की हैं—इन का निवास है ॥४२॥

तासां तु वैभवं सर्वं माधरं स्यन्दनादिकम् ॥
षष्ठिकायां सुकक्ष्यायां विभागेन समन्ततः ॥४२॥

छटवे आवरण में इन का रथादि वाहन वस्त्रभूषणादि सम्पत्ति के अलग २ महल हैं ॥४२॥

अतः परं सप्तमीस्या त्कक्ष्या वैशालिका परा ॥
तस्यां वार वधूः सर्वाः दिव्यरूपाः गुणोत्तराः ॥४३॥

इस के आगे सातवें आवरण में वारवधू (वैश्या) जाति की स्त्रियाऐं दिव्य, रूप, गुणवतियों का निवास है जो सब प्रकार की कलाओं में परम श्रेष्ठ हैं ॥४३॥

तासां यद्वैभवं सर्वं तत्कक्ष्या वरणे लसत् ॥
बहिर्भागे चतुर्दिश्याः कक्ष्या सप्तविभागकाः ॥४४॥

उन का जो वैभव है वह उसी आवरण के अलग २ महलों में शोभित है इस प्रकार सातवें आवरण वाले राजमहल के बाहरी भाग चारों तरफ में उन दिशाओं के वैभव के अनुसार बाहरी भूमि अनुकूल है ॥४४॥

तद्वृत्तं वर्णितं सर्वं कौशलेन्द्रस्य सद्मनः ॥
अद्य स्त्वभ्यन्तरं सर्वमाख्यानं कथयामिते ॥४५॥

इस प्रकार यह कौशलेन्द्र महाराज के राजमहल का वर्णन किया अब इसके बाद मैं तुमको और आन्तरिक चरित्रों को सुनाती हूँ ॥४५॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
अयोध्या ख्याने राजभवन वर्णनो नाम
षोडशस्सर्गः ॥१६॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्री अयोध्या ख्याने
राजभवन वर्णनो नाम षोडशः सर्गः ॥१६॥

चतुर्दिश्याः सप्तकक्ष्या स्तदन्त र्वर्त्तिकम्महत् ॥
कौशल्यायाः मन्दिरं स्यात् बहुभिर्मन्दिरैर्वृतम् ॥१॥

राज महल के चारों दिशा सात आवरण का वर्णन हुआ अब राजमहल के आन्तरिक विभागों का वर्णन कहते हैं । श्री कौशल्या अम्बा के महल के चारों तरफ और (अन्य) रानियों के बहुत से महल हैं ॥१॥

ध्वजा च कलशैर्दिव्यैः काञ्चनैस्सर्वतो वृतम् ॥
वातायन गवाक्षैश्च रत्नजालै श्चमत्कृतम् ॥२॥

उन महलों से घिरा हुआ श्री कौशल्या अम्बा जी का महल स्वर्णमयी ध्वजा, पताका, तोरण, कलश चारों तरफ से शोभित हैं । छज्जा और झरोखाओं में बड़े चमत्कार वाले रत्नों का जाली झालर आदिक लगे हुए हैं ॥२॥

चारु चित्रांक भित्तिश्च मणिकु त्पादिमां गणैः ॥
आवृताद्व प्रकोष्ठं तत् दिवाकर सतप्रभम् ॥३॥

दिवालें अत्यन्त सुन्दर चित्र विचित्र चिनों से चमत्कृत हैं जिन चित्रों के मणिमय आँख कानें बने हुए प्रत्यक्ष के समान अट्टालिकाओं के नीचे दीवालों के सैकड़ों सूर्यों के समान प्रकाश कर रहे हैं ॥३॥

कैकय्याश्च सुमित्राया स्तस्यदक्षिणमुत्तरम् ॥
पूर्वं द्वाराणि त्रीण्येव तस्याग्रे मण्डप म्महत् ॥४॥

इसी प्रकार कैकयी सुमित्रा जी के उत्तर, दक्षिण तरफ महल हैं। इन तीन महलों से युक्त अम्बा जी का महल सात सौ रानियों के महलों से मण्डलाकार घिरा हुआ प्रत्येक दिशा में तीन २ करके फाटक शोभित हैं और पूर्व फाटक के आगे में एक बहुत बड़ा मण्डप है ॥४॥

कलशा काश स्पर्शं च पताकाध्वज मण्डितम् ॥
बहुभिर्मणिभिश्चित्र विचित्रैश्चित्त कर्षकम् ॥५॥

जिसका मणिमय ध्वजा, पताका, कलश आकाश को स्पर्श कर रहा है। उस मंडप की दीवालें बहुत रङ्ग के चित्र विचित्र चमत्कार वाले चित्तको आकर्षित कर रहे हैं ॥५॥

स्वर्ण सूत्र वितानैश्च सर्वखण्डान्तरावृतम् ॥
मुक्ता गुम्फित गुम्फैस्तु हस्तालम्वन शोभनम् ॥६॥

उस मंडप के भीतर प्रत्येक खंड और खन्डान्तरों में स्वर्ण सूत्रों से बने हुए वितान तने हैं तथा प्रत्येक वितान के बीच २ में मुक्ताओं की गुच्छियाँ हाथ के अवलम्ब के लिए लटको हुई हैं जो अति शोभायमान लगती हैं ॥६॥

शुभैर्गन्धै र्वासितैश्च वसनैर्सर्व तो वृतम् ॥
प्रतिमा युक्त यूपानां पंक्त्यन्तर प्रभान्वितम् ॥७॥

और चारों तरफ परदे सुन्दर सुगन्धित वस्त्रों के तने हुए हैं उस मंडप के मध्य भाग में चारों तरफ मूर्तियों (प्रतिमाओं) से चित्रित खम्भों की पंक्तियाँ सुन्दर प्रकाशमान हो रही हैं ॥७॥

वाद्यघोषंविना वाद्यैः तथा तन्त्री न्विना पितु ॥
गीतंश्च श्रूयते रागै स्तालादि भेद वद्यथा ॥८॥

उन मंडपों के फाटकों पर बिना बाजाओं के ही मध्य मंडप में भी वीणादिक वाद्योंसे सुन्दर रागादि तालादि भेद से सङ्गीत का सा कल्लोल हो रहा है ऐसा सुन पड़ रहा है ॥८॥

तत्र सिहासनं दिव्यमनन्ता दित्य सत्प्रभम् ॥
तत्र श्रीराममातावै राजते सत्प्रभावका: ॥९॥

इस प्रकार उस मण्डप के मध्य अनन्त सूर्यों के समान प्रकाशमान एक दिव्य सिहासन है उस सिहासन पर सुन्दर प्रभाव से प्रकाशमान श्री राम जी की माता शोभित हो रही हैं ॥९॥

सुमित्रा वामभागेच कैकयी दक्षिणे तथा ॥
कौशल्याङ्के भूषिता श्री राजतेमैथिली शुभाः ॥१०॥

इन के वाम भाग में श्री सुमित्रा अम्बा, दक्षिण भाग में कैकयी अम्बा विराजी हैं। श्री कौशल्या अम्बा जी की गोदी में सुन्दर भूषणों से भूषिता अति सुन्दरी श्री मैथिली जी शोभित हैं ॥१०॥

पृष्टे वामे दक्षिणे नै छत्र चामर हस्तकाः ॥
सख्यो नन्ताः विराजन्ते सर्वाङ्ग भूषिताः शुभाः ॥११॥

पीठ की तरफ, दाहिनी तरफ बायीं तरफ छत्र चवरादि सेवा सौंज हाथ में लिए हुए अनन्त सखियाँ सर्वाङ्ग भूषिता सुन्दर शोभित हैं ॥११॥

अपरा प्यनन्ता राज्ञ्यो मण्डलाकार सम्वृताः ॥
तत्रैवोच्चासनस्थानु गुरु पत्नी विराजते ॥१२॥

तथा महाराज चक्रवर्ती जी की और रानियाँ भी मण्डलाकार, होकर शोभित हैं। उसी स्थान पर एक ऊँचे आसन में श्री गुरु पत्नी श्री अरुन्धती अम्बा भी विराजमान हैं ॥१२॥

अयोध्या पुर वाशिन्य श्चातुर्वर्ण्य स्त्रियोवराः ॥
सम्मानिता हि श्रीमत्या राज्ञ्या कौशल्यया गिरा ॥१३॥

तथा अयोध्या नगर की रहने वाली चारो वर्णोंकी उत्तम स्त्रियाएं श्री मती कौशल्या जी की वाणी से सम्मानित होकर विराजी हुई हैं ॥१३॥

ताभिः प्रपूरितं सर्व म्मण्डपं हि महत्तरम् ॥
दिव्याम्बरा भूषणाभिश्चा तुर्य्याञ्चित बुद्धिभिः ॥१४॥
प्रतिहार्य्यो प्यनन्तास्तु दिव्यरूपा विभूषिताः ॥
स्वर्ण दण्ड धराः काश्चि द्रत्न दण्ड धरा अपि ॥१५॥

उन सब स्त्रियों से भरा हुआ वह विशाल मण्डप शोभित है। सब स्त्रियाएँ दिव्य वस्त्र भूषणों से तथा अत्यन्त चातुर्यमयी बुद्धि से शोभित हैं उस मण्डप की प्रतिहारिणी (प्रति हारी का काम करने वाली स्त्रियाँ) भी सुन्दर वस्त्राभूषणों से भूषिता, दिव्यरूपा, हाथों में स्वर्ण दण्ड, रत्न दण्डादिकों को धारण की हुई अनन्त संख्या में हैं ॥१४-१५॥

पुष्प दण्ड धरा श्चान्याः खचि द्वेत्र धरा अपि ॥
आगत्य कृतप्रणामाना न्तास्तु कुर्वन्ति ज्ञापनम् ॥१६॥

बहुत सी पुष्प दन्डों को भी तथा कोई रत्न खचित वैंतों को भी ली हुई अपने २ स्थानों पर खड़ी हुई हैं। बाहर से आने वाली स्त्रियों को महारानी जी के लिए प्रणाम करने के बाद ज्ञापन कराती हैं ॥१६॥

उच्चस्वरे स्तूच्चरन्त्यः पुनः स्थापन मन्वयात् ॥
यथायोग्यं प्रकुर्वन्ति राज्ञ्या त्वत्युत्तरं हि ताः ॥१७॥

ज्ञापन माने प्रणाम करने वालियों के नामादिक समाचारों को ऊँचे स्वर से महारानी जी के लिए जनाकर प्रणाम के बाद आसन पर बैठने की आज्ञा महारानी जी से पाकर यथा योग्य स्थानों पर उन आयी हुइयों को बैठाना है ॥१७॥

रम्भोर्वसी मेनकाद्या गायन्ति नृत्ययन्ति च ॥
ध्वनिः प्रपूरित स्तत्र वाद्यानां स्वर सम्मतः ॥१८॥

इस प्रकार की सभा में महारानी जी के आगे रम्भा, उर्वशी मैनकादिक देवलोक की अप्सराओं के नृत्य, गान, वाद्य, ताल और बाजाओं के शब्द से वह मंडप गुञ्जित हो रहा है ॥१८॥

स्त्रियो विदूषकाना श्च बहुशो हास्य हेतुकैः ॥
वाक्या नुभाव सुर्धान्यो मोदयन्ति च तां शभाम् ॥१६॥

और बहुत सी विदूषक स्त्रियाऐं वाक्य के अनुभव से बहुत प्रकार के हास्य—कौतुकों को करती हुईं इस सभा को आनन्दित कर रही हैं ॥१६॥

एवम्भवति श्रीमत्याः राममातुः शभा शुभा ॥
यामेदिन स्योत्तरैकं निशा पूर्वार्द्धं यामके ॥२०॥

इस प्रकार सुन्दर कल्याण स्वरूपा, श्री मती राम-माता दिन के प्रथम याम के उत्तर भाग में (६ से ११ बजे तक) और रात्रि के प्रथम याम के अर्ध भाग में (७ बजे से ८ बजे तक) सभा में बैठती हैं ॥२०।

अस्त्यस्य मण्डपस्याग्रे कक्ष्यान्तर द्वितीयके ॥
श्रीम त्कौशल राजस्य शभामण्डप मन्दिरम् ॥२१॥

इस मंडप के आगे दूसरे आवरण में श्रीमान कौशलेश राजाधिराज का सभागार—मंडप है ॥२१॥

नानामणि गणैश्चित्रं तोरणैश्च प्रकोष्टकम् ॥
क्वचिज्जलं स्थलं क्वापि विभ्रमं मणिभिः कृतम् ॥२२

वह राजसभा मंडप भी नाना प्रकार के मणिगणों से तोरण केतु पताका, कलशादिक से चित्र विचित्र शोभित है। उस मंडप में कहीं थल की जगह पर जल सरीखे, जल की जगह पर थल सरीखे इस प्रकार मणि रचनाओं द्वारा भ्रम कारक भूमि है ।२२॥

दिव्यास्तरण विस्तारै श्चमत्कृतमहीतलम् ॥
नागमुक्ता गुम्फितैश्च तोरणै र्द्वारिभाषितम् ॥२३॥

इस प्रकार की भूमि में दिव्य बिछे हुए वस्त्रों के चमत्कार से इस प्रकार की भूमि गज मुक्ताओं से गुम्फित (गुथे हुए) तोरणों द्वारा प्रकाशमान फाटकों वाले ॥२३॥

स्वर्णसूत्राम्बरावृत्तं रत्न स्तम्भैः सहस्रकैः ॥
आदित्य कोटि संकाशं कल्प पादप सन्निभम् ॥२४॥

मण्डप में स्वर्ण सूत्रों के बने हुए वितान परदादिकों से शोभित सुन्दर चित्र विचित्र हजारों खम्भाओं से करोड़ों सूर्यों के समान प्रकाश करने वाले, प्राणियों के मनोरथ पूर्ण करने वाले कल्प वृक्ष के समान उस राज मंडप के अन्दर एक कल्प वृक्ष है ॥२४॥

तत्र सिंहासनं दिव्यं विशालं कलधौतकम् ॥
नानारत्नैश्च खचितं नानावर्णैं विराजितम् ॥२५॥

उस कल्प वृक्ष के नीचे दिव्य विशाल स्वर्ण के नाना रत्न खचित सिंहासन में नाना वर्णों के चित्र विचित्र चित्र शोभित हैं ।४५॥

स्तम्भैः सत्कृद्विभागैश्च वितानध्वज मण्डितम् ॥
तत्रपद्मासनं दिव्य काञ्चनीयं प्रफुल्लवत् ॥२६॥

सुन्दर विभाग पूर्वक खम्भों से सजा हुआ वह सिंहासन वितान व ध्वजा से भूषित हैं उस सिंहासन के अन्दर स्वर्णमयी खिला हुआ दिव्य कमल का आसन है ॥२६॥

राजतेतत्र राजेन्द्रः श्रीमद्दशरथः प्रभुः ॥
शासकः सर्वलोकानां शक्तिमान् बलवा न्गुणी ॥२७॥

उस कमलासन पर राज राजेन्द्र श्री मान दशरथ जी महाराज सर्व लोकों के शासक प्रभु विराजमान है जो महान् शक्तिमान, बलवान, गुणसान हैं ॥२७॥

समीपे तस्यभागेऽग्रे जानुमालम्ब्य दक्षिणम् ॥
राजते रामभद्रोसौ वामेतु लक्ष्मणो बली ॥२८॥

महाराज चक्रवर्ती जी के समीप आगे में दाहिनी तरफ दहिना घुटना को टेककर श्री राम भद्र जू विराजे हुए हैं और उसी प्रकार वाम भाग से बड़े बलवान श्री लक्ष्मण जी विराजे हुए हैं ॥२८॥

सत्रुघ्नो भरतश्चैवं चत्वारः सुखमाश्रयाः ॥
काकपक्षधराः सर्वे सर्वे सर्वाङ्ग भूषिताः ॥२९॥

तथा इसी प्रकार श्री शत्रुघ्न और श्री भरत जी भी विराजे हुए हैं—ये चारों कुमार सुख के आश्रय, काम शःइस जुल्फ वाले सब के सब सर्वाङ्ग भूषित हैं ॥२९॥

विशालाक्ष्याहि सर्वे स्युः सर्वे रम्य गुणाअपि ॥
महोजसो महावीरा धनुर्वेद विदोपि च ॥३०॥

तथा सभी विशाल नेत्र वाले रमणीय गुण स्वभाव वाले महान् तेजस्वी, बलवान, धनुर्वेद के विद्वान धनुष धारी हैं ॥३०॥

खड्ग चर्म धनुर्वाणा न्धृत्वा खेलन तत्पराः ॥
पुरस्त्री पुरुषाणा न्तु स्व पुत्रा इव मुत्प्रदाः ॥३१॥

तलवार ढाल, धनुष वाणादिकों को लेकर खेलने के लिए उत्सुक हुए, पुर की स्त्री पुरुषों के लिए अपने पुत्रों की तरह आनन्द देने वाले हैं ॥३१॥

चत्वारोपि गुणाधिक्याः सुखदाः सुखमाधिकाः ॥
प्रवर्द्धकाः पितुः प्रीते मातुश्च स्वकीयकै र्गुणैः ॥३२॥

यद्यपि ये चारों कुमार गुणों में अत्यन्त बढ़े चढ़े, सब को सुख देने वाले, स्वयं महासुख भोगकर अपने गुणों से माता पिता के प्रेम को बढ़ाने वाले हैं ॥३२॥

तथापि रामभद्रो सौ श्यामसुन्दर विग्रहः ॥
बल रूप गुणैः रम्यै राजते हि विचक्षणैः ॥३३॥

श्री श्री श्री रामभद्र जू तो श्याम सुन्दर विग्रह, बल रूप गुणों में अत्यन्त रमणीय अति ही विलक्षण हैं ॥३३॥

लक्ष्मणादि त्रय स्तस्य कुर्वन्ति दास्य मुत्तमम् ॥
परस्परं प्रीतिमन्तः सर्वे सन्तिस्वभावतः ॥३४॥

इन श्री रघुनाथ जी के लक्ष्मण जी आदि तीनों भाई उत्तम दासता को सम्हाले रहते हैं यद्यपि सब के सब परस्पर अत्यन्त अनुराग मयी स्वभाव वाले हैं तो भी अपने को श्री राम जी का दास मानते हैं॥३४॥

दृष्ट्वा दृष्ट्वा कौशलेन्द्र स्तान्महानन्द मापयौ ॥
तेपि सर्वे पितृभक्ताः धर्मज्ञाः नीति वेदिनः ॥३५॥

इन सब कुमारों को देख देखकर महाराज कोशलेन्द्र जी अत्यन्त आनन्द को प्राप्त होते हैं क्योंकि वे कुमार भी सबक सब पितृ भक्त धर्मज्ञ नीति को जानने वाले हैं ॥३५॥

एतदग्रे वशिष्टादि मुनयः परिवर्त्यच ॥
स्वस्तीति वचनं तस्मि न्ब्रु वन्तोसंविशन्ति ते ॥३६॥

इसके आगे श्री वसिष्ठादिक मुनि लोग चारों तरफ मण्डल बाँधकर बैठे हैं । मुनि लोग जो भी सभा में आते हैं वे महाराज श्री चक्रवर्ती जी के लिए स्वस्ति वाचन आदि मङ्गलमय अशीर्वादात्मक मन्त्रों को उच्चारण करते हुए आते हैं ॥३६॥

तेषां महामुनीनांतु मण्डलाग्रे सुभाषिणः ।
सुमन्ताद्या दीप्तिमन्तोऽमात्यास्तिष्ठन्ति सम्वृताः ॥

रवि वन्श्या महात्मान स्तेजवन्तो वलाधिकाः ॥
अमात्यानां मण्डलाग्रे तिष्ठमानाः समन्ततः ॥३८॥

उन मुनि मण्डल के आगे सुन्दर वाणी बोलने वाले बुद्धि के चमत्कारों से प्रकाशमान् सुमन्त्र आदि मन्त्री लोग चारों तरफ बैठे हैं इस मान्त्र मण्डल के आगे बड़े बलवान, तेजस्वी, महात्मा, सूर्यवंशी राजा लोग चारों तरफ से बैठे हैं ॥३८॥

मण्डलाग्रेऽर्क वन्श्यानां भूमिपाला महौजशः ॥
खचिन्मणि कोरीटादि भूषणैश्च विभूषिताः ॥३६॥

इन सूर्य वंशी राजाओं के मण्डल के आगे मणि खचित किरीटादि भूषणों से भूषित महान् पराक्रमी अन्य राजा लोग बैठे हुए हैं ॥३६॥

हितैषिण स्तु ते सर्वे स्वनाथे कौशलाधिपे ॥
परिवार्य्य तिष्ठमाना शोभन्ते शुभदर्शनाः ॥४०॥

ये सबके सब महाराज श्री कौशलेश जी के लिए अत्यन्त हित रखने वाले महाराज के चारों तरफ बैठे हुए अपनी सुन्दरता से शोभित है ॥४०॥

तस्यामेव शभायां श्री राजराजेश्वरस्य तु ॥
ब्रह्मेन्द्राद्याः सुराः सर्वे दिग्पाला वरुणादयः ॥४१॥

राज राजेश्वर महाराज श्री चक्रवर्ती जी की इसी राज सभा में ब्रह्मा इन्द्र आदि सभी देवता लोग तथा वरुणादि सभी दिकपाल लोग ॥४१॥

अङ्गीकृताज्ञाः सर्वे ते वध्वाञ्जलि परिस्थिताः ॥
असुराश्चाप्यनन्ताश्च तस्य सिष्टि परायणाः ॥४२॥

ये सब के सब हाथ जोड़कर के महाराज श्री चक्रवर्ती दशरथ जी की आज्ञा का पालन करते रहते हैं तथा दैत्यादिक अनन्त असुर लोग बड़ी नम्रता पूर्वक आज्ञा पालन कर रहे हैं ॥४२॥

रुक्म दण्डधरास्तत्र खचिन्मणि विभूषणाः ॥
प्रतिहाराः स्थापयन्ति भूपालान्योग्य पंक्तिषु ॥४३॥

सभा में आने वाले राजादिकों को रत्न खचित स्वर्ण दण्ड को हाथ में लिए हुए सुन्दर भूषित प्रतिहारी लोग यथा योग्य स्थानों पर सब को बैठा रहे हैं ॥४३॥

पृष्टे वामे दक्षिणे तु तस्य सिंहासनान्तिके ॥
भूषिता दासवर्गास्ते छत्र चामर हस्तकाः ॥४४॥

महाराज चक्रवर्ती जी के दाहिने बाँए, पीछे, सिंहासन के समीप सुन्दर भूषणों से भूषित दासवर्ग चवर, छत्रादि सेवा सौं जों को हाथों में लिए हुए खड़े हैं ॥४४॥

गुत्सास्तु केकिपक्ष्यानां धृत्वाता न्वहुशः करे ॥
परिस्थाः शोभयन्तस्तेभूषणांग परिस्कृताः ॥४५॥

कोई मुर्छल लिए हुए सुन्दर भूषणों से भूषित खड़े हुए अति शोभित हो रहे हैं ॥४५॥

गानं कुर्वन्ति गन्धर्वाः नृत्यन्तिमेनकादयः ॥
एवं राजति राजासौ शभाया मतुलप्रभः ॥४६॥

गंधर्व लोग गान कर रहे हैं। मेनकादिक अप्सराऐ नृत्य कर रही हैं इस प्रकार अतुल प्रभाव वाले महाराज श्री चक्रवर्ती जी राज सभा में बैठे हैं ॥४६॥

इति श्रीशङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीताराम रत्न मञ्जूषायां
अयोध्या ख्याने श्रीराजभवन वर्णनो नाम
सप्तदशः स्सर्गः ॥१७॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां श्री अयोध्या ख्याने
राजभवन वर्णनो नाम सप्तदशः सर्गः ॥१७॥

अथास्ति भद्रबृन्दस्य पश्चिमायांतु सान्तरम् ॥
दिशि सौराजिका ख्यं हि वनं कृत्तिमकं शुभम् ॥१॥

भद्र वृन्द वन के पश्चिम दिशा में सुन्दर विस्तार वाला सौराज्य नाम का वन है जिसमें कृत्रिम रचना बहुत ज्यादा है ॥१॥

तत्र चावरजा वस्य श्रीमद्दशरथस्यतु ॥
राजे ते रविसद्दसौ प्रसादान्तर प्रोद्यते ॥२॥

उस वन में महाराज श्री दशरथ जी के सूर्य क समान प्रकाश वाले वीर भाइयों के महल हैं ॥२॥

खचिद्रत्नोच्च शिखरे पताकाध्वजे शंकुले ॥
निरन्तरानकस्वाने जनैः संकुल वीथिके ॥३॥

जिन महलों में ऊँची ध्वजाऐं. तोरण, केतु, पताकादिक सघन लगे हुए रत्न खचित ऊँचे शिखर हैं जहाँ फाटकों पर नित्य दुन्दुभियों का नाद और गलियों में जनता की भीड़ होती ही रहती है ॥३॥

तद्वनश्चा तिरम्यंस्या त्सदैवतु नृपे यथा ॥
प्रफुल्लोत्पल कासारै हंश सारस सेवितैः ॥४॥

उस वन में ऋतुराज बसन्त की शोभा सदैव अति रमणीयता से बनी रहती है। सरोवरों में कमल खिले रहते हैं हंस, सारस, मृगों की पंक्ति सजी रहती है। भृङ्गादि पक्षियों का कल्लोल मचा रहता है ॥४॥

फलभारा नम्र शाखैः पादपैः परिवेष्ठितम् ॥
प्रफुल्ल पुष्प वृत्यैश्च शोभितान्तरक स्थलम् ॥५॥

फलों के बोझा से झुकी हुई डाल वाले वृक्षों की पंक्तियों से घिरा हुआ है। उन फलित वृक्षों की पंक्तियों के अन्दर फूलों से लदे हुए वृक्षों की पंक्तियाँ अपनी वेदिकादिक रचनाओं की शोभा से प्रकाशित हैं ॥५॥

उपेतं मृग यूथैश्च पालितैस्तु तदात्मजैः॥
कण्ठ पाद भूषितैश्च पाठितैश्च प्रपालकैः ॥६॥

मृगाओं के झुण्ड उन फूलों की लता कुञ्जों के अन्दर पले हुए हैं। प्रत्येक मृगों के चरण कण्ठ सींग पूँछ व पीठ सुन्दर भूषणों से उन बाग के मालियों द्वारा सजे हुए हैं ॥६॥

अथानयो रहस्यं य न्मन्दिरं सप्तरोधकम् ॥
नानारत्नैश्च खचितं स्तम्भपंक्ति प्रकाशितम् ॥७॥

इस बगीचा के अन्दर महाराज चक्रवर्ती जी के भ्राताओं के महल सात २ आवरण के रत्न खचित खम्भों की पंक्तियों से प्रकाशमान सुन्दर रहस्यमय हैं ॥७॥

स्त्र्यागारैः पुरुषागारै मन्त्रागारैश्च क्रीडकैः ॥
तथा च कल सूत्रात्म व्यूहागारै र्विचित्रकैः ॥८॥

स्त्रियों के महल, पुरुषों के महल, मन्त्रागार, विशाल महल, यन्त्रागार, चक्राकार यन्त्रों के महल जो कि अति विचित्र हैं सब शोभित हैं ॥८॥

लोकचित्र वदागारैः सभागारै र्महत्तरैः ॥
त्रिविधैः पवनागारैः पाकस्थानै स्तथापरैः ॥६॥

सम्पूर्ण विश्व के चित्र सरीखे महल और बड़े २ सभा महल, जिन में शीतल, मन्द, सुगन्ध वायु बहता रहता है ऐसे हवा के महल, भोजनागार तथा और भी बहुत प्रकार के महल ॥६॥

रसान्न शाकसन्धान वेषवार गृहाभिधैः ॥
मध्यान्ह शयनागारै नृत्यागारै बृहत्तरैः ॥१०॥

रस, अन्न, सांक, मैरेय (मधु आसव) मसालादिकों के महल, मध्यान्ह सयनागार, बहुत बड़े २ नृत्यागार ॥१०॥

तथा च लेखकागारैः वित्तागारै स्त्रिधापरैः ॥
रचितैः स्वर्ण रत्नैश्च सर्वैश्च जन रक्षितैः ॥११॥

दफ्तर आमदनी खर्च और जमा के हिसाब से तीन भेद वाले खजाने का महल—ये सब स्वर्ण रत्नों से खचित सब प्रकार से सज्जित, सुसेवकों से सुरक्षित हैं ॥११॥

तथापरैः गजागारैः स्यन्दनागारकै स्तथा ॥
अश्वागारै र्गो गृहैश्च वृषभागारकैः पुनः ॥१२॥

तथा गजागार, रथागार, अश्वागार गौ शाला, वैलों के महल तथा और भी ॥१२॥

उष्ट्रागारै र्महिषीनां महिषानां तथा विधैः ॥
मृगागारै र्भेदयुक्तै र्यथा च गवयादिभिः ॥१३॥

ऊँटा गार, महिषागार, (भैंसी भैंसों के महल) मृगाओं के महल और विविध भेद युक्त पशुओं के महल ॥१३॥

क्रीडा पक्षि गृहैश्चैवान्यथा तोविषयैः परैः ॥
राजविद्या गृहैश्चान्यै राग विद्या गृहै स्तथा ॥१४॥

खेलने के पक्षियों के महल और भी बहुत से विषयों के महल, राजविद्या, रागविद्याओं के महल ॥१४॥

राज्योपकरणागारै स्तथावादित्र गेहकैः ॥
शस्त्रविद्या गृहैर्दिव्यैः कला गार समूह कैः ॥१५॥

राजकीय सामानों के महल बाजाओं के महल, शस्त्रविद्या के महल, सामूहिक दिव्य कलाओं के महल ॥१५॥

दानोत्सव गृहै रेतैः सर्वैः कक्षया समावृताः ॥
रचिता मणिभिर्दिव्यैर्रक्षिता दिव्यकिंकरैः ॥१६॥

दान, उत्सवों के महल—इस प्रकार के महलों से भाइयों के सातों आवरणों से घिरे हैं जो दिव्य रत्नोंसे रचित दिव्य सेवकोंसे सुरक्षित हैं ॥१६॥

एवंसद्विभवावेतौ श्रीमद्दशरथस्यच ॥
महारथी विक्रमाग्रौ राजेते सत्सुखात्मनौ ॥१७॥

इस प्रकार सुन्दर ऐश्वर्य से परिपूर्ण महाराज श्रीदशरथ जी के पराक्रम में अग्रगण्य महारथी भ्राताओं के सुन्दर सुख भोग के लिए ये महल हैं ॥१७॥

सौराजिक वनस्यैव सान्तरं दक्षिणायने ॥
श्रोत्र शाख वनं रम्यमन्तरो पवनान्वितम् ॥१८॥

इस सौराजिक वन के दक्षिण तरफ सुन्दर विस्तार वाले श्रोत्र शाख वन है जो अत्यन्त रमणीय वन उपवनों से शोभित है ॥१८॥

ब्राह्मणानिवसन्त्यत्र मुनयोपि महर्षयः ॥
भिन्नान्युप वना न्येषां तीर्थसान्निध्यकानि च ॥१९॥

इस वन में मुनि, महर्षि, ब्राह्मण लोग वास करते हैं। प्रत्येक महात्माओं के महल वन, उपवन, तीर्थादिकों से अलग २ शोभित हैं ॥ १॥

वशिष्टस्यौ दम्वरीयं वनं तत्र च शोभनम् ॥
तस्यासन्ने गालवाख्यं वामदेवस्य सत्फलम् ॥२०॥

औदम्वरीय वन में श्री वसिष्ठ जी महाराज का महल शोभित है। समीपस्थ गालव नामक वन में वामदेव जी का महल है जहाँ सुन्दर फल युक्त वृक्षों की पंक्तियाँ हैं ॥२०॥

एङ्गुदीयं तथा चैकं भारद्वाजस्य तत्रवै ॥
यग्यवल्कस्य पालाशं विश्वामित्रस्य पाटलम् ॥२१॥

एङ्गुदीय वन में भरद्वाज जी का महल है। पलास वन में याज्ञवल्कि जी का महल है और पाटल वन में विश्वामित्र जी का महल है ॥२१॥

रसालं गौतमस्यास्ति वाल्मीकस्यतु प्लाक्षकम् ॥
रसालायं हारितस्य पुलहस्यतु मौर्य्यकम् ॥२२॥

रसाल वन में गौतम जी का महल है। प्लाक्ष वन में वाल्मीकि जी का वन है। रसाल वन में हारित जी का महल है मौर्य्यक वन में पुलह जी का महल है ॥२२॥

पौष्कराख्य न्तु व्यासस्य पराशरस्य वार्हतम् ॥
सुकस्यै साम्वरं नाम चाम्पेयं तत्परं हियत् ॥२३॥

पौष्कर वन में व्यास जी का वार्हत वन में परासर जी का महल है। साम्वर वन में शुक देव जी का महल है। चाम्पेय वन में ॥२३॥

तत्रैं वागस्त्यो भगवा नृसभ्राता वेद पारगः ॥
सुतीक्ष्णादि शिष्यैश्च लोपामुद्रायुतः सुधीः ॥२४॥

श्री सुदर्शन जी का तथा वेद मर्मज्ञ श्री अगस्त्य जी का महल है तथा और भी सुतीक्ष्णादिक शिष्य औ लोप मुद्रा जी के सहित सुन्दर बुद्धि वाले लोग निवास करते हैं ॥२४॥

एवमाद्यास्तु यावन्ति देव ब्रह्मर्षयोपिच ॥
उपाशयन्ति श्रीरामं वसन्तोत्र वने सदा ॥२५॥

इस प्रकार देवर्षि ब्रह्मर्षि आदिक जितने भी मुनि लोग है इस वन में सदा निवास करके श्रीराम जी को उपासना करते हैं ॥२५॥

आकल्पं मानुषेलोके चतुवर्ग स्यसिद्धये क्रियात्मकान् ॥
विस्तारयन्तो वाक्या न्स्वान्निवसन्त्यन्य रूपतः ॥२६॥

और एक रूप से जितने मुनि लोग हैं ये सब मनुष्य लोक में निवास करके कल्पों पर्यन्त ब्रह्मचर्य, गृहस्थ, वानप्रस्थ, सन्यास चारों आश्रमों को सब वर्णों का अपने शब्दों से सुन्दर शिक्षा का विस्तार करके निवास करते हैं ॥२६॥

सौराजिका दुत्तरंतु वनं सौवृन्द नामकम् ॥
तत्र चाष्टौ सुमन्ताद्याः सचिवा निवसन्तिवै ॥२७॥

इस सौराजिक वन से उत्तर तरफ में सौ वृन्द नामक वन है जहाँ सुमन्त आदिक आठ मन्त्री निवास करते हैं ॥२७॥

वनं तत्परमं रम्यं मृग पक्षि समन्वितम् ॥
सफलैः पादपैर्युक्तं काशारैः कमलान्वितैः ॥२८॥

वह वन अत्यन्त रमणीय मृग पक्षियों से भरा हुआ फल संयुक्त वृक्षों से, कमल संयुक्त सरोवरों से और अपनी वन सम्पत्तियों से अत्यन्त शोभित है ॥२८॥

नाना पुष्प लताभिस्तु नानावर्णा प्रदिश्यते ॥
तल्लुब्ध षट्पदानाञ्च वृन्दैर्झङ्कारिता दिशम् ॥२९॥

विविध प्रकार के फूल, वृक्ष, नाना रङ्ग की लताए, उन प्रलोभित हुए भौरों का गुञ्जार दशों दिशाओं में प्रकाशित हो रहे है ॥२९॥

एतद्वने मन्दिराणि तेषां स्फाटिक कोटके ॥
ध्वजैः सूक्ष्मैः पताकाभिः कलशैः सूचितानिच ॥३०॥

इस वन में विविध प्रकार के महलों के बाहरी भाग में स्फटिक मणि का कोट ऊँची ध्वजा पताका का कलशादिकों से दूर दिशाओं तक सूचना दे रहा है ॥३०॥

विभागवैभवागारैः शोभितानि सभादिभिः ॥
रत्नैस्तु रचितैः सर्वैं राजमन्दिर शादृशैः ॥३१॥

विविध सम्पत्तियों के अलग २ महल शोभित हैं प्रत्येक सभादिक महल अद्भुत रत्नों से खचित इष के सब राजमहल के सदृश हैं ॥३१॥

अथात्र कौशलेन्द्रस्य भवना स्कोण दक्षिणे ॥
वनं तु चित्रकं नाम वलितं दिव्यपादपैः ॥३२॥

अब श्री चक्रवर्ती जी महाराज के दक्षिण कोण पर चित्रक नामक वन है जो दिव्य लता वृक्षों से भरा है ॥३२॥

सरोभिर्मणि बद्धैश्च सरोजाकुलितैः शुभैः ॥
क्रीडमानैर्युग्मकैश्च हंश सारस बृन्दकैः ॥३३॥

जहाँ मणियों के घाट बांधे सरोवर, सुन्दर कमलों से भरे हुए दो २ करके हंस सारसों के वृन्द विलास कर रहे हैं ॥३३॥

नृत्यद्भिश्च मयूरैस्तु पठद्भिः पाठितैः सुकैः ॥
विहङ्गानाना मन्येषां संघटैश्च मनोहरम् ॥३४॥

मयूर नृत्य कर रहे हैं, वन में विहार करने वाले सुग्गाओं को पढ़ा रहे हैं। और भी पक्षी भ्रम रादिकों के समूह मन को हर रहे हैं ॥३४॥

नानाकारैश्चित्र मृगैः कण्ठ पाद विभूषितैः ॥
काञ्चना श्रित शृङ्गैश्च विचरद्भिर्विराजितम् ॥३५॥

विविध रङ्ग के चित्र विचित्र मृग जिनके कण्ठ, चरण, सींग सुन्दर भूषित हैं और अपनी चाल से झनकार मचाते हुए बिचर रहे हैं ॥३५॥

पुष्पिताभि र्लताभिस्तु सुगन्धपूरिता दिशम् ॥
श्रेणिभि र्मधुलुब्धानां गुञ्जितं मधुपालिनाम् ॥३६॥

खिले हुए पुष्पों की लताऐं अपनी सुगन्धि से दिशाओं को भर रहे हैं। भ्रमर झुण्ड के झुण्ड गूँजते हुए शहद पी रहे हैं ॥३६॥

भूमि प्रदेशकास्तत्र नानावर्णैश्च रत्नकैः ॥
परिस्कृता मयूखैश्चावृताः सद्भिः समन्ततः ॥३७॥

उस चित्रक वन की भूमि नाना रङ्ग के रत्नों से सुन्दर रचना की गई अपनी किरणों से दिशाओं को प्रकाशित कर रही है ॥३७॥

एव म्भूते वनस्यान्ते महत्प्रासाद पंक्तिषु ॥
प्राकार सप्त गुप्तेषु राजते भरता नुजः ॥३८॥

इस प्रकार के वन में भीतर बड़े २ महलों की पंक्ति सात आवरण परकोटाओं से घिरी हैं। इस प्रकार यह श्री शत्रुघ्न जी का निवास स्थान है ॥३८॥

द्वारत्रिक चतुर्द्वाराः कक्ष्या वेश्मान्त मण्डलाः ॥
सप्त सप्त चतुर्दिक्षु सन्ति सज्जन रक्षिताः ॥३९॥

प्रत्येक दिशाओं के फाटक तीन मुख वाले हैं इस प्रकार चारों दिशाओं में फाटक वाले सातों आवरण परकोटा भीतरी निवास महल पर्यन्त हैं प्रत्येक दिशाओं के फाटकों पर पहरा करने वाले महान् सज्जन हैं ॥३९॥

प्राकार मण्डले चाष्टौ स्यन्दनाऽश्वोच सद्गजाः ॥
उष्ट्रा गावोमहिष्यश्च शैरिभा वृषभास्तथा ॥४०॥

इस प्रकार महलोंके सातों आवरणों के सब से बाहरी आवरण में रथ, घोड़े, हाथी, ऊँट, गाय, भैंसा, भैंसी, बैल ॥४०॥

गवयादि मृगाश्चान्ये वन्याश्च बहवोद्भुताः ॥
येषा यथोचिताः सन्ति गृहा स्त त्पालकै युताः ॥४१॥

पक्षी, मृग और भी वन के होने वाले अद्भुत जानवर जिनको जो उचित है उन सबके पालने वालों के सहित अलग २ महल बने हैं ॥४१॥

येच एतान्पालयन्ति विनीयभूषयन्तिये ॥
परिवार समेतानां तेषां तत्रैव सद्गृहाः ॥४२॥

जो इन जानवरों को पालने और शृङ्गार करने वाले नौकर है वे भी अपने परिवार के सहित वहीं पर सुन्दर महलों में निवास करते हैं ॥४२॥

एवञ्च पक्षि जातीनां दूरदेश प्रजायिनाम् ॥
अत्रैव मण्डले सन्ति यथोचित गृहोत्तमाः ॥४३॥

इसी प्रकार दूर देश में पैदा होने वाले बहुत जाति के पक्षियों का उत्तम महल भी इसी आवरण में है ॥४३॥

आदि प्राकारकस्यास्य गोपुरेण समानि च ॥
त्रिक द्वाराणि चत्वारि चतुर्दिक्षु सविस्तरैः ॥४४॥

इस प्रकार ये सब महल परकोटा के फाटकों में ऊँचे गोपुरों की समता करते हैं। चारों दिशाओं के गोपुरों के फाटक तीन मुख वाले सुन्दर विस्तृत हैं ॥४४॥

गवाक्ष द्वार सद्द्वारैः शोभनानि समुहकैः ॥
रत्नतोरण चित्राणि रत्नकुम्भशिरांशि च ॥४५॥

इन फाटकों के गोपुर छज्जा, झरोखा, दरवाजे इन सबके अंग सुन्दर शोभित बहुत ऊँचे हैं। शिखरों पर चित्र विचित्र तोरण और कलश शोभित हैं ॥४५॥

उच्चध्वज पाताकाभि र्दूरा त्सन्दर्शितानिनै ॥
रक्षितानि महावीरैर्जनैः संकुलितानि च ॥४६॥

और ध्वजा पताकादिक दूर से दीख पड़ते हैं, द्वारों पर रक्षा करने वाले महा बलवान् सज्जन भीड़ के भीड़ खड़े हैं ॥४६॥

अथ द्वितीया वरणे त्रिक द्वार चतुष्टये ॥
सौविदल्लै रचिते स्यात्प्रमदा वन संहतिः ॥४७॥

अब दूसरे आवरण के चारो दिशा वाले फाटक भी तीन दरवाजा वाले हैं। प्रत्येक फाटकों पर जनाना महल की रक्षा करने वाले सज्जन वृन्द है ॥४७॥

स्वर्ण रत्न वितर्दि स्था सुधास्वादु फलान्विताः ॥
मणि दीप्ति प्रकाण्डा श्च शाखाभिश्छत्र वद्वृताः ॥४८॥

इस दूसरे आवरण में स्वर्ण रत्न के वेदिकाओं वाले, अमृत के समान स्वाद देने वाले, फलों से लदे हुए मणियों के समान प्रकाशमान डालों जिनके एसे छत्राकार वृक्षों की पंक्ति शोभित है ॥४८॥

फलभारा नम्र शाखाः स्वजातीनां तु पंक्ति भिः ॥
शाखिन स्तत्र शोभन्ते सर्वर्त्तु फलिन श्च ते ॥४९॥

प्रत्येक जाति के वृक्ष अलग २ पंक्तियों में अपने फलों के भार से प्रत्येक ऋतु की शोभा दे रहे हैं ॥४९॥

फलवन्त्यो लतास्तत्र द्राक्षादीना मनन्तराः ॥
विस्तृताः स्वर्ण दण्डाना म्मण्डपे फलगुच्छकाः ॥५०॥

किशमिश आदिकों की लताऐं भी फलों से भरी हुई मण्डप के स्वर्ण खम्भों पर फैलकर फलों के गुच्छे दिखा रही हैं ॥५०॥

मन्दारादि पुष्पवृक्ष्याः पुष्पयुक्ता लता स्तथा ॥
मणिभिर्रचिता स्त्वेव वेदिकासु विरोपिताः ॥ ५१॥

मणि रचित वेदिकाओं पर रोपे हुए मंदार आदिक पुष्पों के वृक्ष तथा बहुत सी पुष्पों की लताऐं शोभित हैं ॥५१॥

पक्षिणो वहु जातीया मृगाश्चापि विचित्रकाः ॥
नदन्ति क्रीडयन्त्यत्र स्वदन्ति तु फलानि ते ॥५२॥

इस प्रकार के लता और वृक्षों के वन में चित्र विचित्र अनेक जाति के मृग और पक्षी गूँजते, खेलते, फलों को खाते हैं ॥५२॥

वधूनां भिन्नभिन्नानि वनानिस्यु र्विभागतः ॥
सरांसि वेदिकास्तत्र मणिवद्धानि सर्वतः ॥५३॥

स्त्रियों के भी अलग २ विभाग से वन और भिन्न २ महल, मणि बद्ध सरोवर, वेदिकादि से चारों तरफ शोभित हैं ॥५३॥

कादम्बाः सारसा हंशाः क्रीडन्ति युग्म युग्मतः ॥
मयूरीभिर्मयूराश्च नृत्यन्ति सुखिनस्सदा ॥५४॥

कल हंस, हंस, सारसादि पक्षी दो २ होकर खेलते हैं। मयूर मयूरी नृत्य करते हुए सदा सुखी रहते हैं ॥५४॥

उत्तरन्ति सरस्याश्च बहुवारि विहङ्गमाः ॥
द्विरेफानां पंक्तयश्च गुञ्जन्ति मधु लुब्धकाः ॥५५॥

सरोवरों में बहुत रङ्ग के जल पक्षी तैरते हैं। कमलों पर भँवरों की पंक्तियाँ पराग के लोभ से गूँजती हैं ॥५५॥

नाना वितर्द्य स्तत्र नानारत्नै र्विनिर्म्मिताः ॥
क्रीडार्थे वनितानाश्च विचित्ररचनान्विताः ॥५६॥

रङ्ग २ की वेदियाँ रङ्ग २ के रत्नों से निर्मित हैं जिन में स्त्रियों के खेलने की अनेक रचनाऐं बनी हुई हैं ॥५६॥

काचि न्निम्नो च्चका काचि दष्टास्रा चतुरस्रकाः ॥
षोडशास्त्रापि वृत्ता च जालभित्ति स्वकाञ्चना ॥५७॥

बहुत सी वेदिया ऊँची हैं; बहुत सी नीची हैं; कोई अष्ट कोण हैं; कोई चतुष्कोण हैं; कोई सोलह सीढ़ी वाली गोल हैं जिनकी भित्तियों में स्वर्ण सूत्रों की जालियाँ बनी हैं ॥५७।

रथाकारा वृता कापि पीठ युक्तापि काचन ॥
द्विखण्डापि त्रिखण्डापि चतुः खण्डापि काचनः ॥५८॥

तथा इसी प्रकार के कुञ्ज भी कोई रथाकार, कोई गोल कोई पीठस्थान (पृष्ठ स्थान) वाले भी दो खण्डे के तीन खण्डे के तथा चार खण्डे के स्वर्ण रचित कुञ्ज हैं ।५८॥

एवं त्रिपञ्चशिखरा वातायन गवाक्षकाः॥
मणिस्तम्भालि सद्दीप्ता द्वार तोरणभास्वका ॥५९॥

इसी प्रकार कोई तीन शिखर वाले कोई पाँच शिखर वाले छज्जा झरोखा तथा प्रकाशमान मणि स्तम्भावली और द्वार, अपने प्रकाश से प्रकाशमान तोरण वाले हैं ॥५९॥

प्रतिमाभिः परिवृता स्त्री पुंशा मृगपक्षिणाम् ॥
वैद्रुमा मौक्तिका काचि त्काचिन्माणिक्य काञ्चना ॥६०॥

किसी कुञ्ज में स्त्री पुरुषों की प्रतिमाऐं, मृग पक्षियों की प्रतिमाऐं बनी हैं। ये सब कोई विद्रुम मणि की कोई मुक्ताओं की, कोई मणियों की, कोई स्वर्ण की प्रतिमाऐं हैं ॥६०॥

काचिन्मारकतापिस्या त्काचित्स्फाटिक निर्म्मिता ॥
काचित्परिस्कृता नाना मणिचित्रैश्च शोभित ॥६१॥

कोई मर्कत मणि की, कोई स्फटिक मणि की, कोई पचरङ्गा मणियों की चित्र विचित्र कुञ्जें, कुञ्जों, के अनुकूल प्रतिमाएँ शोभित हैं ॥६१॥

काचिल्लताभ्यन्तरा चा घन पादप सम्भृता ॥
जलमध्यान्तरा काचि त्काचित्तु जलजन्त्रिका । ६२॥

कोई कुञ्जें सघन लता और वृक्षों से घिरी हुई हैं; कोई कुञ्जें जल के भीतर हैं; कोई कुंजें जल जंत्रों के द्वारा फुहाराओं से घिरी हुई हैं ॥६२॥

काचित्त भ्रामण व्यूहा द्वारैक रुद्ध द्वारिकाः ॥
काचिद्वाद्यान्तरा सातु सम्पर्का नाद कारिणी ॥६३॥

कोई कुञ्जे भ्रमात्मक व्यूहाकार बने हुए हैं । किसी एक दरवाजे के बन्द करने से सब दरवाजे बन्द होते हैं । कोई गर्भित बाजा, वाली कुञ्जें स्पर्श मात्र से ही विविध सङ्गीत का नाद करने लगती हैं ॥६३॥

कुत्र चिद्दीर्घिकानिम्ना गृहपंक्तिभिरावृताः ॥
त्रिकोणा चाष्ट कोणापि चतुरस्रा षडस्रका ।६४॥

कोई कुञ्जें चारों तरफ महलों से घिरी सरोवर वाली है । कोई कुञ्जें त्रिकोण अष्टकोण, चौकोण, षटकोण आकार वाली हैं ।६४॥

प्रफुल्ल कञ्ज पर्याप्ता हंश सारस संयुता ॥
प्रतिध्वानैस्तु नृत्यद्भिर्मयूरै श्चाति शोभिता ॥६५॥

इसी प्रकार की कुञ्जों के भीतर तालाब भी हैं जिनमें पर्याप्त कमल खिले हुए, हंस सारसादिकों का कल्लोल और मयूरों के नृत्य शोभित हो रहे हैं । ६५॥

वाप्यागारोध्द्वं गारेषु तत्र तस्य विलासिनः ॥
विलासाय प्रिया सार्द्धं मस्ति सर्वोपकार्य्यकम् ॥६६।

बहुत से महल बावड़ी के अन्दर हैं; बहुत से महलों में बावड़ियाँ हैं । इन महलों में विलासियों के योग्य सब प्रकार की सामग्री तैयार है ॥६६॥

प्राकारेत्र त्रितीयेपि स्वर्णमाणिक्य संस्कृते ॥
पूर्वोक्त वन्मार्ग कक्ष्या श्चतुर्दिक्षु परिस्कृताः । ६७॥

यहाँ तक दूसरे आवरण का वर्णन हुआ अब तीसरे आवरण का वर्णन करती हूँ तीसरे आवरण में भी स्वर्ण, मणि, माणिक्यों से रचना किए हुए द्वितीय आवरण की तरह से ही सब रचनाऐं आवरण की चारों दिशाओं में सुन्दर सुसज्जित हैं ॥६७॥

अथ प्राकारान्तराले सन्तिकक्ष्याः प्रविस्तराः ॥
वस्त्वाभीधास्त्वनन्ता श्च वीभक्ताः प्रती संस्कृताः ॥६८॥

एक आवरण और दूसरे आवरण के बीच का जो अन्तराल है वह भी विस्तार से वस्तुओं के भेद से नाम वाला अलग २ अनन्त रूप से सुन्दर सुसज्जित हैं॥६८॥

रसगृहा श्चान्न गृहा वेषवार गृहा अपि ॥
सिद्ध पाक गृहा स्तेतुभत्त भोजन पायसा: ॥६६॥

कहीं रस के महल, कहीं अन्न के महल, कहीं मसाले के महल कहीं सिद्ध अन्न (मिठाई आदि) के महल वे भी भक्ष्य, भोज्य, लेह्य, पेयभेद से तथा दूध की भी मिठाइयों के इसी भेद से अलग अलग महल हैं ॥६६॥

करोति भोजनं यत्र स्त्रीभिः पुम्भिः समेदकाः ॥
सान्तरेणैव ते सन्ति समयोचित विस्तराः ॥७०॥

स्त्री पुरुषों के भेद पूर्वक भोजन के महल भी हैं । जो समय के अनुसार उचित विस्तार वाले अलग अलग हैं ॥७०॥

चतुर्विधानां वस्त्राणां स्थूल सूक्ष्मेन भेदतः ॥
स्त्री पुंसामपि भेदेन नील पीतादि भेदतः ॥७१॥

[सूती, ऊनी, कृमि (कटिया) और मकड़ी (पाट) भेद से दो प्रकार के रेशम] इन चार भेद वाले वस्त्रों के इन में भी मोटे और महीन के भेद से तथा और स्त्री पुरुषों के भेद से तथा नील पितादिक रङ्गों के भेद से भी वस्त्रों के अलग २ महल हैं ॥७१॥

एवश्चमत्कृताकारा रत्न रुक्म परि स्कृताः ॥
लक्ष्म निर्दिश्य संज्ञानां गृहाः सन्ति स्वनन्तराः ॥७२॥

इस प्रकार बड़े चमत्कार वाले रत्नों और सोने के बने हुए वस्तुओं के भेद से अलग २ नाम वाले ऐसे सुन्दर विस्तार वाले अनन्त महल हैं ॥७२॥

भूषणाना श्च गेहानि सन्ति सर्वाणि तत्र च ॥
यथोक्त भेद व्यक्तानि संस्कृतानि च तोरणैः ॥७३॥

सब प्रकार के भूषणों के भी महल हैं और जो महल जिस वस्तु के भेद से प्रसिद्ध हैं उसी प्रकार के आकार प्रकार से तोरण केतु कलशादिक रचना भी प्रसिद्ध है अर्थात प्रत्यक्ष है ॥७३॥

स्वर्णादीनाञ्च धातूना मागाराणि पृथक् पृथक् ॥
कक्ष्याश्च पृथगेतेषां त्रिकद्वार चातुष्टया ॥७४॥

स्वर्ण आदि सब धातुओं के महल अलग २ हैं उन की गलियाँ और पृष्ठ भाग भी तथा दिशाओं में तीन मुख वाले फाटक भी अलग २ भेद से हैं ॥७४॥

मलयागरु कस्तूरी काश्मीरश्च चन्द्र संज्ञकम् ॥
यत्तकर्दममिश्र ञ्च एषां तत्र गृहाः शुभाः ॥७५॥

मलयागिरि चन्दन, कस्तूरी, केशर, कपूर, कंकोल आदि वस्तुओं से मिला हुआ कुम्कुम तथा अलग अलग वस्तुओं के भी अलग २ घर सुन्दर हैं ॥७५॥

स्वाङ्गरागा भिधा कक्ष्या नैपथ्यापि च नामतः ॥
एष त्तृतीय प्राकारम्वृत्तं ज्ञेयन्नृपात्मजे ॥७६॥

अङ्गराग के भेद से, शृङ्गार के भेद से अलग २ महल हैं। हे राजकन्यके ! इस प्रकार यह तुमको शत्रुघ्न जी के महल के तीसरे आवरण का भेद बताया ॥७६॥

इत्यन्त रन्त्वावरणे चतुर्थ्ये तच्छृणु प्रभे ॥
गोपुराणि चतुर्दिक्षुसन्त्युच्चक प्रकोष्टकैः ॥७७॥
पताका ध्वजसद्वृत्तैः कलशैः शोभितानि च ॥७८॥

अब इस के बाद चौथे आवरण का भेद सुनो। चारों दिशाओं में फाटकों के ऊपर जो गोपुर हैं वे बड़े ऊँचे हैं। ७७॥ ध्वजा पताका कलशादिकों से शोभित फाटकों पर ॥७८॥

प्रतिहारारुक्म दण्ड वेत्र दण्डधरा अपि ॥
भूषणैर्भूषिता दिव्यैः सौविदल्लाः समास्थिताः ॥७९॥

स्वर्ण दण्ड वेंतादिकों को हाथ में लिए हुए सुन्दर भूषणों से भूषित प्रतिहारी लोग तथा खवास (हजूरिया) लोगों से सुसज्जित इस आवरण के दिशाओं वाले फाटक हैं ॥७९॥

एकैक वर्णमणिभिः सर्वाङ्ग रचितानि वै ॥
चमत्कृतानि राजन्ते सभागाराणिसर्वतः ॥८०॥

इस आवरण में अलग २ रङ्ग के मणियों से सर्वाङ्ग रचित सुन्दर चमत्कार वाले सभा के महल चारों तरफ शोभित हैं ॥८०॥

पञ्चमावरणे त्वेवं वधूनामपि संस्कृताः ॥
शमागृहा दीप्तिमन्तः सर्वासामपि भेदतः ॥८१॥

इसी प्रकार पाँचवे आवरण में भी स्त्रियों के सुन्दर संस्कार वाले सभा महल प्रकाशमान हो रहे हैं ॥८१॥

षष्ठे च सप्तमे सन्ति राजपुत्रस्यवैभवाः ॥
गृहाः सन्ति प्रेयसीनां ज्येष्ठायाः तस्य मध्यगाः ॥८२॥

छटवें और सातवे आवरण में राजपुत्र श्री शत्रुघ्न जी के सब प्रकार के वैभव सम्पत्ति के महल हैं। इन सातों आवरणों के बीच में श्री शत्रुघ्न जी की ज्येष्ठ पत्नी श्री श्रुतिकीर्ति जी के तथा आप की सखि अन्य प्रियाओं के भी महल हैं। ८२॥

मणिचित्रित सर्वाङ्गाः प्रतिमाभिः परिस्कृताः ॥
मुक्तानां तोरणैर्द्वार परमाद्भुत शोभनाः ॥८३॥

प्रत्येक महल मणियों से सर्वाङ्ग चित्र विचित्र प्रतिमाओं से रचित मुक्ताओं के तोरण सुन्दर द्वारों से परम अद्भुत शोभित हैं ॥८३॥

मणिस्तम्भालिका मापा पक्षीणां यत्र तत्र च ॥
पाठितानां पिञ्जरैश्चा वलम्वित विराजिता: ॥८४॥

मणियों की खम्भावलियाँ प्रत्येक दो खम्भों के बीच मद्राव में सुन्दर भाषाओं से बोलने वाले पक्षियों के पींजड़ा शोभित हैं ॥८४॥

खण्ड खण्डान्तरैर्भक्ता वितानास्तर सद्वृता: ॥
अट्टारोहण निश्रेण्या: सर्वगेहेषु दर्शिता: ॥८५॥

इस प्रकार शत्रुघ्न जी का रनिवास खण्ड खण्डान्तरों मे अलग २ बितान चाँदनी पर्दादिकों से शोभित, छत में चढ़ने वाली सीढ़ीयादिकों से सुन्दर दर्शनीय हैं ॥८५॥

मञ्च पर्यंक पीठैश्च यत्र तत्र सुमण्डिता: ॥
उर्वस्याक्रान्त रूपाभि: दाशीभिश्च समावृता: ॥८६॥

प्रत्येक स्थानों पर पर्यङ्क सिंहासन, पीढ़ा, मञ्च सुन्दर रचनाओं से शोभित हैं। उर्वशी को फीका करने वाली सुन्दर रूपवती दासियाँ हर स्थानों में सेवा के लिए भीड़ की भीड़ तैयार हैं ॥८६॥

शोभन्ते कुत्रचिद्दास्यो भूषिता दिव्यभूषणै: ॥
अष्टापदेन क्रीडन्त्यो हसन्त्यश्च परस्परा: ॥८७॥

कहीं २ पर दिव्य भूषणों से भूषित दासियाँ हाथों में चौपड़ खेलने की सामग्रियों को लेकर परस्पर हँसती हुई शोभित हैं ॥८७॥

बहुशो कुत्र चिद्यूथै: क्रीडयन्त्यस्तु कन्दुकै: ॥
भूषणानां सञ्चितैश्च परस्पर प्रचारितै: ॥८८॥

कहीं २ पर बहुत सी दासियाँ झुण्ड के झुण्ड हाथों में गेंदों को लेकर खेलती हैं। उन के परस्पर भूषणों के झनकार से महल गुञ्जित (प्रतिध्वनित) हो रहे हैं ॥८८॥

तासां शब्दा: सखीनां तु ललिता रुच्चकैरपि ॥
महाविस्तर प्रासादा नतिक्रम्य दिशङ्गता: ॥८९॥

सखियों के परस्पर एक दूसरे के पुकारने में मीठे शब्दों की ऊँची आवाज से बड़े २ महलों को अतिक्रमण करके दिशाएँ भर गयीं ॥८९॥

मन्दिरान्तर मास्थाय क्वचिद्गायन्ति वादनै: ॥
समयोचित रागांस्ता: तालश्वर समन्वितान् ॥९०

बहुत सी सखियाँ महलों के भीतर बाजाओं को बजाकर के समयोचित रागों से ताल स्वर संयुक्त गा रही हैं ॥९०॥

इत्थं दिव्य गृहा वल्यां सेव्यमानाः सुभूषितैः ॥
सपत्नीनां गणै नित्यं रोषमत्सर वर्जितैः ॥६१॥

इस प्रकार दिव्य महलों की पंक्तियों के अन्दर सुन्दर भूषणों से भूषित स्त्रियों से अपनी बहुत सी पत्नियों के बीच श्री श्रुतिकीर्ति जी के सहित रोष व मात्सर्य आदिकों से रहित होकर श्री शत्रुघ्न जी सेवित हो रहे हैं ॥६१॥

कौशलेन्द्र कुमारस्य सत्रुघ्नस्य महीपतेः ॥
पत्नी प्रीति युता तस्मिन् सुव्रता गण भूषिता ॥६२॥

इस प्रकार चक्रवर्ती कौशलेन्द्र कुमार श्री शत्रुघ्न जी का पत्नियों के साथ प्रेम व्यवहार युक्त महल का वर्णन किया ॥६२॥

इति श्री शङ्कर कृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्न मञ्जूषायां
श्री अयोध्याख्याने श्री सत्रुघ्नभवन वर्णनो नामाष्टादश सर्गः ॥१८॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वादिना कृता टीकायां
श्री अयोध्या ख्याने श्री शत्रुघ्न महल वर्णनो नाम अष्टादशः सर्गः ॥१८॥

अथातो दक्षिणे पूर्वे दिग्भागेसम विस्तरम् ॥
वनं चित्रघनं नाम वलितं दिव्य पादपै ॥१॥

अब आगे दक्षिण पूर्व के कोण (अग्नि कोण) पर चित्रघन नामक वन का वर्णन करते हैं जो दिव्य लता वृक्षों से शोभित हैं ॥१॥

फलभार समाक्रान्त शाखाभिरानतैर्भु वि ॥
नानापुष्पलताभिस्तु नानावर्णैं र्विराजितम् ॥२॥

जिस वन के वृक्ष फलों के बोझाओं से अत्यन्त व्यथित हैं । डालें पृथ्वी पर झुकी हुई हैं विविध प्रकार की लता कुञ्जें फूलों से लदी हुई हैं जोकि रङ्ग २ के प्रकाश से शोभित हैं ॥२॥

सुनादितं पक्षिसंघै गुञ्जितं भ्रमरा कुलैः ॥
क्रीडमानं मृगयूथै लास्यमानं मयूरकैः ॥३॥

जिस वन में पक्षियों के झुण्ड कल्लोल मचाए हुए हैं-भ्रमरों की पंक्तियाँ (झुण्ड) गूँज रहीं हैं; मृगों के झुण्ड खेल रहे हैं; मोरों के झुंड विविध प्रकार की चेष्टाओं से नृत्य कर रहे हैं ॥३॥

कोकिलैर्गानकारश्च सितपुष्पै हसन्निव ॥
भूषितं श्चापरैः पुष्पै र्नील पीता रुणैः शुभैः ॥४॥

कोकिलाओं के झुन्ड गान कर रहे हैं । सफेद पुष्पों झुन्ड मानो वन रूपी नायिका हँस रही है । नील पीत लाल सफेद रङ्ग के फूल मानो वन रूपी नायका का श्रृङ्गार किए हुए हैं ॥४॥

चतुष्कूल रत्नवद्धैर्भ्रमरा कुल वारिजैः ॥
सुधास्वादु वारि पूर्णैः स्तडागैः स्मृद्धिमन्निव ॥५॥

सरोवरों के चारों घाट रत्न जटित हैं। कमलों के झुण्डों में भ्रमरों के झुण्ड गूँज रहे हैं। अमृत के स्वाद रूप जल से तालाब मानो धन से धनिक पुरुष के समान भरा हुआ है ॥५॥

गृह वस्तु निकुञ्जैश्च लताभिस्तु कलत्र वत् ॥
कुटुम्बव वज्जन्तु संघै वनं रम्यं विराजते ॥६॥

लता कुञ्जें मानो सुन्दर महल बने हों और अन्य लताऐं मानो उसके परिवार हों पशु मृग शँवरादिक वन के जन्तु मानो पुरजन परिजन हों। इस प्रकार चित्रघन वन रूपी महाराज अपनी प्रजा जनता से सुशोभित हैं ॥६॥

तद्वने राजतेनित्यंभरतो राघवानुजः ॥
वृत्ते तु सप्तावरणैः प्रासादैः परमाद्भुते ॥७॥

इस प्रकार के वन के बीच सात आवरण वाले परम अद्भुत महल में श्री भरत जी रहते हैं ॥७॥

त्रिकद्वार चतुष्कैश्च सर्वतो वीर रक्षितैः ॥
नानागारविधानैश्च वैभवानां यथोचितैः ॥८॥

प्रत्येक आवरण के चारों दिशा के फाटक तीन मुख वाले हैं जिनमें वीर लोग सुन्दर श्रृङ्गार किए हुए तथा आयुधों से सजे हुए रक्षा करते हैं। यथोचित वैभव सम्पत्ति से भरे विविध प्रकार के महल हैं ॥८॥

प्रथमावरणे पूर्वे भागे सन्तिगृहोच्चकाः ॥
विराजन्ते तत्र तस्य नागाः सर्वे नगोच्चकाः ॥९॥

अब सबसे बाहर वाले एक आवरण के पूर्व भाग से वर्णन करते हैं जहां बड़े २ ऊँचे २ महल हैं उनमें पर्वतों के समान ऊँचे हाथी निवास करते हैं ॥९॥

कज्जलाद्रि निभा केचि त्केचि द्धिमाद्रि सन्निभाः ॥
चतुर्दिश्या विभागेन कण्ठपाद विभूषिताः ॥१०॥

उन हाथियों में कोई कज्जल के पर्वत के समान और कोई हिमालय के समान हैं। चारों दिशाओं के विभाग भेद से अलग २ जाति वाले हाथी कंठ पाद पीठादि अंगों में मणिमय भूषणों से भूषित हैं ॥१०॥

तथात्र पश्चिमे खण्डे मण्डिताः बहुवर्णकाः ॥
तुरङ्गाहि मनोवेगा स्तुर्य्यघोषा श्चमत्कृताः ॥११॥

उसी आवरण के पश्चिम खंड में बहुत रङ्ग के सुन्दर भूषित, मन के वेग से चलने वाले घोड़े रहते हैं जो तूरी आदि बाजाओं को सुनकर चौंक पड़ते हैं ॥११॥

नृत्यङ्करायत पृष्टा वद्धाः काञ्चन शृङ्खलैः ॥
रथ्यानां सङ्घतैर्भिन्नाः सम वर्णैश्च संघताः ॥१२॥

चौड़े पीठ वाले कमर में शृङ्खला पहने हुए अपनी किङ्किनिओं के ताल पूर्वक नृत्य करने लगते हैं। गलियों में चलने वालों को बचाकर झुण्ड के झुण्ड समान चाल से समान रङ्ग में झुण्ड के झुण्ड चलते हैं ॥१२॥

उत्तरे महिषी गावो यदिच्छित पयः श्रवाः ॥
विभूषिताः पादकण्ठै श्चचामीकर विभूषणैः ॥१३॥

उसी आवरण के उत्तर खण्ड में इच्छित दूध देने वाले पाद कण्ठ पीठादि में सुन्दर भूषणों से सजे भैंस गौ रहती हैं ॥१३॥

वत्सकैर्भूषितैर्युक्ता सेविता वहुमिर्जनैः ॥
समवर्णैः कृत यूथाः वद्धाः काञ्चन शृङ्खलैः ॥१४॥

जिन के सुन्दर भूषित बछड़े हैं; विविध प्रकार के भूषणों से सजे नोकर सेवा करते हैं। एक २ जाति को भैंस एक २ जाति को गाय अलग २ झुन्ड से स्वर्ण-जंजीरों से बँधी हैं ॥१४॥

तत्रैवोत्तर कक्ष्यायांहिमाद्रेः पाद सन्निभाः ॥
सुलक्षणा श्चातिवला लिप्तकाञ्चन शृङ्गकाः ॥१५॥

उसके और उत्तर खन्ड में हिमालय पर्वत के समान ऊँचे शरीर वाले सुन्दर सुलक्षण अति बलवान स्वर्ण शृङ्खलाओं से बँधे बैल रहते हैं ॥१५॥

केचि त्केचि त्खचि च्छृङ्गाः रूप्यशृङ्गाश्च केचन ॥
वृषभांस्तस्य राजयन्ते सेव्यमानाः प्रवीणकैः ॥१६॥

उन में किसी के सींग मणि जड़ित हैं किसी के स्वर्ण रङ्ग के हैं किसी के चांदी के रङ्ग से जटित हैं। बड़े चतुर सेवक लोग उनकी सेवा करते हैं ॥१६॥

अनश्वोष्ट्रामहिषाश्च ह्यत्यन्त भार वाहकाः ॥
वन्याघोरा पादः पश्चान्ये मृगाश्च गवयादयः ॥१७॥

खचर, भैंसा आदि जो बड़े २ बोझाओं को ढोने वाले तथा वन घोड़ा, पिछले पाँव वाले मृगा और भी बहुत से भार वाही पशु ॥१७॥

क्रीडार्थाः पक्षिण स्सर्वे भिन्नभिन्नाः समाश्रयः ॥
तेषाञ्च रक्षकानां हि तदावरणकेगृहा ॥१८॥

खेलने के मृग और पक्षी जो भिन्न जाति वाले भिन्न चाल स चलते हैं। ये सब के रक्षा करने वाले नौकर—इन सबके महल उसी बाहरी प्रथम आवरण के उत्तर खण्ड में हैं॥१८॥

अथास्य दक्षिणेभागे प्राकारस्याद्यकक्षतु ॥
खचिद्रत्न रथा वाह्या गजैः केचिद्धयैस्तथा ॥१९॥

अब इसी प्रथम आवरण के दक्षिण भाग में रत्नों से खचित रथ तथा रथ वाले हाथी, रथ वाले घोड़ ॥१९॥

वहुशश्च विमानानि नरवाह्यानि शिल्पिभिः ॥
रचितानि मणीभिश्च निपुणैर्बहुचित्रकैः ॥२०॥

तथा और भी बहुत से विमान, पालकियां जिनमें शिल्पियों ने चतुरता पूर्वक मणियों की चित्रकारियां कर रक्खी हैं ॥२०॥

उपवनान्यपि चित्राणि नानारत्नाश्चितानि च ॥
गजवाह्यविमानानि तथाश्वैर्बाह्यकानिच ॥२१॥

उन सवारियों के रखने के महलों में भी वन. उपवन, चित्र विचित्र भूमि की रत्नमय रचनायें हैं जहां हाथी घोड़ा विमानादिक सवारियां हैं ॥२१॥

एषाञ्च सज्जनाभूषा भूषणानि सुरत्नकैः ॥
खचितानि विराजद्भिः स्वर्ण सूत्रांशुकानिच ॥२२॥

इन सबकी रक्षा करने वाले सज्जन सुन्दर रत्नमयी रत्नों से भूषित हैं स्वर्ण सूत्रों से बने हुए वस्त्रों को पहने हैं ॥२२॥

एवमेषां संग्रहाणां रत्नतोरण सत्कृताः ॥
रत्न स्तम्भालिकाभास्वद्गृहाः सन्ति सुपङ्क्तिः॥२३॥

इन सब सामग्री संग्रहों के रहने के लिए बने हुए जो महलों की पंक्तियां हैं वे रत्नमयी तोरण और रत्नमयी खम्भा वलियों से प्रकाशमान हो रहे हैं ॥२३॥

ततो द्वितीय प्राकारे चतुर्दिक्षु बिभागतः ॥
वनानि प्रमदानांस्यु र्मण्डितानि बहुद्रुमैः ॥२४॥

अब दूसरे आवरण की चारों दिशाओं वाले विभागों का वर्णन करते हैं जिस आवरण में मणिमण्डित वेदी बहुत प्रकार के वृक्षों से शोभित प्रमदाओं के विलास वने हैं ॥२४॥

तत्र वृक्ष्या विराजन्ते रुक्म मूलक वेदिनः ॥
सर्वर्तु फलिन स्तेषां प्रकाण्डाः स्वर्ण वर्णकाः ॥२५॥

उन वनों में स्वर्ण की वेदिओं के ऊपर स्वर्ण मूलक वृक्ष सब ऋतुओं में फल देने वाले स्वर्ण रङ्ग की ढालों वाले हैं ॥२५॥

केचिन्नीलप्रकाण्डाश्च वृक्षा हरित्प्रकाण्डकाः ॥
बहुवर्णै स्तथापर्णैः फलैश्चापि लसन्तिते ॥२६॥

कोई वृक्ष नील डाल के, कोई हरित डाल के आदि प्रकार से बहुत डाली वाले तथा बहुत वरण के पत्ता, फूल, फल वाले हैं ॥२६॥

तेषां वितर्दयश्चापि बहुवर्णै श्चमत्कृतैः ॥
खचिता मणिभिस्तत्र प्रकाशन्ते दिशोदश ॥२७॥

उन वृक्षों की वेदियां भी बहुत रङ्ग की चमत्कार वालों मणि खचित दशों दिशाओंको प्रकाशित करती हैं ॥२७॥

गुल्मानामालवालाश्च बहुभिर्मणिभिः कृताः ॥
क्रमेणपंक्तिभिस्सर्वे शोभन्ते च मनोहराः ॥२८॥

वृक्ष और उनके थाला भी बहुत रङ्ग के मणि जड़ित पंक्ति के पंक्ति रङ्ग रङ्ग के मन हरने वाले हैं ॥२८॥

स्वर्ण दण्डैश्च रचिताः लतानां बहु मण्डपाः ॥
अतीव रमणीयास्ते रत्नजाल गृहा यथा ॥२९॥

स्वर्ण दण्ड वाले लताओं के मण्डप बहुत ही रमणीय प्रिय लगते हैं मानों रत्नों की जालों से बने घर हों ॥२९॥

पक्षिणो बहुजातीयाः स्वनन्ति मधुरस्वनम् ॥
मृगा क्रीडन्ति बहुशो भूषिताः स्वर्णभूषणैः ॥३०॥

बहुत जाति के छोटे २ पक्षी मधुर स्वर से बोलते रहते हैं। छोटे २ मृग भी स्वर्ण भूषणों से भूषित उन मण्डपों में खेलते रहते हैं ॥३०॥

रन्तुन्तासां समास्थातुं प्रमदानां वितर्दयः ॥
विशाला विविधाकारा लसन्ति मणिसत्कृता ॥३१॥

उन मण्डपों के अन्दर प्रमदाओं के रमण करने की व बैठने की वेदियां विविध रङ्ग की बड़ी २ मणियों से खचित हैं ॥३१॥

काचिल्लतान्तरा रत्न–खचिता रुक्मवेदिका ॥
कुत्रचिद्वारि॰ मध्यस्था कुत्रचिज्जलजन्त्रकाः ॥३२॥

किसी लता कुञ्ज के अन्दर रुक्म (पीले रंग की) वेदिका है और किसी कुञ्ज के अन्दर जल के बीच वेदिका है किसी कुञ्ज के अन्दर फुआरों के अन्दर वेदिका है ॥३२॥

क्वचिन्मारकताः भूमिः काञ्चनी तत्र वेदिकाः ॥
वितर्दिका यत्र नीला काञ्चनी राजतेमही ॥३३॥

किसी कुञ्ज में मरकत मणिमय भूमि पर स्वर्ण रंग की वेदिका है। जहां नीलमणिकी वेदिका है वहां स्वर्णमयी भूमि है ॥३३॥

इत्थमश्चितवर्णानाम्मणिमिश्चित्रिता मही ॥
मयूराश्च मयूर्यश्च नृत्यन्ति प्रतिविम्बिताः ॥३४॥

इस प्रकार रंग रंग की चित्र विचित्र भूमि में मयूर मयूरी नृत्य करते हैं उनके प्रतिबिम्ब जमीन के अन्दर खिलते है ॥३४॥

यत्र तत्र च शोभन्ते प्रतिमाः काञ्चनीवराः ॥
भूषणाम्बरसंयुक्ताः कलसूत्रेण चञ्चलाः ॥३५॥

जहां तहां स्वर्णमयी प्रतिमायें सुन्दर वस्त्र भूषणों को धारण की हुई यन्त्र के धागों से चलती हैं ॥३५॥

वहुशः पक्षिणोपिस्युः कृत्तिमा कृत्तिमा मिथः ॥
क्रीडन्तो नोपलक्षन्ते कोवाऽकृत्तिम कृत्तिमः ॥३६॥

बहुत से पक्षियां वास्तविक सही और बहुत से पक्षियां कृत्रिम (बनावटी) आपस में खेलते हैं। देखने वालों को यह पहिचान में नहीं आ सकता कि कौन सही है कौन कृत्रिम है ॥३६॥

वापिका वहुश स्तत्र नानारत्नपरिस्कृताः ॥
सुधास्वादुजलैः पूर्णा जलजै रपि शोभिताः ।३७॥

नाना रत्नों से बनी हुई बहुत सी बावड़ियां भी अमृतमयी जल से भरी हुईं उन कुञ्जों के अन्दर शोभित हैं ॥३७॥

गुञ्जन्तिमधुपानेन मत्ता श्रेण्योस्तु रञ्जिताः ॥
सरोजरजसापीता रक्तामधुलिहाम्बराः ॥३८॥

जिनमें कमलों पर मधुपान से मतवाले भँवर गूँज रहे हैं। कमल के पराग से लथपथ भ्रमर लालादि रंग के हो रहे हैं ॥३८॥

तत्रान्तरगृहाः सन्ति चित्र तोरण सँस्कृता ॥
सुगन्धपानभोगैश्च पीठ पर्य्यङ्ककैर्युताः ॥३६॥

उस वन में कहीं पर गुप्त महल हैं जो तोरणादिक चित्र विचित्र रचनाओं से तथा सिंहासन पर्यंक. सुगन्ध पानादि भोग सम्पत्ति से सुशोभित हैं ॥३६॥

मणिभिर्वद्ध वीनाहाश्चित्रकैः रामुखाम्भसः ॥
विशाला विसिनी युक्ता राजन्ते तत्र कूपकाः ॥४०॥

उन गुप्त महलों में मणियों से बद्ध किनारे चित्र विचित्र मुख वाले बड़े २ कुआं जिनमें कमलिनी खिली हुईं शोभित हैं ॥२०॥

तेषां रचनया रत्नै निपानानि सुवर्णकैः ॥
रचितानि बिराजन्ते पानाय मृगपक्षिणाम् ॥४१॥

उन कुओं के पास में स्वर्ण के रत्न रचित गड्ढे बने हैं जिनमें मृग पक्षियों के पीने के लिये जल भरा है ॥४१॥

वर्णैकजातिभिः पुष्पशाखिनां फल शाखिनाम् ॥
भिन्नाः कक्ष्याः बिराजन्ते सर्वेपि मध्य शद्मकाः ॥४२॥

एक ही रंग के जाई आदिक पुष्पों की लतायें तथा फलों के बृक्ष अलग २ आवरण करके शोभित हैं और इन सबके भीतर में भी महल बने हुये हैं ॥४२॥

तत्र सद्म सुकान्तानां भरतस्य महात्मनः ॥
मालाकार्य्यो रक्षणाय निवसन्ति विभूषिताः ॥४३॥

उन स्थानों में महात्मा श्रीभरत जी के सुन्दर पत्नियों के महल हैं जिनमें रक्षा करने वाली सुन्दर भूषणों से भूषिता फूलों की माला बनाने वाली दासियां निवास करती हैं ॥४३॥

प्रतिहार्य्यः प्रति द्वारं प्रतिष्ठन्ति बहिस्तथा ॥
कुत्रचित्पुष्प कक्ष्यासु स्थित्यै तासांतु मण्डपाः ॥४४॥

प्रत्येक द्वारों में बाहर की तरफ से प्रतिहारी का काम करने वाली स्त्रिया खड़ी रहती हैं। कहीं कही पर फूलों के लता कुञ्जों के आवरणों में उन स्त्रियों के बैठने के लिए मण्डप बने हैं ॥४४॥

क्रीडन्त्यस्तत्र शोभन्ते दास्यस्तासां विभूषिताः ॥
कन्दुकैः पासकैश्चापि संस्कृताः पुष्पभूषणैः ।४५॥

खेलती हुई उनकी दासियां भी सुन्दर वस्त्रभूषणों से भूषित हुई शोभित हैं। कोई हाथों खेलने के गेंद कोई चौपड़ के पासा लिए हुए पुष्प भूषणों से शोभित हैं ॥४५॥

गृहाभूम्यन्तरालाश्च निदाघर्तु सुखप्रदाः ॥
भोगैर्भोगोपकरणै स्तत्र शय्या सुगन्धिभिः ॥४६॥

पृथ्वी के अन्दर वाले महलों में गर्मी की ऋतुओं में बहुत सुख होता है जहाँ सब प्रकार के शय्या सुगन्धि आदिक भोग सामग्रियां तैयार रहती हैं ॥४६॥

जिह्म मार्गानि गेहानि भ्रममार्गगृहा स्तथा ॥
लसन्ति बहुसस्तत्र गुप्तमार्गगृहा अपि ॥४७॥

उन महलों में जाने के लिए कहीं तो कुटिल (टेढ़े) मार्ग हैं और कहीं भ्रमकारक मार्ग हैं और कहीं बहुत से गुप्त घरों में गुप्त ही मार्ग हैं ॥४७॥

मणिचित्रित घट्टानि नीरागार युतानि च ॥
सरांसि तत्र राजन्ते राजहंशाश्रितान्यपि ॥४८॥

उन महलों के अन्दर जलों के भी सरोवर मणिमय चित्रित घाट वाले किनारों पर राजहंसों की पंक्तियां घूम रही हैं ॥४८॥

अम्बुजैराकुलाम्भोभिराकण्ठ पूरितानिच ॥
मध्यागारैः शोभनानि मत्स्यक्रीडान्वितानि च ।४६॥

उन सरोवरों में रङ्ग २ के खिले हुए कमल भरे हुए हैं। तालाब के मध्य महल शोभित हैं। कण्ठ पर्यन्त जल हेल करके जाया जा सकता है। अगल बगल में मछलियां खेल रही हैं ॥४६॥

कृत्रमा कलभास्तत्र क्रुडन्ति वारि मध्यगाः ॥
अग्राहित् मत्स्यका स्तु क्रीडन्तिजल कुकुटाः ।५०॥

कृत्रिम हाथी के बच्चे उस तालाब में खेल रहे हैं तथा जल कुक्कुट, मछलियां परस्पर खेलती हुई शोभित हैं ॥५०॥

बहुशोवर्णकै रम्भोगृहाणां मणिसत्कृताम् ॥
उच्च कुम्भ पताकानाम्भाषते प्रतिबिम्बितः ॥५१॥

बहुत जगह पर जल के अन्दर रङ्ग २ की मणियों के बने हुए महल हैं जिनमें ऊँचे कलश पताकादि जल में ऊपर से दीख रहे हैं ॥५१॥

मध्यागारन्तु क्रीडार्थेवधूनां तत्र चित्रकाः ॥
स्युः पाटीर कृता नावोगन्तु मागन्तु शोभनाः ॥५२॥

सरोवरों के बीच में जो चित्रित महल हैं उनमें स्त्रियों के खेलने के लिए सब इन्तजाम है। उन महलों में चन्दन की नावों से आना जाना होता है ॥५२॥

वधूना म्भरतस्यैवं क्रीडार्थो पवनानि तु ॥
सर्वासां हि विभागेन सन्ति प्राकारकेऽत्रच ॥५३॥

श्रीभरत जी की सब स्त्रियों के खेलने के लिए सुन्दर विभाग पूर्वक महल, उपवन वन सब इस आवरण में हैं ॥५३॥

अथ तृतीय प्राकारे भिन्नादिक्षु चतुर्ष्वपि ॥
गृहाः कक्ष्यान्तरा सन्तिस्यु कक्ष्या वस्तु संज्ञका। ५४॥

अब तीसरे आवरण में भी चारों दिशाओं में अलग २ खण्डों में प्रत्येक वस्तु के नाम से उनकी अलग २ गलियां हैं ॥५४॥

रसान्न वेशवाराणांगृहा दिग्भागपूर्वके ॥
भिन्नकक्ष्यान्तरा सन्तिपाक भोजनकास्तथा ॥५५॥
भिन्न कक्ष्यान्तराश्चात्र धातुसर्व गृहाअपि ॥
वस्त्रभूषण सौगन्ध्य गृहाः सन्ति प्रभेदतः ।.५६॥

दिशाओं के विभाग पूर्वक रसों के- अन्नों के मसालाओं के महलों के भिन्न खण्ड हैं तथा भोजन के, रसोई घर के भी अलग २ महल हैं। इसी प्रकार सब प्रकार की धातुओं के घर भी इसी आवरण में अलग २ खण्ड से हैं। वैसे ही वस्त्र भूषणों के तथा सुगन्धि आदिकों के अलग २ महल हैं ॥५६-५७॥

चतुर्थावरणे तस्य नाना रत्नैः परिस्कृताः ॥
बिशालाश्चोच्छ्रिता कुम्भैः पताकाभिश्चशोभनाः ॥५७॥

अब चौथे आवरण में रङ्ग २ के रत्नों से बनाये हुए विशाल ऊँचे ध्वजा पताका कलशादिकों से शोभित महल हैं ॥५८॥

विस्तीर्णास्तर संयुक्ता स्तम्भावल्यऽभितोवृता ॥
मुक्तागुम्फ वितानाढया द्वारतोरण भास्वकाः ॥५८॥

जिनमें विशाल आँगन, चारों तरफ खम्भा वलियां, मुक्ताओं से गुम्फित वितान प्रकाशमान फाटकों पर तोरणों का प्रकाश छाया है ॥५८॥

वातायन गवाक्ष्यैश्च रत्नजालै विराजिताः ॥
प्रतिहारस्यभावेन काञ्चनप्रतिमाग्रकाः ॥५६॥

जिन महलों के छज्जे, झरोखे रत्नों के जालों से शोभित हैं फाटकों पर स्वर्णकी प्रतिमा प्रतिहारी के भाव से खड़ी हैं ॥५६॥

अवाद्यावादकै वांद्यध्वानकर्णाप्तकान्नृणाम् ॥
चत्वारोपि चतुर्दिक्षु लसन्चि च सभागृहाः ॥६०॥

बिना बाजाओं के भी बजने वाले वे महल मनुष्यों के कानों को तृप्त करते हैं। उन महलों में चारों दिशाओं में सभा महल शोभित है ॥६०॥

पंचमावरणेप्येवंविधादिक्षु चतुर्ष्वपि ॥
तत्कान्तानांच सर्वांषां पृथग् सन्ति शभागृहाः ॥६१॥

इसी प्रकार पांचवें आवरण में भी चारों दिशाओं में श्रीभरत जी की कान्ताओं के अलग २ महल तथा सभा घर है ॥६१।

अथातः सप्तमेषष्ठेगृहाः सन्ति रहस्यकाः ॥
विभागतः प्रियाणान्तु ज्येष्ठाया मध्यवर्ति च ॥६२॥

इसी प्रकार छटवे और सातवे आवरण में भी रहस्य विलास के महल है। मध्य भाग में ज्येष्ठ पत्नी श्री माण्डवी जी के तथा उनकी सखियों के सुन्दर विभाग पूर्वक महल है ॥६२॥

चित्रिताः सर्वलोकानां दर्शयन्तो यथास्थितिम् ॥
निपुणैश्चित्रकारैस्तु टङ्क कारैश्च मूर्तिभिः ॥६३॥

उन महलों में चतुर चित्रकारों ने तथा मूर्तिकारों ने सम्पूर्ण लोकों के चित्रों को सुन्दर यथा स्थिति से चित्रित करके दिखाया है ॥६३॥

स्वर्णसूत्रांशुका कारैर्वासांशि निर्मितानि च ॥
नाना सुकृत चित्राणि मनोनेत्र हराणि च ॥६४॥

स्वर्ण सूत्रों के वस्त्रों को बनाने वालों ने वस्त्रों में विविध प्रकार के चित्रों का निर्माण किया है जो मन और नेत्रों को हरण करने वाले हैं ॥६४॥

तद्वाससामास्तरणै विमानै रपिधानकैः ॥
तेप्रियाणां गृहास्तस्य दीप्यन्तेमणि निर्मिताः ॥६५॥
प्रकाण सज्जितैर्गीतैरजस्त्रन्ते गृहाः शुभाः ॥
नृत्यन्त इव राजन्ते मारुता कम्पितध्वजाः ॥६६॥

इस प्रकार के वस्त्रों विछावन जिन महलों में बिछे हैं चाँदनी तनी हैं, परदे लगे हैं। इस प्रकार के देव-विमानों के सदृश महलों में विविध प्रकार की मणियों का प्रकाश छाया है ये सब महल श्रीभरत जी की प्रियाओं के हैं जिनमें सहज स्वभाव से संगीत का नाद एक रस हर समय नये २ रूप में निकलता रहता है हवा से हिलते हुए ध्वजा पताकाओं के द्वारा मानो महल नृत्य कर रहे हों ऐसा प्रतीत होता है ॥६५-६६॥

मध्यकुम्भैर्मौलिधरा अपरै रङ्ग भूपिताः ॥
रक्षके र्बहुभिस्तेचालोचमानाः कुतुहलैः ॥६७॥

महल के मध्य जो कलश है मानो महल महाराज मुकुट पहने हों। अपर कलशादिक और मणि रचना मानो महल महाराज भूषण पहने हों। द्वारों पर रक्षा करने वाले द्वारपालो का आना जाना मानो महल महाराज के आगे कौतूहल हो रहा है ॥६७॥

इति श्री शङ्करकृते श्रीअमररामायणे श्रीसीतारामरत्नमञ्जूषायां श्रीचक्रवर्ति रत्न चूड़ाम्मणि कुमारस्य श्रीभरतस्य मन्दिर वर्णनोनामैकोनविंसस्सर्गः ॥१६॥

इति श्री मधुकर रूप रसास्वदिना कृता टीकायां श्रीभरतस्य मन्दिर वर्णनो नामैकोनविंशतिः सर्गः ॥१६॥

अथातः कौशलेन्द्रस्य भवनात्पश्चिमोत्तरे।
दिग्भागेपि वनं रम्यं चित्रशाखन्तु नामतः ॥ १ ॥

अब महाराज श्री कोसलेन्द्र दशरथ जी के महल के पश्चिम-उत्तर (वायु) कोण पर चित्र शाख नामक बन है ॥१॥

निविणं पादपैपुष्प फल पत्र समाञ्चितैः।
सर्वर्तु फलितैः छत्राकारैः पंक्ति समश्चितैः॥ २ ॥

पुष्प, फल, पत्रों से लदे छत्राकार वृक्ष सब ऋतुओं में फल देने वाले सघन पंक्ति की पंक्ति शोभित हैं ॥२॥

गाङ्गेया महि सर्वत्र वने तत्र प्रकाशते।
क्वचित्क्वचित्तु खचिता नाना रत्नैश्च मौक्तिकैः॥ ३॥

उस बन में स्वर्णमयी भूमि चारों तरफ प्रकास कर रही है। कही कहीं पर मौक्तिक आदि प्रकार के रत्नों से खचित भूमि में चित्र बने हैं ॥३॥

स्वर्णं शृंङ्गा नील पीनाः हरिद्वर्णाश्च रक्तकाः।
केचित्केचिच्चित्र वर्णाः कण्ठपाद विभूषिताः॥ ४ ॥

उस वन में स्वर्ण से मढ़े सींग वाले कण्ठ, पादों से विभूषित नील, पीत, हरित लाल, कोई २ चित्रित वर्ण वाले मृगों के झुण्ड घूम रहे हैं ॥४॥

झणत्कारं वनान्तश्च कुर्वन्तो वहुशो मृगाः।
खेलन्तो विचरन्तीह वने दृष्टि मुद प्रदाः ॥ ५ ॥

वहुत से मृगाओं के झुण्ड वन में झंकार मचाते हुये दौड़ रहे हैं, कहीं पर खेलने के लिए धीरे से इधर उधर वन में विचर रहे हैं। देखने वालों के नेत्रों में आनन्द दे रहे हैं ॥५॥

मणिभि र्वद्ध घट्टानि सरोजा कुलितानि च।
सरांसि तत्र शोभन्ते तीरागार वृतानि च ॥ ६ ॥

कहीं पर सरोवरों पर किनारे पर महल भीतर में चारों तरफ मणिमय घाट, तालाव में विविध प्रकार के कमल शोभित हो रहे हैं ॥६॥

अन्तरागार वर्त्यस्तु रत्न नीबाह संस्कृताः।
शिरः कुम्भेन भ्राजन्त्यो वापिकाः सन्ति तद्वने॥७॥

उस बन में वावड़ियों के अन्दर महल बने हुये हैं और वापिकाओं के ऊपर किनारे मणिमय घाट बँधे हुये हैं। शिरों में कलश शोभित हैं ॥७॥

सनिपानोदपानानि चित्र बोनाहकानि च ।

आमुखाम्भासि राजन्ते तत्र कृत्तिम के वने ॥ ८ ॥

पास में जल भरने के हौदा के सहित कुआं भी चित्रित किनारे वाले सुन्दर प्रकाशमान शोभित हैं। जहाँ तहाँ वन में कृत्रिम रचनाएँ भी वहुत प्रकार की हैं॥८॥

अहिंसकाः पालिताश्चभूषिताः पाद शृङ्गकैः ।

खङ्गिनोपि वराहाश्च वहुशो व्याघ्र सैरिभाः ॥ ६ ॥

तथा उस वन में सुन्दर भूषित चरण, सींग, कण्ठ वाले गैंडा, सूअर, बाघ, भैंसा भी अहिंसा पूर्वक विचरते हैं ॥६॥

क्रीडन्ति गवयश्चान्ये वन्या नाना सुवर्णकाः ।

शाखामृगापि वहुशोऽरूणास्याः नीलकाननाः॥१०।

और भी नाना प्रकार के जंगली जानवर उस वन में खेलते हैं जैसे— लाल मुख वाले वन्दर, नील मुख वाले लंगूर ॥१०॥

वृत्त्याद्वृत्तम्लपवन्तश्च खादन्तोरसवत्फलं ।

परस्परं योधयन्तो वद्धयूथा लसन्ति ते ।।११॥

एक वृक्ष से दूसरे वृक्ष पर कूदते हुये रसीले फलों को खा रहे हैं। यूथ के यूथ परस्पर युद्ध भी करते हुए शोभित हैं ॥११॥

एवम्भूते लक्ष्मणस्य वने प्रासाद पंक्तयः ।

उच्च ध्वज पताकाभि शशोभन्ते सप्तशालकाः ॥१२।

इस प्रकार के लक्षण वाले वन में ऊँची ध्वजा पताकादिकों से शोभित सप्तावरण महलें शोभायमान हैं ॥१२॥

प्राकारस्तत्र प्रथमः स्फटिके र्निर्मितोच्चकः ।

त्रिकद्वार चतुष्कैश्च शोभते चित्र तोरणैः ॥१३॥

सव से वाहर वाले स्फटिक मणिका बना हुआ प्रथम आवरण बहुत ऊँचा है। चारों दिशाओं में तीन मुख वाले फाटक चित्र विचित्र तोरणों से शोभित हैं ॥१३॥

स्वर्णकुम्भैः परितश्च पताकाभिश्च वेष्टितः ।

कुशले र्व्यचितांभिश्च रुक्माचांभिः सुमण्डितः॥१४॥

स्वर्ण के कलशों से व पताकाओं से सजा हुए फाटकों पर बड़े कला कुशल कारीगरों ने स्वर्ण के रंग से सुन्दर चित्रों को वना कर फाटकों को भूषित किया है ॥१४॥

सर्वलोक दर्शितानि चित्राणितैः परिस्कृतः ।

चित्र जाल गवा क्षैश्च मण्डिताः सपिधानकैः॥१५॥

वे चित्र सम्पूर्ण लोकों के आकार प्रकार को दिखा रहे हैं। उन गोपुरों के छज्जे और झरोखे भी मणिमय चित्रित जालों से भूषित हैं। कोठाओं के अन्दर वितान परदे, विछावन भी रङ्ग २ की जरी से चित्रित हैं ॥१५॥